सामुदायिक GOONJ

RNI No. MPBIL02443/2020-TC

National News Magazine

(वर्ष 02, अंक 03, मार्च 2022 पृष्ठ 52, मूल्य 25 रुपए)

फरवरी 2022 का अंक

ग्वालियर, मार्च 2022
(वर्ष 02, अंक 03, , पृष्ठ 52, मूल्य 25 रुपए)

प्रेरणास्रोत
श्रीमती संध्या सिकरवार
चेयरमैन
डॉ. जे. एस. सिकरवार
सम्पादक
कृति सिंह
सह संपादक
मनोज सिंह भदौरिया
उप संपादक
अंतिमा सिंह -कौस्तुभ सिंह
कार्यकारी संपादक
डॉ. आर. एन. एस. तोमर
सहायक संपादक
अछेन्द्र सिंह कुशवाह
सब एडिटर/एडिटिंग
इमरान गौरी
न्यूज़ एंकर
डोली उधावनी, प्रिया शिन्दे
एडिटोरियल प्रभारी
स्तुति सिंह, स्निग्ध तोमर
संकलन
भरत सिंह
कानूनी सलाहकार
अरविन्द दूदावत
छायांकन/सिटी रिर्पोटर
अनिल सिंह सिकरवार

गूंज पत्रिका संपादकीय कार्यालय
ई-69/70, हरिशंकरपुरम लश्कर ग्वालियर मध्य प्रदेश
(संपर्कः 7880075908)

IN THIS ISSUE...

तेज तर्रार एएसपी राजेश दण्डोतिया से गूंज की विशेष बातचीत-47

SPECIAL STORY 26

नारी शक्ति सदैव सम्मानीय हैः ऊर्जामंत्री तोमर 43

DAY SPECIAL 23

GOONJ STAR 48

SOCIAL WORK 45

फसाड लाइटिंग से जगमग हुआ ग्वालियर-44

स्वात्वाधिकारी एवं प्रकाशक कृति सिंह के लिए मुद्रक संदीप कुमार सिंह द्वारा नेहा ग्राफिक्स, 32 ललितपुर कॉलोनी, लश्कर ग्वालियर मध्य प्रदेश से मुद्रित एवं ई-69/70, हरिशंकरपुरम लश्कर ग्वालियर मध्य प्रदेश से प्रकाशित। **संपादक कृति सिंह**। सभी विवादों के लिए न्याय क्षेत्र ग्वालियर होगा। **RNI.Title Code-MPBIL02443/2020-TC** (समाचार चयन के लिए पीआरबी एक्ट के तहत जिम्मेदार) पत्रिका में प्रकाशित सामग्री, रचनाएं, एवं स्तंभ लेखक के स्वयं के हैं इसमें संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। (पत्रिका में सभी पद अवैतनिक एवं अस्थाई हैं।) **संपर्कः 7880075908**

उल्लास का पर्व

देशभर में होली का त्यौहार धूमधाम से मनाया गया जगह-जगह होली की धूम देखने को मिली वहीं मथुरा में मनाई जाने वाली होली पूरे भारत में प्रसिद्ध है, मथुरा में होली का त्योहार खूब धूम-धाम से मनाया गया यहां जमकर गाजे-बाजे के साथ होली के पर्व का स्वागत हुआ, इसके साथ ही यहां लट्ठमार होली खेली गई, मथुरा में 1 हफ्ते पहले से ही होली का पर्व शुरू हो जाता है, वहीं दूसरी तरफ बनारस में भी होली के त्यौहार की धूम देखने को मिली जहां

बाबा विश्वनाथ के साथ भक्तों ने भस्म की होली खेली।

कुछ लोगों ने केवल गुलाल से होली खेलने को प्राथमिकता दी।

होली राग रंग और मौज मस्ती का बांका त्यौहार है। होली हमारे लिये सांस्कृतिक और पारंपरिक उत्सव है। होली रंग बिरंगा पर्व है। रंग और पिचकारी लेकर युवा निकल पड़ते हैं और एक-दूसरे पर अबीर, गुलाल और रंग डालकर होली मनाते हैं। हर तरफ लोग मस्ती में झूमते व एक दूसरे पर अबीर-गुलाल लगाते व रंगों की वर्षा करते दिखाई देते हैं। यह त्योहार सामाजिक समानता, राष्ट्रीय एकता और अखण्डता तथा विभिन्नता में एकता का साक्षात प्रतीक है।

होली मनाते समय जात-पात, छोटा-बड़ा का भी कोई भेद नहीं होता। अमीर-गरीब, बच्चे, युवा बुजुर्ग सभी मिल-जुल कर यह त्यौहार मनाते हैं। होली रंगों के साथ गीत-संगीत और नृत्य का अनूठा त्यौहार है। इसे एकता, प्यार, खुशी, सुख और जीत का त्योहार के रुप मे भी जाना जाता है। यह हर्षोल्लास परस्पर मिलन व एकता का प्रतीक है।

इस पर्व के अवसर पर लोग आपसी वैमनस्य को भुलाकर मित्र बन जाते हैं। यह त्योहार अमीर और गरीब के भेद को कम कर वातावरण में प्रेम की ज्योति प्रज्वलित करता है। नि:संदेह होली का पर्व हमारी सांस्कृतिक धरोहर है। उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, बिहार, पंजाब, दिल्ली आदि हिन्दी भाषी प्रदेशों में होली का पर्व भारी उल्लास और रंगों के साथ मनाया गया।

देश के अन्य राज्य भी अलग-अलग तरीकों से होली का आनन्द उठाते हैं। ब्रज, मथुरा और बरसाने की होली विश्व प्रसिद्ध है। देश में होली पर्व को अनेक कहानियों के साथ भी जोड़कर देखा जाता है। उत्तर भारत के राज्यों में जिसमें राजस्थान भी शामिल है, भक्त प्रहलाद की कहानी विख्यात है। होली देश का सबसे पुराना त्योहार है जिसे छोटे-बड़े अमीर-गरीब सभी लोग मिलजुल कर मनाते हैं। यह असत्य पर सत्य और बुराई पर अच्छाई का प्रतीक है। राग-रंग का यह पर्व वसंत का संदेशवाहक भी है। राग रंग और नृत्य इसके प्रमुख अंग हैं। फाल्गुन माह में मनाए जाने के कारण इसे फाल्गुनी भी कहते हैं।

बच्चे-बुजुर्ग सभी सब कुछ संकोच और रूढियाँ भूलकर ढोलक-झाँझ-मंजीरों की धुन के साथ नृत्य-संगीत व रंगों में डूब जाते हैं। उत्साह और उमंग से भरा ये त्योहार एक दूसरे के प्रति प्रेम, स्नेह और निकटता लाता है। इसमें लोग आपस में मिलते हैं, गले लगते हैं और एक दूसरे को रंग और अबीर लगाते हैं। इस दौरान सभी मिलकर ढोलक, हारमोनियम तथा करताल की धुन पर धार्मिक और फागुन गीत गाते हैं। होली राग रंग और मौज मस्ती का बांका त्योहार है। होली हमारे लिये सांस्कृतिक और पारंपरिक उत्सव है। रंग और पिचकारी लेकर युवा निकल पड़ते हैं और एक-दूसरे पर अबीर, गुलाल और रंग डालकर होली मनाते हैं। हर तरफ लोग मस्ती में झूमते व एक दूसरे पर अबीर-गुलाल लगाते व रंगों की वर्षा करते दिखाई देते हैं।

कृति सिंह
संपादक

"होली राग रंग और मौज मस्ती का बांका त्यौहार है। होली हमारे लिये सांस्कृतिक और पारंपरिक उत्सव है। होली रंग बिरंगा पर्व है। रंग और पिचकारी लेकर युवा निकल पड़ते हैं और एक-दूसरे पर अबीर, गुलाल और रंग डालकर होली मनाते हैं। हर तरफ लोग मस्ती में झूमते व एक दूसरे पर अबीर-गुलाल लगाते व रंगों की वर्षा करते दिखाई देते हैं। यह त्योहार सामाजिक समानता, राष्ट्रीय एकता और अखण्डता तथा विभिन्नता में एकता का साक्षात प्रतीक है।"

सड़क दुर्घटनाओं को रोकने में सहायक सिद्ध होगा विज़न ज़ीरो

● **टीम गूंज न्यूज नेटवर्क**

प्रदेश में होने वाली सड़क दुर्घटनाओं को कम करने के लिए परिवहन विभाग ने विजन जीरो मध्य प्रदेश को लागू कर दिया है। इसके तहत तमिलनाडु मॉडल पर काम होगा। इसी माडल पर चलकर तमिलनाडु में दुर्घटनाओं और उनसे होने वाली मौतों में 54 फीसद की कमी आई है। इसमें हाईवे पर एंबुलेंस की मैपिंग होगी और कम से कम समय में घायलों को अस्पताल पहुंचाना प्राथमिकता में रहेगा। स्कूल व कालेज में यातायात के नियम भी पढ़ाए जाएंगे। यातायात नियमों की जानकारी देने के लिए स्कूल व कालेजों को जोड़ा जा रहा है। शिक्षकों के माध्यम से यातायात नियमों की जानकारी भी दी जा रही है। लोगों को जागरूक किया जा रहा है कि दुर्घटना में घायलों को अस्पताल तक पहुंचाने वाले व्यक्ति को पुलिस केस का सामना नहीं करना पड़ेगा।

इस अभियान से सड़क बनाने वाले इंजीनियरों पीडब्ल्यूडी, सीपीडब्ल्यूडी, एनएचएआइ, नगर निगम के इंजीनियरों की इसमें भागीदारी रहेगी। हाईवे पर दुर्घटना संभावित क्षेत्रों की पहचान की जाएगी। संयुक्त रूप से काम कर सड़क में सुधार किया जाएगा। सड़क पर लोगों का वाहन चलाते समय व्यवहार कैसा है। उसकी निगरानी की जाएगी। नियम तोड़ने वालों पर जुर्माना के साथ-साथ लाइसेंस निलंबन व निरस्त जैसी कार्रवाई की जाएंगी। दुर्घटना होने पर व्यक्ति को कम से कम समय में प्राथमिक उपचार उपलब्ध कराना है। दुर्घटनास्थल से कौन सी एंबुलेंस कितनी दूर है। यह जानकारी प्रदर्शित रहेगी। तहसील, ग्राम व जिला स्तर के अस्पतालों की जानकारी भी दी जाएगी।

सड़क दुर्घटनाओं को रोकने के उद्देश्य से शुरू किया गया विज़न ज़ीरों अभियान को आम जन तक पहुंचाने के लिए गूंज 90.8 एफएम एवं गूंज मीडिया ग्रुप निरंतर जा सके। गूंज द्वारा चलाई जा रही इस मुहिम में आप भी हमारे सहभागी बनें। हमारे द्वारा निरंतर कई कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं जिसमें विज़न ज़ीरो के बारे में

प्रदेश में स्क्रैप पॉलिसी लागू होगी: मुकेश जैन

सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय ने 15 वर्ष से अधिक से चलने वाहनों पर 23 सितम्बर 2021 से स्क्रैप पॉलिसी होने जा रही है। इसकी अधिसूचना जारी कर दी गयी है। परिवहन आयुक्त मुकेश जैन ने कहा कि प्रदेश में स्क्रैप पॉलिसी लागू होगी एवं मोटरयान स्क्रेपिंग पॉलिसी का मूल उद्देश्य अनुपयुक्त और प्रदूषणकारी वाहनों क्रमबद्ध तरीके खत्म करना है। पर्यावरण को स्वच्छ तरीके वाहन स्क्रैप के बदले नये वाहनों के आगमन को बढ़ावा देना है। मध्यप्रदेश में लगभग 5 लाख अनुपयोगी वाहन है। इन वाहनों के हटने से प्रदूषण में कमी और सड़कों की हालत में सुधार होगा। वाहन स्क्रैप पॉलिसी लागू होने पर अनौपचारिक वाहन स्क्रेपिंग उद्योग को औपचारिक रूप से दिया जा सकेगा तथा ऑटोमेटिव स्टील और इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योग के लिये कम लागत में कच्चा माल उपलब्ध हो सकेगा। यदि कोई वाहन स्वचालित फिटनेस सेंटर से फैल किया जाता है तो इसे एण्ड-ऑफ-लाइफ घोषित किया जायेगा और ऐसे वाहनों को अनिवार्य रूप से रजिस्टर्ड वाहन स्क्रैप सुविधा केन्द्र के जरिये स्क्रैप कराना होगा। स्क्रैप किये गये वाहनों के विरूद्ध खरीदे गये नये वाहनों के प्रोत्साहन हेतु केन्द्र सरकार द्वारा पंजीयन शुल्क में पूर्णतः छूट प्रदान की जायेगी तथा राज्य सरकार भी ऐसे परिवहन वाहनों में 15 प्रतिशत मोटरयान शुल्क में 15 प्रतिशत गैर परिवहन वाहनों पर 25 प्रतिशत देने पर विचार कर रहा है। 1 अक्टूबर 2022 से 15 साल से अधिक पुराने वाहनों को अनिवार्य रूप से स्क्रैप कराना होगा।

कार्य कर रहा है ताकि लोग यातायात के नियमों के प्रति जागरूक हो सकें। और सड़कों पर होने वाली दुर्घटनाओं को रोकने में मदद मिले। हमारा उद्देश्य है कि यदि दुर्घटना हो जाती है तो मानवता के नाते घायल को जल्द से जल्द अस्पताल पहुँचाएँ जिससे उसकी जान बचाई जागरूकता अभियान चलाकर लोगों को जागरूक किया जा रहा है। जिसमें शहरवासी भी हमारे साथ लोगों को जागरूक करें जिससे सड़कों पर होने वाली दुर्घटनाओं को रोका जा सके। जनहित से जुड़े इस मानव सेवी कार्य में हमारा साथ दें।

होली है

फाल्गुन मास की पूर्णिमा को रंगो का त्यौहार होली सबके लिए खुशियों व उमंगो की झोली भरकर लाता है। इस पर्व पर प्रेम और प्यार की बयार और प्रकृति का श्रृंगार देखते ही बनता है। यूं तो हमारा देश त्यौहारों का देश है। लेकिन यदि होली को त्यौहारों का त्यौहार कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। प्रेम प्रसार का प्रतीक पर्व होली सबके मन में उत्साह, उमंग तथा प्रेम का संचार करता है। सभी नर-नारी, बच्चे-बूढ़े इस पर्व पर एक दूसरे को रंगों में रंग डालते हैं और अबीर व गुलाल उड़ाते हुए झांझ, मृदंग, मंजीरे, ढ़ोलक, डपली बजाकर हंसते, गाते तथा नाचते हैं। कहना न होगा कि इस प्रेम के पावन पर्व पर सभी ऊंच-नीच, छोटा-बड़ा, जाति-पाति, छुआछूत आदि सब भेदभाव भुला दिए जाते हैं और इसी कारण सभी आपसी गिले-शिकवे भी समाप्त हो जाते हैं।

भारत के प्रमुख त्यौहारों में शामिल होली को पूरा भारत देश मनाता है। होली के त्यौहार का सांस्कृतिक आधार देखा जाए तो यह वर्ष में हुए परस्पर मनमुटाव को समाप्त करने का एक माध्यम है। भारत की संस्कृति अत्यंत श्रेष्ठ भी इसीलिए ही कही जाती है कि यहां आपसी सामंजस्य का बोध है। यहां के सभी त्यौहार आपसी सामंजस्य को बढ़ावा देने वाले होते हैं। इसी प्रकार रंगों का पर्व होली का त्यौहार भी सामंजस्य को बढ़ावा देता है। जिस प्रकार से होली के अवसर पर सभी रंग आपस में घुल मिल जाते हैं, उसी प्रकार से व्यक्तियों के मिलने की भी कल्पना की गई है। इस त्यौहार पर दुश्मनों के भी भाव बदल जाते हैं, और सारे देश में दोस्ती का वातावरण निर्मित होता हुआ दिखाई देता है। वर्तमान में होली के बारे में हम कहते हैं कि पहले जैसी होली अब नहीं होती। यह सत्य है कि कि इसमें परिवर्तन आया है, लेकिन क्या हमने सोचा कि ऐसा परिवर्तन आने के पीछे कारण क्या हैं। वास्तव में इसके लिए हम ही दोषी हैं। पांच दिन के इस त्यौहार की मस्ती को हमने समेट कर रख दिया है और मात्र एक या दो घंटे में पूरा त्यौहार मना लिया जाता है। ऐसे में मात्र एक घंटे में होली का वह भाई चारा वाला स्वरूप कैसे दिखाई देगा।

होली के इस पावन पर्व पर हमारे समाज के कई लोग दुश्मनी मिटाना तो दूर, दुश्मनी पालने की कवायद करते हुए दिखाई

देते हैं। पिछले कई वर्षों से देश के कई भागों में होली के अवसर पर लड़ाई झगड़े होते हुए भी दिखाई देने लगे हैं। इससे सवाल यह उठता है कि क्या हम होली को वास्तविक अर्थों में मनाने का मन बना पा रहे हैं। अगर नहीं तो तो हमें यह

कहने का भी अधिकार भी नहीं है कि होली का स्वरूप पहले जैसा नहीं रहा। पौराणिक मान्यताओं के आधार पर होली के पावन पर्व का निष्कर्ष निकाला जाए तो यही परिलक्षित होता हुआ दिखाई देता है कि जिसके मन में विकार होता है, उसे समाप्त करने का होली का त्यौहार सबसे अच्छा अवसर है, अगर हमने अपने अंदर पैदा हुए विकास को समाप्त करने का प्रयास नहीं किया तो भगवान उस विकार को समाप्त करने का काम कर देंगे। हम जानते हैं कि भगवान नरसिंह ने राक्षस हिरण्यकश्यप को इसलिए मार दिया कि उसके अंदर कई प्रकार के विकास समाहित हो गए थे। भगवान के भक्त प्रह्लाद ने कई बार चेताया भी, लेकिन उसने अपने अंदर के अहम को समाप्त नहीं किया।

रंगों का पर्व होली हिन्दुओं का पवित्र त्यौहार है। यह मौज-मस्ती व मनोरंजन का त्योहार है। सभी हिंदू जन इसे बड़े ही उत्साह व सौहार्दपूर्वक मनाते हैं। यह त्योहार लोगों में प्रेम और भाईचारे की भावना उत्पन्न करता है। जिस प्रकार बसंत के मौसम में रंग बिखरते हैं, उसी प्रकार से होली के अवसर पर भी रंग बिखरते हुए दिखाई देते हैं। रंगों का अर्थ है, मन में बसंत की बहार का उल्लास। अगर होली के अवसर पर हमारे मन में उल्लास नहीं है तो फिर होली के मायने ही क्या हैं? इसलिए होली पर मन की प्रफुल्लता बहुल जरूरी है। प्राकृतिक रूप से फाल्गुन की पूर्णिमा ही नहीं अपितु पूरा फाल्गुन मास होली के रंगों से सराबोर हो जाता है। होली का त्योहार ज्यों-ज्यों निकट आता जाता है त्यों-त्यों हम नए उत्साह से ओत-प्रोत होने लगते हैं।

होली का पावन पर्व यह संदेश लाता है कि मनुष्य अपने द्वेष तथा परस्पर वैमनस्य को भुलाकर समानता व प्रेम का दृष्टिकोण अपनाए। मौज-मस्ती व मनोरंजन के इस पर्व में हँसी-खुशी सम्मिलित हों तथा दूसरों को भी सम्मिलित होने हेतु प्रेरित करें। यह पर्व हमारी संस्कृतिक विरासत है। हम सभी का यह कर्तव्य है कि हम मूल भावना के बनाए रखें ताकि भावी पीढ़ियाँ गौरवान्वित हो

मोदी लहर बरकरार

मनोज सिंह भदौरिया

सह संपादक

> पांच राज्यों के चुनावी नतीजे में कई संदेश छिपे हैं। इन नतीजों का पहला संदेश तो यही है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की लोकप्रियता और बीजेपी की चुनावी मशीनरी का कोई मुकाबला नहीं है। दूसरा, 2014 लोकसभा चुनाव से मोदी के नेतृत्व में देश की राजनीति में बदलाव का जो सिलसिला शुरू हुआ, वह अभी तक जारी है। बीजेपी हिंदी पट्टी की पार्टी नहीं रही। वह मणिपुर से लेकर गोवा तक में अपना प्रभुत्व बार-बार स्थापित कर रही है। इस जीत में शीर्ष स्तर पर दमदार नेतृत्व के साथ केंद्र, राज्य स्तर पर कल्याणकारी योजनाओं, विकास के दावे, हिंदुत्व और ध्रुवीकरण बीजेपी के औजार साबित हुए हैं।

देश के पांच राज्यों में बीजेपी ने जिस तरह से शानदार प्रदर्शन किया है उससे यह साबित हो गया है कि मोदी लहर बरकरार है। यूपी, उत्तराखंड, गोवा और मणिपुर के विधानसभा चुनाव में जीत से बीजेपी ने कई नए रिकॉर्ड बनाए हैं, यूपी में साढ़े तीन दशक बाद किसी पार्टी की सरकार रिपीट हुई है। आजादी के बाद ये पहली बार होगा कि अपनी पार्टी को सत्ता में वापसी कराने वाले योगी आदित्यनाथ लगातार दूसरी बार सीएम बने।

उत्तर प्रदेश के विधानसभा चुनाव में नरेंद्र मोदी और योगी आदित्यनाथ की जोड़ी ने डबल इंजन बनकर भारतीय जनता पार्टी के सपनों को हकीकत कर दिखाया है।

भाजपा एक बार फिर यूपी में राज करने के लिए तैयार है। चुनाव में 250 से अधिक सीटें जीतकर यूपी में फिर से कमल खिला है। एक बार फिर साबित हो गया कि मोदी का जादू लगातार चौथी बार यूपी में काम कर रहा है लेकिन, इस बार योगी के बूस्टर शॉट के साथ काम और असरदार रहा।

पांच राज्यों के चुनावी नतीजे में कई संदेश छिपे हैं। इन नतीजों का पहला संदेश तो यही है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की लोकप्रियता और बीजेपी की चुनावी मशीनरी का कोई मुकाबला नहीं है। दूसरा, 2014 लोकसभा चुनाव से मोदी के नेतृत्व में देश की राजनीति में बदलाव का जो सिलसिला शुरू हुआ, वह अभी तक जारी है। बीजेपी हिंदी पट्टी की पार्टी नहीं रही। वह मणिपुर से लेकर गोवा तक में अपना प्रभुत्व बार-बार स्थापित कर रही है। इस जीत में शीर्ष स्तर पर दमदार नेतृत्व के साथ केंद्र, राज्य स्तर पर कल्याणकारी योजनाओं, विकास के दावे, हिंदुत्व और ध्रुवीकरण बीजेपी के औजार साबित हुए हैं। बीजेपी की वैचारिकी के सामने विपक्ष एक मजबूत आइडिया नहीं रख पाया है। यानी बीजेपी जिस तरह से देश की राजनीति बदल रही है, उसका विपक्ष के पास कोई जवाब नहीं है। पार्टी के पास व्यापक सामाजिक समर्थन और जनाधार है। खासतौर पर महिलाओं और पिछड़ी जातियों से उसे व्यापक समर्थन मिल रहा है। यूपी में बहुमत के साथ सत्ता में वापसी से योगी आदित्यनाथ का कद पार्टी में बढ़ेगा। यह बात इसलिए दिलचस्प है क्योंकि चुनाव से कुछ समय पहले उन्हें मुख्यमंत्री पद से हटाए जाने की चर्चा ने काफी जोर पकड़ा था। एक वर्ग उन्हें पहले से राष्ट्रीय राजनीति में मोदी का उत्तराधिकारी मानता आया है। इस जीत के बाद यह बात भी जोर पकड़ेगी।

देखा जाए तो आम चुनाव 2024 के पहले यूपी समेत पांच विधानसभा चुनाव 2022 को सेमीफाइनल करार देने वाले लोगों के लिए भी इसमें बहुत बड़ा सन्देश छिपा हुआ है। वाकई उत्तरप्रदेश और पंजाब जैसे दो बड़े राज्यों और उत्तराखंड, गोवा और मणिपुर जैसे 3 छोटे राज्यों से आये चुनाव परिणामों ने एक बार फिर से यह बात स्थापित करने की कोशिश की है कि भारतीय राजनीति की परंपरागत चुनावी धारा बदल रही है।

उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव में 2017 की तरह इस बार भी मोदी मैजिक खूब चला। मजबूत रणनीति के तहत पीएम नरेंद्र मोदी ने पश्चिमी यूपी से लेकर पूर्वांचल तक 134 सीटों पर जीत दिलाने में अहम भूमिका निभाई। खास बात यह रही कि कड़ी टक्कर वाली सीटों पर पीएम मोदी ने खुद कमान संभाली थी। इन सीटों पर वो हिंदुत्व का संदेश देने में कामयाब भी रहे।

यूपी चुनाव फतह की राह उतनी आसान नहीं थी, जितनी जीतने के बाद लग रही है। प्रधानमंत्री मोदी ने राज्य में लगभग दो दर्जन रैलियां कीं और अपने लोकसभा क्षेत्र वाराणसी में एक विशाल रोड शो भी किया, यहां उन्होंने दो दिनों तक डेरा डालकर रखा, यह उन कारणों में से एक है, जिसके बूते योगी आदित्यनाथ की लगातार दूसरी बार ताजपोशी मुमकिन हुई है।

मोदी-योगी के डबल इंजन की सरकार के तहत उत्तर प्रदेश एक मॉडल राज्य के रूप में उभरा है, जैसे गुजरात कभी नरेंद्र मोदी के अधीन था। योगी, जिन्होंने राज्य में 200 से अधिक रैलियां और रोड शो करके मोदी-अमित शाह के साथ भाजपा की शीर्ष तिकड़ी में अपनी जगह पक्की कर ली है और देश की राजनीति में अपना भविष्य उज्जवल कर दिया है।

सत्ता के सेमीफाइनल में बीजेपी ने लहराया परचम

पंजाब में आम आदमी पार्टी ने किया क्लीन स्वीप

भारत के पांच राज्यों में हुए विधानसभा चुनावों के आये नतीजों के सियासी मायने स्पष्ट हैं। कुछेक अर्थों में ये भारतीय जनता पार्टी यानी बीजेपी और आम आदमी पार्टी यानी आप के लिए बेहद खास हैं। क्योंकि बीजेपी जहाँ चार राज्यों में अपनी सरकार बचाने में सफल रही है। वहीं दिल्ली प्रदेश में सत्तारूढ़ आप ने दिल्ली के बाद पंजाब जैसे बड़े राज्य को भी कांग्रेस से छीनकर अपने पास कर लिया है, वो भी दो तिहाई स्पष्ट बहुमत से। उधर, उत्तरप्रदेश, उत्तराखंड, गोवा और मणिपुर में बीजेपी को स्पष्ट बहुमत प्राप्त हो गया है। वहीं, मणिपुर में बिहार में सत्तारूढ़ जनता दल यू ने भी अच्छा प्रदर्शन किया है।

यूपी में मोदी डोज के साथ योगी के बूस्टर शॉट का मैजिक

यूपी, उत्तराखंड,गोवा, और मणिपुर में भी भगवा परचम, पंजाब में आप की झाड़ू से सब साफ

उत्तर प्रदेश के विधानसभा चुनाव में नरेंद्र मोदी और योगी आदित्यनाथ की जोड़ी ने डबल इंजन बनकर भारतीय जनता पार्टी के सपनों को हकीकत कर दिखाया है। भाजपा एक बार फिर यूपी में राज करने के लिए तैयार है। चुनाव में 250 से अधिक सीटें जीतकर यूपी में फिर से कमल खिला है। एक बार फिर साबित हो गया कि मोदी का जादू लगातार चौथी बार यूपी में काम कर रहा है लेकिन, इस बार योगी के बूस्टर शॉट के साथ काम और असरदार रहा।

यूपी चुनाव फतह की राह उतनी आसान नहीं थी, जितनी जीतने के बाद लग रही है। प्रधानमंत्री मोदी ने राज्य में लगभग दो दर्जन रैलियां कीं और अपने लोकसभा क्षेत्र वाराणसी में एक विशाल रोड शो भी किया, यहां उन्होंने दो दिनों तक डेरा डालकर रखा, यह उन कारणों में से एक है, जिसके बूते योगी आदित्यनाथ की लगातार दूसरी बार ताजपोशी मुमकिन हुई है।

देखा जाए तो आम चुनाव 2024 के पहले यूपी समेत पांच विधानसभा चुनाव 2022 को सेमीफाइनल करार देने वाले लोगों के लिए भी इसमें बहुत बड़ा सन्देश छिपा हुआ है। वाकई उत्तरप्रदेश और पंजाब जैसे दो बड़े राज्यों और उत्तराखंड, गोवा और मणिपुर जैसे 3 छोटे राज्यों से आये चुनाव परिणामों ने एक बार फिर से यह बात स्थापित करने की कोशिश की है कि भारतीय राजनीति की परंपरागत चुनावी धारा बदल रही है और उसकी जगह एक नई आधुनिक धारा ले रही है, जो जातिवाद, क्षेत्रवाद, सम्प्रदायवाद, परिवारवाद, पूंजीवाद, बाहुबल, तुष्टिकरण जैसे पुराने राजनैतिक दांवपेंच से इतर सुशासन, विकासवाद, हिंदुत्व और संतुलित समीकरण को साधकर मूल्यों व वसूलों की राजनीति को बढ़ावा देने तथा सबको समान अवसर, सत्तागत सहूलियत व जनसुविधाएं देने की कोशिशों पर आधारित है। आप इसे हिंदुत्व की परिधि में सर्व समावेशी राजनीति को तरजीह भी समझ सकते हैं।

वहीं, इन चुनावों ने यूपी की प्रमुख विपक्षी पार्टी समाजवादी पार्टी यानी सपा और यूपी में कभी सत्तारूढ़ रही बहुजन समाज पार्टी यानी बीएसपी और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस समेत विभिन्न छोटे-मोटे दलों को भी कुछ सीख देने की कोशिश की है, यदि इन पार्टियों का नेतृत्व इसे समझने की कोशिश करें तो। दो टूक कहा जाए तो इन पार्टियों को अपनी घिसी पिटी सियासी रणनीति में आमूलचूल बदलाव लाना होगा, अन्यथा बीजेपी से बची राजनैतिक जगह को आप भर देगी और गैर भाजपा विपक्ष दिल्ली-पंजाब की तरह हाथ मलता रह जायेगा।

यही वजह है कि कुछेक अपवादों को छोड़कर बीजेपी लगातार आगे बढ़ रही है और सात-आठ साल पहले गठित आम आदमी पार्टी, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस जैसी सवा सौ साल पुरानी पार्टी की जगह धीरे धीरे ले रही है। क्योंकि समाजवादी सियासत करने वाले क्षेत्रीय दल भी कांग्रेसी सियासी लकीरों की नकल करने के कारण भारतीय राजनीति में लगातार अपनी प्रासंगिकता खोते

चले जा रहे हैं। वैसे तो भाजपा विरोधी दलों ने कोरोना महामारी के बाद भूख, गरीबी, महंगाई, बेरोजगारी, पेट्रोल-गैस की बढ़ती कीमतों, महंगी शिक्षा, बढ़ते अस्पताल बिल, पानी, भ्रष्टाचार, किसानी-मजदूरी, पुरानी पेंशन प्रणाली और मुफ्तखोरी की बौछार करके मुद्दों को गरमाने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी। परन्तु ताजा चुनाव परिणाम ने साबित कर दिया कि 5 राज्यों में जातिवादी, परिवारवादी, भ्रष्टाचारी तथा छद्म सेक्युलरवादी दलों को

मतदाताओं ने खारिज कर दिया है और हिंदूवादी ताकतों के हाथों में सत्ता सौंप दी है, अपवाद स्वरूप पंजाब को छोड़कर, जहाँ आप की राजनीति कई मामलों में बीजेपी की नकल ही करार दी जाती है।

राजनीतिक विश्लेषकों की मानें तो सीएम योगी आदित्यनाथ सत्ता में फिर से अपनी वापसी के लिए आत्मविश्वास से लबरेज रहे। क्योंकि उन्होंने सुशासन और विकास के अलावा जनता की हर छोटी बड़ी तकलीफ को समझकर उसे ईमानदारी पूर्वक दूर करने की कोशिश की और अपने अधिकारियों के ऊपर भी सतत निगरानी रखे।

उन्होंने केंद्र सरकार की योजनाओं, यथा- प्रधानमंत्री

आवास, राशन, आयुष्मान भारत, किसान सम्मान निधि, पीएम स्वनिधि योजना, उज्जवला योजना, बिजली कनेक्शन, मुद्रा लोन समेत व्यापारियों, महिलाओं और समाज के अन्य वर्गों के लिए लागू की गई योजनाओं को ईमानदारी पूर्वक लागू करवाया। वहीं, कोरोना जैसी वैश्विक महामारी से निपटने के लिए सरकार की ओर से सबको कोरोना की मुफ्त वैक्सीन व समुचित इलाज के प्रयत्न भी प्रमुख कारण है, जिसे लोगों ने महसूस किया।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा कानून व्यवस्था का सफल क्रियान्वयन और बाहुबलियों-भ्रष्टाचारियों के खिलाफ बुल्डोजर चलवाने का मुद्दा भी प्रमुख रहा है, क्योंकि जनता ऐसी ही सख्ती चाहती है। वहीं, भाजपा ने अपनी युगान्तकारी नीतियों से सभी सामाजिक वर्गों के बीच संपर्क का सघन अभियान चलाया। उसने महिलाओं, युवाओं के साथ ही सभी सामाजिक वर्गों व जातियों के बीच अपनी पैठ और गहरी की, जिसका सकारात्मक नतीजा यह हुआ कि भाजपा को सभी वर्गों का वोट मिला। अंत अंत तक सब लोग बीजेपी के पक्ष में जुटे रहे, पन्ना प्रमुखों ने घर-घर बीजेपी के पक्ष में माहौल बनाया। जिलों में विधानसभा स्तर तक बनी चुनाव संचालन समितियों के माध्यम से भाजपा ने हर बूथ स्तर तक की निगरानी सुनिश्चित की। जबकि मीडिया का एक वर्ग और विपक्ष सत्ता विरोधी कयासों को तूल देते हुए आत्ममुग्ध रहा।

यूपी विधानसभा चुनाव के मद्देनजर पिछले छह महीने से भाजपा की पूरी मशीनरी चुनावों में जुटी रही। पीएम नरेंद्र मोदी समेत अमित शाह, जेपी नड्डा, राजनाथ सिंह समेत पार्टी के सभी प्रमुख नेताओं को मैदान में उतारा गया। भाजपा की जन विश्वास यात्रा ने पूरे प्रदेश में भाजपा के पक्ष में माहौल बनाया। पीएम मोदी और योगी सरकार ने राजनीति में परिवारवाद और गुंडागर्दी को मुख्य मुद्दा बनाया गया। सपा ने ऐसे में जिन दागी चेहरों को टिकट दिए, उन्होंने भी कानून-व्यवस्था के मुद्दे पर बीजेपी का साथ दिया। यूपी में एआईएमआईएम, जदयू, पीस पार्टी, वीआईपी व अन्य पार्टियों को भी निराशा हाथ लगी है, जबकि सपा की सहयोगी रालोद ने अपने प्रदर्शन में सपा की तरह ही अपेक्षित सुधार किया है, जिससे उसकी राजनीतिक पूछ निकट भविष्य में बढ़ेगी।

इसी प्रकार उत्तराखंड में तीन-तीन मुख्यमंत्री बदलने के बावजूद भाजपा को स्पष्ट बहुमत मिलना यह जाहिर करता है कि पार्टी रणनीतिकारों के राजनीतिक प्रयोग सफल रहे हैं। यह जीत इसलिए महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि राजनेता व मीडिया यहां पर कांग्रेस की सत्ता में वापसी के संकेत दे रहे थे। लेकिन मतदाताओं के सकारात्मक मिजाज ने इन अटकलों की हवा निकाल दी। यहां बीएसपी को 2 सीट मिलना महत्वपूर्ण है, जो कभी यूपी में बीजेपी की सहयोगी पार्टी रही है।

जहाँ तक पंजाब की बात है तो वहां कांग्रेस का अंतर्कलह उसे ले डूबा और बीजेपी की पुरानी सहयोगी पार्टी अकाली दल बादल द्वारा बीजेपी का साथ छोड़ना उसकी सत्ता में फिर से वापसी पर विराम लगा दिया। इसकी भरपाई के लिए बीजेपी ने कांग्रेस के पूर्व मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह की नई पार्टी से अंतिम समय में समझौता तो कर लिया, लेकिन उससे चुनावी सफलता में तब्दील नहीं किया जा सका। इन्हीं बातों का फायदा वहां पर सियासी फील्डिंग कर रही आप को मिला और जनता ने उसकी रणनीति पर भरोसा जताकर दो तिहाई

बहुमत दे दिया। हालांकि, इस बात की अटकलें लगाई जा रही हैं कि आप के पीछे खालिस्तानी ताकतें खड़ी हैं! जो कि कांग्रेस और बीजेपी की सियासी मुश्किलें भविष्य में बढ़ाएंगी ही। वहीं, गोवा में भी पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर पर्रिकर को खोने के बाद और उनके पुत्र के पार्टी छोड़ने के बाद भी बीजेपी को वहां बहुमत मिलना यह साबित करता है कि बीजेपी का सियासी अंदाज लोगों को पसंद है। यह बात इसलिए कि यहां भी मीडिया कांग्रेस या आप के मजबूत होने और सत्ता में आने के संकेत दे रही थी, जो पूरी तरह से सच नहीं निकली। यहां कांग्रेस, एमजीपी के अलावा अन्य को भी सीटें मिली हैं, जिनमें से कुछ बीजेपी के स्वाभाविक मददगार साबित होंगे। वहीं मणिपुर में भी बीजेपी को बहुमत मिला है, जबकि कांग्रेस, एनपीएफ, एनपीपी और अन्य की मजबूत स्थिति यह दर्शाती है कि यहां भी भाजपा का भविष्य उज्ज्वल है और कई दल रणनीतिक रूप से उसके लिए मददगार साबित होंगे। यहां पर एनडीए की सहयोगी जदयू ने भी अच्छा प्रदर्शन करके भाजपा को चौंका दिया है।

अपने दम पर जनादेश लेकर लौटे योगी ने रच दिया इतिहास

उत्तर प्रदेश के विधानसभा चुनाव में नरेंद्र मोदी और योगी आदित्यनाथ की जोड़ी ने डबल इंजन बनकर भारतीय जनता पार्टी के सपनों को हकीकत कर दिखाया है। भाजपा एक बार फिर यूपी में राज करने के लिए तैयार है। चुनाव में 250 से अधिक सीटें जीतकर यूपी में फिर से कमल खिला है। एक बार फिर साबित हो गया कि मोदी का जादू लगातार चौथी बार यूपी में काम कर रहा है लेकिन, इस बार योगी के बूस्टर शॉट के साथ काम और असरदार रहा। यूपी चुनाव फतह की राह उतनी आसान नहीं थी, जितनी जीतने के बाद लग रही है। प्रधानमंत्री मोदी ने राज्य में लगभग दो दर्जन रैलियां कीं और अपने लोकसभा क्षेत्र वाराणसी में एक विशाल रोड शो भी किया, यहां उन्होंने दो दिनों तक डेरा डालकर रखा, यह उन कारणों में से एक है, जिसके बूते योगी आदित्यनाथ की लगातार दूसरी बार ताजपोशी मुमकिन हुई है। 2022 में योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में चुनाव लड़ा गया और बेशक 2017 वाला आंकड़ा इस बार पार्टी नहीं छू सकी पर जिस आंकड़े को छुआ गया, वह भी शानदार है। 403 सीटों के लिए बहुमत होता है 202 लेकिन भाजपा को कुल सीटें मिलीं 255। 2017 से 2022 तक उत्तर प्रदेश काफी बदल चुका है। राप्ती-गोमती का बहुत सारा पानी बह चुका है। फैसले ऐसे हुए, जिनकी किसी ने उम्मीद नहीं की। बहुत जल्द मंत्रिमंडल के शपथ ग्रहण समारोह को भी आप देखेंगे। उस समारोह में भी आपको बड़ा बदलाव देखने को मिले तो चौंकिएगा नहीं। देश-काल-परिस्थिति चाहे जैसी भी हो, फैसला जो भी होगा वह बेहद कड़क होगा। 2017 में उत्तर प्रदेश में भाजपा को जो बहुमत मिला था, वह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के चेहरे पर मिला था। लोगों ने टूट कर उनको वोट दिया था। अचानक एक स्टार प्रचारक सह सांसद योगी आदित्यनाथ को अमित शाह का बुलावा आता है और अगले ही पल प्रधानमंत्री से मुलाकात के बाद यह तय हो जाता है कि वह उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री होंगे। 2017 से 2022 तक योगी सरकार चलाते हैं और इन पांच वर्षों में कोई दिन ऐसा नहीं होता जब उनकी

सरकार चर्चा में न होती हो। चर्चा के कई बिंदु रहे। चाहे वह माफिया अतीक अहमद-मुख्तार अंसारी की संपत्तियों पर बुलडोजर चलाने का फैसला हो या फिर उज्जैन से यूपी लाए गए कुख्यात अपराधी विकास दुबे को गाड़ी पलटने के बाद एनकाउंटर में ढेर किया जाना, सरकार लगातार चर्चा में रही। यह सरकार राशन पहुंचाने में भी चर्चा में रही, भाषण देने में भी। यह योगी ही थे जिन्होंने 80-20 का चुनाव का नया टर्मोलाजी पोलिटिकल सर्कल में उतारा और जब परिणाम आए तो अक्षरशः वही साबित भी हुआ। इन पांच वर्षों में देश-दुनिया में अगर प्रधानमंत्री के बाद कोई चर्चा में रहा तो वह कोई और नहीं, सिर्फ और सिर्फ योगी ही रहे। इस बीच एक और खास बात हुई। यूपी में दंगा नहीं हुआ। अखिलेश के कार्यकाल में यूपी में दंगा रोके नहीं रुकता था, योगी के कार्यकाल में यह चाह कर भी नहीं हुआ। समाजवादी पार्टी का यह संगीन आरोप रहा कि जो दंगा करवाने वाला है, वह सत्ता चला रहा है तो दंगा होगा कैसे। लेकिन, उसे 125 सीटें देकर जनता ने बता दिया कि उसका भरोसा भाजपा के खिलते कमल पर है, साइकिल अब बीते जमाने की बात हुई। 2022 में योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में चुनाव लड़ा गया और बेशक 2017 वाला आंकड़ा इस बार पार्टी नहीं छू सकी पर जिस आंकड़े को छुआ गया, वह भी शानदार है। 403 सीटों के लिए बहुमत होता है 202 लेकिन भाजपा को कुल सीटें मिलीं 255। अगर सहयोगियों की संख्या को मिला दें तो यह आंकड़ा 273 का होता है। इसे आप बंपर भी कह सकते हैं। लेकिन, भाजपा में ही ऐसे कई तत्व हैं जो इस जीत का श्रेय योगी-मोदी-शाह को नहीं देकर खुद को दे रहे हैं, भले ही वह चुनाव हार गए हों। एक दौर वह भी था, जब उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्या यह कहने को तैयार नहीं थे कि विधानसभा का चुनाव योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में होगा। तब वह कहा करते थे कि केंद्र तय करेगा कि चुनाव किसके नेतृत्व में होना है? उस दौर में प्रदेश भाजपा के अध्यक्ष स्वतंत्र देव सिंह पहले शख्स थे जिन्होंने खम ठोंक कर कहा था कि चुनाव योगी जी के नेतृत्व में ही होगा और जीतेंगे भी। हुआ भी यही। लेकिन, केशव मौर्या का क्या हुआ? वह अपनी विधानसभा सीट हार गए। वह भी किससे? पल्लवी पटेल से। पल्लवी पहली बार चुनाव लड़ीं और जीतीं।

भारतीय राजनीति में तेजी से उभरता सितारा बनी आप

पांच राज्यों- उत्तर प्रदेश, पंजाब, उत्तराखण्ड, गोवा तथा मणिपुर में हुए विधानसभा चुनावों में जहां पंजाब में अरविंद केजरीवाल की आम आदमी पार्टी का जादू मतदाताओं के सिर चढ़कर बोला है, वहीं अन्य चारों राज्यों में भाजपा दोबारा सरकार बना रही है। पंजाब के चुनाव में तो केजरीवाल की पार्टी 'आप' ने इतिहास रच डाला है। भले ही 'आप' का जादू उत्तराखण्ड और उत्तर प्रदेश में नहीं चल सका लेकिन पंजाब के अलावा 40 सदस्यीय गोवा विधानसभा चुनाव में भी दो सीटें जीतकर वह वहां भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराने में सफल हुई है। एक ओर जहां कांग्रेस, बसपा जैसे विपक्षी दलों को मतदाताओं ने कड़ा संदेश दिया है, वहीं राष्ट्रीय राजनीति में 'आप' के भाजपा के विकल्प के रूप में उभरने का मार्ग भी पंजाब के नतीजों के बाद प्रशस्त हुआ है। पंजाब में 'आप' की जिस तरह की आंधी चली और मतदाताओं ने अन्य पार्टी के बड़े-बड़े सूरमाओं के मुकाबले केजरीवाल की पार्टी पर भरोसा जताया, उसके बाद आप भारत की राजनीति का तेजी से उभरता हुआ सितारा बन गई है।

इन विधानसभा चुनावों में एक और जहां उत्तर प्रदेश में कभी अपने ही बूते लगातार पांच साल पूर्ण बहुमत की सरकार चलाने वाली बहुजन समाज पार्टी का अस्तित्व प्रदेश की राजनीति से करीब-करीब खत्म हो गया है, वहीं इन चुनावों में सबसे बड़ा खामियाजा अगर किसी को भुगतना पड़ा है तो वो है कांग्रेस पार्टी, जिसके समक्ष अब अपना अस्तित्व बनाए रखने की बहुत बड़ी चुनौती मुंह बाये खड़ी है। दरअसल यह तय है कि अब पांच विधानसभा चुनावों में भी पार्टी की करारी हार के बाद पार्टी के भीतर गांधी परिवार के प्रति विरोध बढ़ेगा और कांग्रेस के अंदर बगावत के सुर पहले के मुकाबले और ज्यादा तेज होंगे। इसका स्पष्ट संकेत चुनावी नतीजों पर टिप्पणी करते हुए जी-23 के नेता मनीष तिवारी के उस बयान से भी लगाया जा सकता है, जिसमें उन्होंने कहा है कि यह राहुल गांधी से ही पूछा जाना चाहिए कि कांग्रेस की ऐसी दुर्दशा क्यों हुई? माना जा रहा है कि आने वाले दिनों में कांग्रेस की इस दुर्गति का असर महाराष्ट्र की राजनीति में भी देखने को मिल सकता है। आम आदमी पार्टी जिस तेजी के साथ राष्ट्रीय फलक पर छा रही है उससे कयास लगाये जाने लगे हैं कि यह पार्टी जल्द ही कांग्रेस की जगह ले लेगी। दिल्ली में कांग्रेस के 15 साल के शासन का अंत करके अरविंद केजरीवाल जिस मजबूती के साथ मुख्यमंत्री पद की कुर्सी संभाले हुए हैं उससे कांग्रेस के लिए दिल्ली के दरवाजे पूरी तरह बंद नजर आ रहे हैं। यही नहीं आम आदमी पार्टी ने पंजाब में भी कांग्रेस का सफाया कर दिया है। इससे पहले गुजरात के सूरत नगर निगम चुनावों में भी कांग्रेस का सफाया करके आम आदमी पार्टी मुख्य विपक्षी पार्टी बन गयी थी। इसी तरह वह राज्य जहां-जहां कांग्रेस कमजोर है, वहां आम आदमी पार्टी तेजी से बढ़त हासिल करती जा रही है। इसलिए सवाल उठता है कि भाजपा ने जो कांग्रेस मुक्त भारत का नारा दिया था, क्या उसे वास्तविकता में बदलने के लिए अरविंद केजरीवाल असली मेहनत कर रहे हैं? भाजपा ने कांग्रेस को केंद्र और राज्यों की सत्ता से बाहर कर विपक्षी खेमे में भेज दिया लेकिन केजरीवाल कांग्रेस को विपक्षी खेमे से भी आउट करने में जुट गये हैं।

देखा जाये तो आप ने अपने अब तक के सियासी सफर में एक बड़ा मुकाम हासिल किया है और राष्ट्रीय राजनीति में एक विकल्प के रूप में उभरी है। 'आप' ने पंजाब में 92 सीट पर जीत हासिल कर निकटतम प्रतिद्वंद्वी कांग्रेस को बहुत पीछे छोड़ दिया। केजरवाल की पार्टी अब 117 सदस्यीय पंजाब विधानसभा में तीन चौथाई बहुमत के साथ राज्य में सरकार बनाएगी। आप ने 40 सदस्यीय गोवा में भी दो सीट हासिल कर तटीय राज्य में कुछ पकड़ बनायी है, लेकिन यह उत्तराखंड और उत्तर प्रदेश में खाता खोलने में नाकाम रही। हम आपको बता दें कि आप ने पंजाब, गोवा, उत्तराखंड और उत्तर प्रदेश की सभी विधानसभा सीट पर चुनाव लड़ा था, ताकि वह अपना विस्तार करके राष्ट्रीय राजनीति में एक बड़ी ताकत बन सके। पंजाब में जीत से उत्साहित पार्टी का लक्ष्य अब गुजरात और हिमाचल प्रदेश में अपना विस्तार करने पर है। इन दोनों राज्यों में इस साल के अंत में विधानसभा चुनाव होने हैं, जिसमें आप भी मैदान में उतरेगी। आप के सूत्रों ने बताया कि गुजरात को ध्यान में रखते हुए पार्टी की योजना पंजाब का विजय पताका इस भाजपा शासित राज्य में पहुंचाने की है।

तीसरे विश्वयुद्ध की आहट!

यूक्रेन और रूस के बीच युद्ध लगातार जारी है। युद्ध में हजारों सैनिक और नागरिक मारे गए हैं तथा 20 लाख से अधिक लोगों को देश से भागने पर मजबूर होना पड़ा है। रूस और यूक्रेन की लड़ाई यूरोपीय सुरक्षा की नींव हिल गई है। पूरे यूक्रेन में अभी भी आम लोग घेराबंदी में फंसे हैं और उन्हें बिजली, भोजन, दवाओं तथा अन्य महत्वपूर्ण चीजों की कमी का सामना करना पड़ रहा है। कई देशों ने यूक्रेन को मानवीय आधार पर सहायता दी है। भारत भी यूक्रेन में दवाइयां और खाद्य सामग्री भेजी है। लोगों को उम्मीद थी कि तुर्की में रूस और यूक्रेन के विदेश मंत्रियों के बीच हुई बैठक के बाद कोई अच्छा समाचार मिलेगा, लेकिन ऐसा हुआ नहीं और वार्ता बेनतीजा रही। बातचीत असफल होने के बाद एक बार फिर से यूक्रेन पर रूस का आक्रमण जारी है। यूक्रेन के पश्चिमी शहरों में रूस ने हवाई अड्डे के पास हमले किए हैं। कुल मिलाकर देखें तो युद्ध के इतने दिनों के बाद भी दोनों देशों के बीच बातचीत से कोई रास्ता निकलता नजर नहीं आ रहा है। यूक्रेन की जंग को लेकर दुनिया में तीसरे विश्वयुद्ध का खतरा बढ़ता जा रहा है। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने जहां महाविनाशक परमाणु मिसाइलों को अलर्ट पर रखने का आदेश दिया है, वहीं रूसी विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव ने कहा है कि अगला विश्वयुद्ध परमाणु बमों से लड़ा जाएगा। इससे पहले पुतिन यूक्रेन को लेकर नाटो देशों को भयानक परिणाम भुगतने की चेतावनी भी दे चुके हैं।

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद सोवियत संघ से निपटने के लिए बने उत्तर अटलांटिक संधि संगठन के विस्तार को लेकर अमेरिका और रूस के बीच जंग जैसे हालात हैं। रूस ने अपनी सीमा पर नाटो के विस्तार को रोकने के लिए यूक्रेन पर हमला बोल दिया है और कई दिनों से भीषण जंग जारी है। रूस पश्चिमी देशों से आश्वासन मांग रहा है कि यूक्रेन को नाटो में शामिल नहीं किया जाए।

उधर, अमेरिका समेत नाटो देशों ने कहा है कि कोई भी स्वतंत्र देश उनके सैन्य संगठन में शामिल होने के लिए स्वतंत्र है। यही नहीं अमेरिका और अन्य नाटो देश यूक्रेन को लगातार घातक हथियारों की सप्लाई कर रहे हैं। रूस से परमाणु युद्ध के खतरे के बाद भी अमेरिका नाटो के

विस्तार पर अडिग है जिसके पीछे उसकी चाल छिपी हुई है। नाटो की स्थापना अप्रैल 1949 में एक संधि पर हस्ताक्षर के जरिए हुई थी। इस सैन्य संगठन की स्थापना का उद्देश्य इसके सदस्य देशों की सामूहिक सुरक्षा है। इसका मतलब यह है कि अगर किसी सदस्य देश पर विदेशी हमला होता है या खतरा पैदा होता है तो उसकी सामूहिक रक्षा की जाएगी। नाटो ने बोस्निया और हर्जेगोविना, कोसोवो और लीबिया संकट के दौरान हस्तक्षेप किया था। नाटो की स्थापना के समय इसके 12 संस्थापक सदस्य देश थे। अब इन सदस्यों की संख्या 30 तक पहुंच गई है। नाटो की इसे और बढ़ाने की योजना है। रूस के राष्ट्रपति पुतिन की ओर से लगातार युद्ध रोकने को लेकर शर्त रखी जा रही है। पुतिन का साफ तौर पर यह कहना है कि यूक्रेन विसैन्यकरण करें। रूस चाहता है कि रूस उसके सामने सरेंडर कर दें। पुतिन लगातार यह भी कह रहे हैं कि यूक्रेन को अपने संविधान में संशोधन करके इस प्रस्ताव को जोड़ना होगा कि वह कभी नाटो देशों का सदस्य नहीं बनेगा। रूस का ये भी कहना है कि यूक्रेन क्राइमिया पर रशिया के नियंत्रण को मान्यता दे देता है और (दोनियस्क) और जैसे पूर्वी यूक्रेन के इलाकों को स्वतंत्र देश के रूप में स्वीकार कर ले। दूसरी ओर भारत की भूमिका भी इस युद्ध में बेहद महत्वपूर्ण होता है। भारत लगातार दोनों देशों से शांति और बातचीत के जरिए हल निकालने की जोर दे रहा है। इसी सप्ताह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दोनों देशों के राष्ट्रपतियों से बात की थी। यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की ने कहा कि उन्होंने अपने देश के खिलाफ 'रूस के हमलों' का जवाब देने की जरूरत के बारे में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को सूचित किया और भारत ने मॉस्को के साथ सर्वोच्च स्तर पर शांतिपूर्ण वार्ता को दिशा देने की यूक्रेन की प्रतिबद्धता को सराहा है। राष्ट्रपति जेलेंस्की ने कहा कि भारत ने युद्ध के समय उसके नागरिकों की सहायता के लिए तथा सर्वोच्च स्तर पर शांतिपूर्ण वार्ता को दिशा देने के लिए यूक्रेन की प्रतिबद्धता की सराहना की है। यूक्रेन की जनता को समर्थन के लिए आभारी हूं। रूस को रोका जाए।

निश्चित तौर पर हमला करने से पहले रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन को युद्ध के इतना लंबा खींचने की उम्मीद नहीं रही होगी। शायद यूरोप के बाकी देशों को भी न रही हो क्यूंकि यूरोपीय संघ या नेटो देश शुरु से युद्ध में सीधी भागीदारी से परहेज के करने के ही मूड में दिख रहे थे। लेकिन अब हकीकत ये है कि युद्ध के इतने दिन बीत चुके हैं और रूस पूरी तरह से राजधानी कीव पर भी कब्जा नहीं कर पाया है। जबकि रूस ने यूक्रेन पर तीन तरफ से हमला किया है दूसरे देशों की सीमाओं से लगे शहरों को काफी नुकसान पहुंचाया है। युद्ध के मैदान से आ रही खबरों को सही मानें तो अब तक तकरीबन हजारों लोगों की जान चुकी है। यूक्रेन के राष्ट्रपति ने जेलेंस्की ने अपने एक बयान में कहा है कि 10 दिनों की लड़ाई में 10 हजार रूसी सैनिकों को मारा जा चुका है। जिन शहरों पर रूसी सैनिकों ने बमबारी की है उन तस्वीरों में दिख रहे हालात से साफ हो रहा है कि आम नागरिकों की काफी जानें गई हैं। यूक्रेन से अभी तक 15 लाख से ज्यादा लोग देश छोड़कर जा चुके हैं, कई शहर ऐसे हैं जहां लाशें सड़कों पर बिखरी पड़ी हैं बावजूद इसके न तो यूक्रेन झुकने को तैयार हो रहा है और न हीं रूस युद्ध रोकने के मूड में दिख रहा है। तो आखिर ये युद्ध अब किधर जा रहा है ?

अमेरिका के प्रस्ताव के बाद भी यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेंस्की ने देश छोड़ने से मना कर दिया और कहा है कि उनको मारने की अब तक तीन बार कोशिश की जा जुकी है, बजाए इसके मुझे यहां से निकालने के हमें और हथियार दिए जाएँ। जेलेंस्की जब वीडियो कॉंफ्रेंसिंग के जरिए अमेरिका कांग्रेस को संबोधित कर रहे थे तो उन्होंने अमेरिका से रूस में बने फाइटर प्लेन की मांग रखी और

कहा उनके पायलट उसे चलाना जानते हैं, साफ है कि जेलेंस्की अभी झुकने को तैयार नहीं है। साथ ही जेलेंस्की नेटो देशों से दुखी हैं और बार बार अनुरोध कर रहे है कि उनके देश पर आसमान से बसर रहे बम-गोलों से नेटो देश उनको बचाने के लिए आगे बढ़ें यानी यूक्रेन को नो फ्लाई जोन घोषित करें। हालांकि जेलेंस्की की इस मांग को ब्रिटेन पहले ही नकार चुका है और उसका साफ साफ कहना है कि ऐसा करना मामले को और गंभीर करना है क्यूंकि इसे सीधे तौर पर नेटो देशों की युद्ध में भागीदारी मानी जाएगी। लेकिन ब्रिटेन या नेटो देशों के इस कदम से पुतिन संतुष्ट नहीं दिखते और पुतिन ने यूरोपीय संघ और नेटो देशों द्वारा लगाए गए आर्थिक प्रतिबंधों को भी युद्ध की घोषणा के समान बताया है।

यूक्रेन में गूंज रही चीखें, युद्ध से होती है महज तबाही, यह कोई समाधान नहीं

यूक्रेन और रूस के बीच युद्ध जारी है और ऐसा प्रतीत हो रहा है कि यह युद्ध की शुरूआत मात्र है, अभी और भी ज्यादा तबाही के मंजर देखने को मिल सकते हैं। कई तरह की चौंका देने वाली रिपोर्ट्स भी सामने आ रही हैं। जिनमें यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर ज़ेलेंस्की की हत्या की कोशिश भी शामिल है। कहा जा रहा है कि यूक्रेन की राजधानी कीव में रूस के 400 एजेंड सक्रिय हैं, जो हत्या दल के सदस्य हैं।

रिपोर्ट्स के मुताबिक रूसी हत्या दल राष्ट्रपति वोलोदिमीर ज़ेलेंस्की को मौत के घाट उतारने के मिशन पर है और पिछले कुछ दिनों में 3 बार हत्या की कोशिश को अंजाम दिया जा चुका है लेकिन यूक्रेनी सुरक्षाबलों ने मुस्तैदी दिखाते हुए इन योजनाओं को विफल कर दिया है। वहीं, यूक्रेन के राष्ट्रीय सुरक्षा और रक्षा सचिव ने स्थानीय टेलीविजन को बताया कि मैं कह सकता हूं कि हमें रूस की संघीय सुरक्षा सेवा से जानकारी मिली है, जो इस खूनी युद्ध में हिस्सा नहीं लेना चाहते हैं। रूस ने यूक्रेन में एक हत्या दल तैनात किया है जो राष्ट्रपति द्वारा दिखाई जा रही बहादुरी को नेस्तनाबूत करने के मिशन में हैं। इसके लिए बकायदा रूस ने एक गुप्त योजना भी तैयार की है। इस योजना के तहत ही कीव में 400 से अधिक एजेंट सक्रिय हैं।

एक तरफ रूस और यूक्रेन के बीच में वार्ता हो रही है और दोनों देशों के बीच दो दौर की वार्ता हो चुकी है। जबकि जल्द ही तीसरे दौर की वार्ता होनी है। वहीं दूसरी तरफ रूस ने हमले तेज कर दिए हैं। जिसकी वजह से चारो तरफ चीखें गूंज रही हैं, हवाई हमले का अलर्ट जारी हो रहा है। सड़कें और इमारतें क्षतिग्रस्त हो चुकी हैं। ऐसे में एक खबर यह भी है कि रूसी सेना ने जपोरिजिया न्यूक्लियर प्लांट पर कब्जा कर लिया है और न्यूक्लियर प्लांट को भी सीज कर दिया है। दरअसल, जपोरिजिया न्यूक्लियर प्लांट के पास रूसी सेना ने जमकर बमबारी की थी, जिसकी वजह से न्यूक्लियर प्लांट में आग भी लग गई थी। हालांकि इस

आग को समय रहते बुझा दिया गया। इस न्यूक्लियर प्लांट के दम पर यूक्रेन अपनी 25 फीसदी बिजली की आपूर्ति करता है, जहां से रूस ने यूक्रेनी सेना को खदेड़ दिया है। सबसे बढ़िया बात तो यह है कि रेडिएशन नहीं फैला है। संयुक्त राष्ट्र की परमाणु निगरानी एजेंसी के प्रमुख ने इस विषय पर स्पष्ट बयान जारी किया। उन्होंने कहा कि हमले का शिकार हुए न्यूक्लियर प्लांट से रेडिएशन का निर्वहन नहीं हुआ है। आईएईए के महानिदेशक राफेल मारियानो ग्रॉसी ने कहा कि न्यूक्लियर प्लांट की एक इमारत को निशाना बनाए जाने के बाद से आईएईए संबंधित प्लांट के प्रबंधन और यूक्रेनी न्यूक्लियर नियामक एजेंसी के संपर्क में है।

एक तरफ रूस और यूक्रेन के बीच में वार्ता हो रही है और दोनों देशों के बीच दो दौर की वार्ता हो चुकी है। जबकि जल्द ही तीसरे दौर की वार्ता होनी है। वहीं दूसरी तरफ रूस ने हमले तेज कर दिए हैं। जिसकी वजह से चारो तरफ चीखें गूंज रही हैं, हवाई हमले का अलर्ट जारी हो रहा है कुछ देशों को छोड़ दिया जाए तो हर एक मुल्क यही चाहता है कि जल्द से जल्द युद्धविराम को घोषणा हों। इसके लिए वोलोदिमीर ज़ेलेंस्की ने व्लादिमीर पुतिन से सीधे बातचीत करने की इच्छा भी प्रकट की है। वोलोदिमीर जेलेंस्की ने व्लादिमीर पुतिन की फ्रांस के राष्ट्रपति एमेनुअल मैक्रों के साथ हाल में हुई मुलाकात की तस्वीरों की ओर इशारा करते हुए कहा कि मेरे साथ बैठकर वार्ता कीजिये, 30 मीटर दूर बैठकर नहीं। मैं काटता नहीं हूं। आप किस बात से भयभीत हैं ? यूक्रेनी राष्ट्रपति ने कहा कि बातचीत करना समझदारी है और यह युद्ध से बेहतर है।

दुनिया में सबसे ज्यादा वायु प्रदूषण दिल्ली में, 50 सबसे प्रदूषित शहरों में भारत के 35

भारत की राजधानी दिल्ली में कितना प्रदूषण है, इसको लेकर डब्लूएचओ ने एक रिपोर्ट जारी की है। यूएन एनवायरमेंट प्रोटेक्शन एजेंसी ने दुनिया भर के शहरों की एयर क्वालिटी रैंकिंग मंगलवार को जारी की है। इस रिपोर्ट में दिल्ली को दुनिया की कैपिटल सिटी के रूप में सबसे ज्यादा प्रदूषित शहर बताया गया है। इस रिपोर्ट में सबसे खराब गुणवत्ता वाले 50 शहरों में से 35 शहर भारत के हैं।

जारी हुई वर्ल्ड एयर क्वालिटी रिपोर्ट में डब्लूएचओ के मानकों पर भारत का एक भी शहर खरा नहीं उतरा है। एयर क्वालिटी रैंकिंग में भारत की राजधानी दिल्ली (85.5) को सबसे प्रदूषित शहर के रूप में रखा गया है। इसके बाद बांग्लादेश की राजधानी ढाका (78.1) और तीसरे नंबर पर अफ्रीका महाद्वीप के चाड देश की राजधानी अन जामेना (77.6) को रखा गया है। 2021 की वैश्विक एयर क्वालिटी रिपोर्ट में 117 देशों के 6475 शहरों का डेटा शामिल किया गया। इस रिपोर्ट में 20 से 35 फ़ीसदी शहरी पीएम 2.5 पॉल्यूशन को व्हीकल प्रदूषण के रूप में रिकॉर्ड किया गया है। इस रिपोर्ट में बताया गया है कि नई दिल्ली में 2021 में पीएम 2.5 सांद्रता में 14.6 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। पीएम 2.5, 2020 में 84 माइक्रोग्राम प्रति क्यूबिक मीटर से बढ़कर 96.4 माइक्रोग्राम प्रति क्यूबिक मीटर हो गया है। वहीं, रिपोर्ट के मुताबिक, भारत का वार्षिक पीएम 2.5 औसत 2019 में मापी गई सांद्रता पर वापस आ गया है। इस रिपोर्ट के मुताबिक, दुनिया के प्रदूषित शहरों में चौथे नंबर पर तजाकिस्तान का दुशांबे,पांचवें पर ओमान का मस्कट, छठे पर नेपाल का काठमांडू, सातवें पर बहरीन का मनामा, आठवें पर इराक का बगदाद नौवें पर किर्गिस्तान का बिसकेक और दसवें पर उज़्बेकिस्तान का ताशकंद शहर है। वहीं, प्रदूषण के मामले में पाकिस्तान की राजधानी इस्लामाबाद 11वें नंबर पर है। रिपोर्ट के मुताबिक, पाक की राजधानी नई दिल्ली से भी ज्यादा स्वच्छ है।

ग्रीनपीस इंडिया के कैंपेन मैनेजर अविनाश चंचल ने आईक्यूएयर के हालिया आंकड़ों पर टिप्पणी करते हुए कहा कि यह रिपोर्ट सरकारों और नगर निगमों के लिए एक चेतावनी है। उन्होंने कहा कि यह एक बार फिर उजागर कर रहा है कि लोग खतरनाक रूप से प्रदूषित हवा में सांस ले रहे हैं। भारत में वाहनों की वार्षिक बिक्री बढ़ने की उम्मीद के साथ ही वायु गुणवत्ता भी प्रभावित हो रही है। इसके लिए अगर समय पर सुधारात्मक उपाय नहीं किए गए तो स्थिति और भी जटिल हो सकती है।

WHO की वर्ल्ड एयर क्वालिटी रिपोर्ट

दिल्ली सबसे प्रदूषित

शहरों के नाम	प्रदूषण का स्तर
दिल्ली	85.5
ढाका	78.1
अन जामेना	77.6
दुशांबे	59.5
मस्कट	53.9

सबसे ज्यादा प्रदूषित 50 शहरों में 35 शहर भारत के

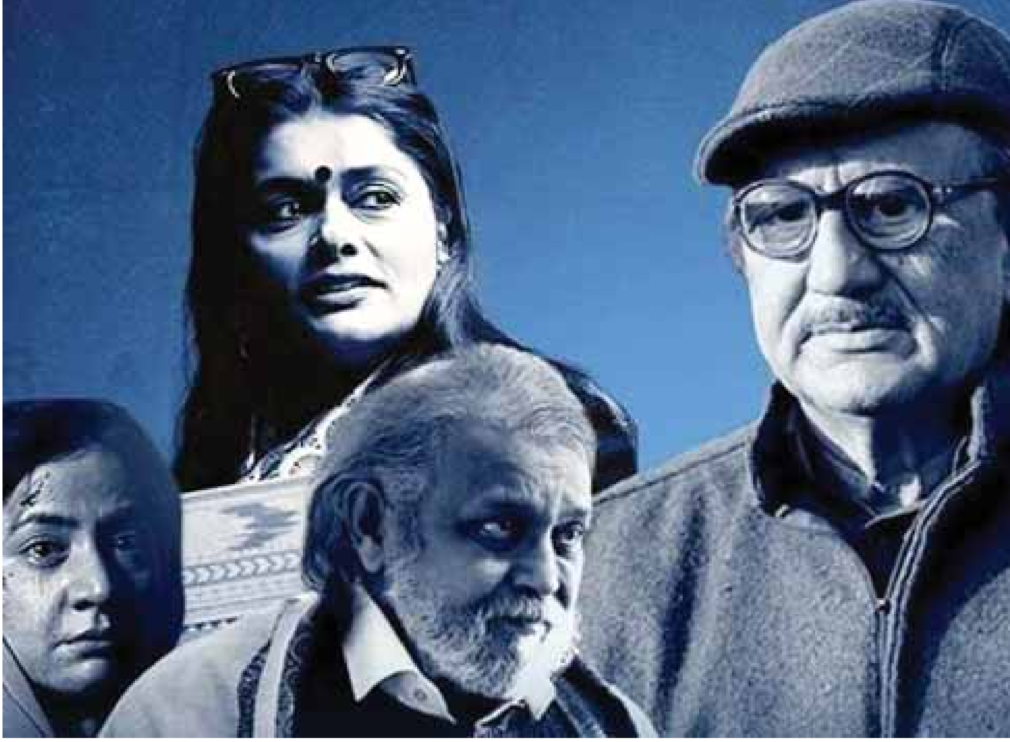

विवेक ने पलटे कश्मीर के रिसते घावों के पन्ने

विवेक अग्निहोत्री ने बतौर निर्देशक 'बुद्धा इन ए ट्रैफिक जैम' से जो अलग लीक हिंदी सिनमा में पकड़ी है वह दिन पर दिन गाढ़ी ही होती जा रही है। कौन सोच सकता है कि 'चॉकलेट' और 'हेट स्टोरी' बनाने वाले निर्देशक का ऐसा भी हृदय परिवर्तन हो सकता है लेकिन वह कहावत है ना कि देर आयद दुरुस्त आयद, विवेक का मसला भी कुछ वैसा ही है। विवेक ने अपनी पिछली फिल्म 'द ताशकंद फाइल्स' से दुनिया भर के लोगों का ध्यान अपनी तरफ खींचा। फिल्म तीन साल पहले की स्लीपर हिट फिल्म रही। उसी फिल्म का डीएनए विवेक अब अपनी इस नई फिल्म 'द कश्मीर फाइल्स' में लेकर आए हैं। पिछली बार उन्होंने इतिहास की मैली चादर से ढकी पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की हत्या की असलियत को दुनिया के सामने लाने की कोशिश की थी, इस बार उन्होंने कश्मीर की सबसे गंभीर समस्या का नकाब नोंचा है। सामने जो कुछ आता है वह भीतर तक हिला देने वाला है। लोग कह सकते हैं कि फिल्म में तकनीकी कमाल नहीं है, लेकिन इस फिल्म का कमाल इसका सच है। वह सच जिसे कह सकने की हिम्मत कश्मीर से निकले तमाम निर्देशक तक नहीं दिखा पाए।

फिल्म 'द कश्मीर फाइल्स' एक तरह से इतिहास की उन 'फाइल्स' को पलटने की कोशिश है जिनमें भारत देश में वीभत्स नरसंहारों के चलते हुए सबसे बड़े पलायन की कहानी है। देश में कश्मीर पंडित ही शायद इकलौती ऐसी कौम है जिसे उनके घर से आजादी के बाद बेदखल कर दिया गया है और करोड़ों की आबादी वाले इस देश के किसी भी हिस्से में कोई हलचल तक न हुई। जिस कश्मीर से कन्याकुमारी तक एक होने वाले देश का दम बार बार बड़े बड़े नेता भरते रहे हैं, उसके हालात की ये बानगी किसी भी इंसान को सिहरा सकती है। कोई 32 साल पहले शुरू होती फिल्म की इस कहानी की शुरुआत ही एक ऐसे लम्हे से होती है जो क्रिकेट के बहाने एक बड़ी बात बोलती है। घाटी में जो कुछ हुआ वह दर्दनाक रहा है। उसे पर्दे पर देखना और दर्दनाक है। आतंक का ये एक ऐसा चेहरा है जिसे पूरी दुनिया को दिखाना बहुत जरूरी है। कहानी कहने में इसके एक डॉक्यूमेंट्री बन जाने का भी खतरा था, लेकिन सच्चाई लाने के लिए खतरों से किसी को तो खेलना ही होगा।

सिनेमा के लिहाज से ये फिल्म 'शिंडलर्स लिस्ट' तक पहुंचने की कोशिश करती फिल्म है। यहां का नरसंहार भले उस पैमाने सा ना हो लेकिन इसका भयानक और वीभत्स

एहसास उससे कुछ कम भी नहीं है। फिल्म 'द कश्मीर फाइल्स' पूरी तरह से विवेक अग्निहोत्री की फिल्म है। फिल्म की रिसर्च इतनी तगड़ी है कि एक बार फिल्म शुरू होती है तो दर्शक फिर इससे आखिर तक बाहर निकल नहीं पाते। वे एंड क्रेडिट्स के वक्त एकदम गुमसुम और खामोश से बस खड़े के खड़े रह जाते हैं और पता ही नही चलता कि पूरा हॉल खड़े होकर एक निर्देशक के कर्म को शाबासी दे रहा है। शिकायत कुछ लोगों को ये हो सकती है कि फिल्म अपने विषय के हिसाब से कैनवास का विस्तार नहीं पा सकी और फिल्म को तकनीकी रूप से और बेहतर होना चाहिए था। लेकिन, जिन हालात और जिस बजट में ये फिल्म बनी दिखती है, उसमें ऐसी कोई उम्मीद भी इस फिल्म से नहीं करनी चाहिए।

मौजूदा दौर में सिनेमा की कड़वी सच्चाई यही है कि एक तेलुगू फिल्म का हिंदी संस्करण एक हिंदी फिल्म से ज्यादा स्क्रीन्स पर दिखाया जा रहा है। फिल्म 'द कश्मीर फाइल्स' को लेकर कहीं किसी तरह का शोर शराबा नहीं। कहीं किसी तरह का हैशटैग रिलीज से पहले ट्रेंड करने में किसी बड़ी सेलिब्रिटी का सहयोग भी नहीं। ये फिल्म अपना प्रचार अपने आप करती है। बतौर निर्देशक विवेक अग्निहोत्री ने इस फिल्म में जज्बात बोए हैं और एहसास काटे हैं। चिनार जैसे ऊंचे इम्तिहान में वह पूरे नंबरों के साथ पास हुए हैं तो बस इसलिए कि उनके साथ कंधे से कंधा मिलाने वाले कलाकारों और तकनीशियनों ने फिल्म में काबिले तारीफ काम किया है।

फिल्म 'द कश्मीर फाइल्स' को इसके कलाकारों की बेहतरीन अदाकारी के लिए भी देखा जाना चाहिए। अनुपम खेर अरसे बाद अपने पूरे रंग मे दिखे हैं। वह परदे पर जब भी आते हैं, दर्द का एक दरिया सा उफनाता है और दर्शकों को अपने साथ बहा ले जाता है। उनका अभिनय फिल्म में ऐसा है कि इसे देखने के बाद अगले साल का राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार उनके नाम होना बनता ही है। दर्शन कुमार ने फिल्म के अतीत को वर्तमान से जोड़ने का शानदार काम किया है। उनके कैंपस वाले भाषण और इस दौरान उनकी भाव भंगिमाएं देखने लायक हैं। चिन्मय मांडलेकर का अभिनय फिल्म की एक और मजबूत कड़ी है। तकनीकी तौर पर फिल्म बहुत कमाल की भले न हो लेकिन उदय सिंह मोहिले ने अपने कैमरे के सहारे फिल्म का दर्द धीरे धीरे रिसते देने में कामयाबी पाई है। फिल्म की अवधि इसकी सबसे कमजोर कड़ी है। फिल्म की अवधि कम करके इसका असर और मारक किया जा सकता है। फिल्म का संगीत कश्मीर के लोक से प्रेरणा पाता है और हिंदी भाषी दर्शकों को इसे समझाने के लिए विवेक ने मेहनत भी काफी की है। मुख्यधारा की फिल्म के हिसाब से फिल्म का संगीत हालांकि कमजोर है। लेकिन, इस सबके बावजूद फिल्म 'द कश्मीर फाइल्स' कथानक के लिहाज से इस साल की एक दमदार फिल्म साबित होती है।

कश्मीरी पंडितों के दर्द महसूस कराती है द कश्मीर फाइल्स

कश्मीर फाइल्स कश्मीरी पंडितों के पलायन के दर्द को दिखाती है। कश्मीरी पंडितों का यह दर्द आपको बेचैन कर देगा। ऐसा नहीं है कि लोग कश्मीर का यह व्याकुल सच नहीं जानते कि कैसे आतंकियों ने कश्मीरी हिंदुओं को उनकी जमीन से बेदखल किया। बेरहमी से कत्ल किया। उनकी महिलाओं बच्चों पर शर्मनाक अत्याचार किए। कश्मीरी लोग कैसे देश प्रदेश की सरकार, स्थानीय प्रशासन, पुलिस और मीडिया कैसी तत्वों के बावजूद अपनी ही धरती पर शरणार्थी बनकर रह गए और उन्हें आज तक न्याय नहीं मिला। निर्देशक विवेक अग्निहोत्री ने इसी दर्द की कहानी को कश्मीर फाइल्स के जरिए पर्दे पर उतारा है।

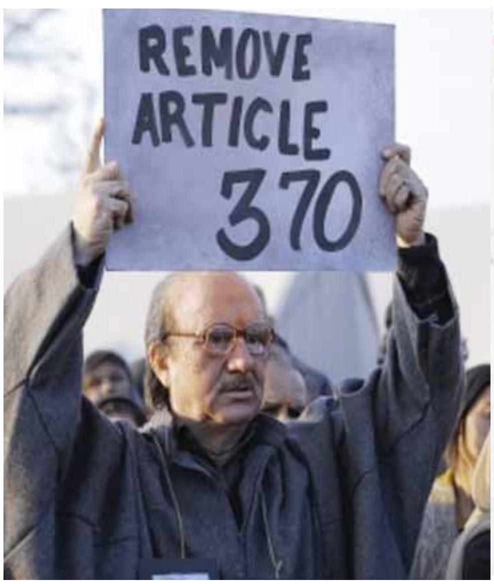

यह कहानी रिटायर्ड टीचर पुष्कर नाथ पंडित (अनुपम खेर) और उनके परिवार को केंद्र में रखते हुए चलती है। उनके बहाने कश्मीरियों के जख्मों और तकलीफों को बयां करती है। जेएनयू दिल्ली में पढ़ने वाला उनका जवान पोता कृष्णा (दर्शन कुमार) जब कश्मीर पहुंचता है, तो पुष्कर नाथ के पुराने दोस्तों आईएएस ब्रह्मा दत्त (मिथुन चक्रवर्ती), डीजीपी हरि नारायण (पुनीत इस्सर), डॉ महेश कुमार (प्रकाश बेलावाडी) और पत्रकार विष्णु राम (अतुल श्रीवास्तव) से मिलता है। वहां उसका सामना हकीकत से होता है। वह उस आतंकी फारुख मलिक बिट्टा (चिन्मय मांडलेकर) से भी मिलता है, जो उसके परिवार समेत कश्मीर की बर्बादी का जिम्मेदार है। विश्वविद्यालय में कश्मीर को देश से अलग करने के नारे लगाने वाले कृष्णा को वहां सच्चाई पता चलती है और उसकी आंखों के आगे से पर्दा हटता है। विवेक अग्निहोत्री ने फिल्म में कश्मीर से जुड़े दुष्प्रचारों को फिल्म में दिखाने की कोशिश तो की है लेकिन उसे लेकर बहुत ज्यादा मुखर नहीं हुए हैं। कश्मीर फाइल्स में वह राजनीति से अधिक वहां के हिंसक घटनाक्रम और कश्मीर को भारत से तोड़ने वाली षड्यंत्रकारी सोच पर फोकस करते हैं।

इस फिल्म में दिखाई गई हिंसा कहीं कहीं आप को झकझोर देती है। एक सीन में चावल की कोठी में छुपे पंडित के बेटे को जब आतंकी गोलियों से छलनी कर देता है तो उसके खून से सने चावल बिखर जाते हैं। आतंकी पंडित की बहू से कहता है कि अगर वह इस चावल को खाएगी, तभी उसकी और उसके परिवार के दूसरे लोगों की जान बच सकती है। वह चावल खाती है। एक दूसरे सीन में आतंकी पुलिस की वर्दी में 24 कश्मीरी हिंदुओं को एक लाइन में खड़ा करके गोलियों से भून देते हैं। वे कश्मीरी हिंदुओं और भारत का अपमान करने वाले नारे लगाते हैं।

लगभग 3 घंटे की इस फिल्म का पहला हिस्सा जहां कश्मीर में 1990 में हुए भीषण नरसंहार पर केंद्रित है, वहीं दूसरे में निदेशक कृष्णा के बहाने नई पीढ़ी के असमंजस को दिखाते हैं, जिसे बताया कुछ गया है और सच कुछ और है। कश्मीर की आजादी के नारे, बेनजीर भुट्टो के वीडियो और फैज की नज़्म हम देखेंगे के बहाने निर्देशक आतंकियों और अलगाववादियों के इरादे जाहिर करते हुए नई पीढ़ी की उलझन को सामने लाते हैं। काली बिंदी लगाई हुई वामपंथी उदारवादी प्रो. राधिका मोहन के रूप में पल्लवी जोशी जहां युवाओं को गुमराह करने वालों का प्रतिनिधित्व करती हैं। फिल्म बहुत सारे पंडितों की सच्ची कहानियों और दस्तावेजों पर आधारित है। यह फिल्म बार-बार फ्लैशबैक में जाती है और 1 सीध में नहीं चलती। तथ्यों पर ज्यादा जोर देने की वजह से कहीं-कहीं यह फिल्म डॉक्युड्रामा की तरह भी लगती है। निर्देशक ने आर्टिकल 370 से लेकर शरणार्थी कैंपों में कश्मीरियों की दुर्दशा को और उस पर राजनेताओं की संवेदनहीनता को उभारा है। यह फिल्म कई बातों को सामने लाती है जो लोगों को जानी चाहिए। यह मनोरंजन का नहीं बल्कि संवेदना का सिनेमा है।

चुनौतियों से भरे मध्य प्रदेश की शिवराज सरकार के कार्यकाल के दो साल

संकल्पसिद्ध और कर्मसिद्ध शिवराज

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान मध्यप्रदेश के राजनैतिक इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ने में कामयाब हुए हैं। यह नया अध्याय है मुख्यमंत्री के रूप में रिकार्ड 15 साल की कालावधि पूरा करना। यही नहीं श्री शिवराज सिंह चौहान अपने दल में भी यह गौरव हासिल करने वाले प्रदेश और देश के पहले व्यक्ति हैं।श्री शिवराज सिंह चौहान का विकास के लिये संकल्प और लगन आम लोगों को विश्वास दिलाता है कि वे ऐसे विकास के साथ लोगों की तरक्की और खुशहाली के कामों को कर सकते हैं। उनकी मंजिल है आत्म-निर्भर मध्यप्रदेश। ऐसा प्रदेश जो देश का अग्रणी प्रदेश हो जहाँ हर परिवार के पास रोटी, कपड़ा, मकान, दवाई और रोजगार हो।

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के चौथे कार्यकाल के दो वर्ष 23 मार्च को पूरे हो रहे हैं। 15 साल बाद वर्ष 2018 के अंत में प्रदेश में कांग्रेस की सरकार बनी और 15 महीने में ही गिर भी गई। इसके बाद शिवराज सिंह ने फिर प्रदेश की कमान संभाली तब तक कोरोना महामारी दस्तक दे चुकी थी। कोरोना की पहली, दूसरी और फिर कमजोर पड़ती तीसरी लहर से प्रदेशवासियों को बचाना शिवराज सिंह चौहान के सामने सबसे बड़ी चुनौती थी। राज्य के मुखिया के तौर पर इसका उन्होंने सामना ही नहीं किया, बल्कि देश को ऐसी आपदा से निपटने के लिए जनसहभागिता का मंत्र भी दिया। कोरोना से प्रदेश की आर्थिक स्थिति, रोजगार, उद्योग-धंधे, बाजार काफी हद तक प्रभावित हुए, जिसे संभालते हुए अब तक का सबसे बड़ा करीब पौने तीन लाख करोड़ रुपये का बजट भी हाल ही में पेश किया।

आत्मनिर्भर मध्य प्रदेश की कदमताल

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह पीएम नरेन्द्र मोदी के आत्मनिर्भर भारत के साथ आत्मनिर्भर मध्य प्रदेश की कदमताल करते हुए आगे बढ़ रहे हैं। वे सड़क, बिजली, पानी, कृषि, शिक्षा सहित विभिन्न् क्षेत्रों को भी आगे ले जाने के लिए प्रयासरत हैं। राजनीतिक नजरिए से देखा जाए तो शिवराज सिंह ने इन दो वर्षों में प्रदेश में हुए 33 विधानसभा सीटों के उपचुनाव में भाजपा

को 22 सीटों पर जीत दिलाई। कांग्रेस से भाजपा में आए ज्योतिरादित्य सिंधिया और उनके समर्थकों से समन्वय बनाया। अब वे मिशन 2023 की तैयारी में जुटे हैं।

बालिकाओं, महिलाओं, किसान और युवाओं पर फोकस

शिवराज सिंह अपने पहले कार्यकाल से ही बालिकाओं, महिलाओं, किसान और युवाओं पर फोकस रखते रहे हैं। उन्होंने अपने चौथे कार्यकाल में भी सबसे लोकप्रिय लाड़ली लक्ष्मी योजना को नए स्वरूप में लागू करने की तैयारी की है।

महिला स्व-सहायता समूह का गठन

महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने के लिए पूरे प्रदेश में आजीविका मिशन के तहत महिला स्व-सहायता समूह गठित किए जा रहे हैं। मुख्यमंत्री ने संकल्प व्यक्त किया है कि समूह से जुड़ी हर महिला की प्रति महीने कम से कम 10 हजार रुपये आमदनी होनी ही चाहिए। वे अपने सभी सार्वजनिक कार्यक्रमों में स्व सहायता समूह के स्टाल लगवाकर उनके उत्पाद का प्रचार-प्रसार भी करते रहे हैं।

किसानों के लिए भी शिवराज सिंह ने सरकारी खजाने का मुंह खोल रखा है। पिछले दो साल में केंद्र और

राज्य सरकार की विभिन्न् योजनाओं, बीमा, उपज, राहत राशि के रूप में वे प्रदेश के किसानों के खाते में एक लाख 72 हजार 894 करोड़ रुपये ट्रांसफर कर चुके हैं। किसानों को परंपरागत खेती के अलावा प्राकृतिक खेती, खाद्य प्रसंस्करण के लिए प्रेरित करने के साथ ही कृषि कार्य में ड्रोन के उपयोग को भी बढ़ावा देने के प्रयास शिवराज सरकार कर रही है।

रोजगार के संकट को दूर करने के लिए मेले

कोरोना से उपजे रोजगार के संकट को दूर करने के लिए मुख्यमंत्री ने जनवरी से प्रति माह रोजगार मेले के आयोजन की शुरुआत की है। इन मेलों के माध्यम से उनका लक्ष्य पांच लाख से अधिक युवाओं को स्वरोजगार के लिए बैंकों से ऋण और अन्य योजनाओं का लाभ दिलाना है। प्रदेश में बड़े औद्योगिक घरानों और बड़ी कंपनियों के साथ निवेश संबंधी करार को भी गति दी जा रही है।

गांव-गांव तक सड़कों का जाल

शिवराज सिंह प्रदेश के गांव-गांव तक सड़कों का जाल बिछाने के बाद अब हर गरीब को पक्का मकान देने के संकल्प को भी साकार करने में जुटे हुए हैं। अगले तीन वर्षों तक प्रदेश में 30 लाख पक्के मकान बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। केंद्र सरकार के सहयोग से जल जीवन मिशन के तहत घरों तक पाइप लाइन के जरिये पानी पहुंचाने का काम चल रहा है।

सरकार में जनता के विश्वास को और अधिक मजबूती देने के उनके प्रयास आज भी लगातार जारी हैं। वंचितों को सामाजिक सुरक्षा देने के लिये समर्पित शिवराजसिंह जी के लिये कोई भी वर्ग भूला-बिसरा नहीं रहा। किसानों, गरीब, महिला, युवा, जनजातीय, अनुसूचित जाति, पिछड़ा वर्ग, सामान्य और श्रमिक वर्ग के दुख-दर्द को दूर करने के लिये हरसंभव प्रयास कर रहे हैं, सरकार और समाज को विकास के कामों में साथ ला रहे हैं। उन्होंने मध्यप्रदेश में शासकीय कार्यों और योजनाओं के क्रियान्वयन में सरकार के साथ जन-भागीदारी का अनूठा उदाहरण देश में प्रस्तुत किया है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह प्रक्रिया भविष्य में समृद्ध प्रशासनिक परम्परा बनेगी। एकात्म मानववाद की अवधारणा से दीक्षित-संस्कारित श्री शिवराज सिंह चौहान अपनी कथनी-करनी को एकात्म कर आज प्रदेशवासियों की आशा और विश्वास के ऐसे सफल प्रतीक है, जो संकल्पसिद्ध और कर्मसिद्ध है। सच्चे अर्थों में प्रदेशवासियों के दिल और इतिहास दोनों में उन्होंने अपना अमिट स्थान बना लिया है।

कुल मिलाकर श्री शिवराज सिंह चौहान के बारे में कहा जा सकता है कि सत्ता उनका कभी लक्ष्य रहा ही नहीं है। सत्ता उनके लिये अपने प्रेरणा-स्त्रोत पं. दीनदयाल उपाध्याय के आदर्शों के अनुरूप अंतिम पंक्ति के अंतिम आदमी के दुख-दर्द दूर करने का एक साधन भर है। उनका लक्ष्य आत्म-निर्भर मध्यप्रदेश के निर्माण के साथ राष्ट्र के पुनर्निर्माण का है, राजनीति को छल, फरेब, दुरभि-संधियों और जाति और धर्म की संकीर्णताओं से ऊपर उठाकर विकासपरक बनाने का है और इसमें वे अब तक अकल्पनीय रूप से सफल रहे हैं। सर्वे भवन्तु सुखिनः की भावना के अनुरूप वे राजनैतिक दल बन्दी, मत-मतान्तर, धर्म-जाति, वर्ग और समुदाय से परे सबके मंगल, सबके कल्याण, सबके निरोगी होने के कार्य के कठिन व्रत को पूरा करने में जुटे हैं। उन्होंने प्रदेश में राजनीति की धारा पिछले डेढ़ दशक के अरसे में बदल दी है। अब प्रदेश में राजनीति तुष्टीकरण की नहीं विकास की ही हो सकेगी, ऐसा उन्होंने स्थापित कर दिया है।

सरकार में जनता के विश्वास को और अधिक मजबूती देने के उनके प्रयास आज भी लगातार जारी हैं। वंचितों को सामाजिक सुरक्षा देने के लिये समर्पित शिवराजसिंह जी के लिये कोई भी वर्ग भूला-बिसरा नहीं रहा। किसानों, गरीब, महिला, युवा, जनजातीय, अनुसूचित जाति, पिछड़ा वर्ग, सामान्य और श्रमिक वर्ग के दुख-दर्द को दूर करने के लिये हरसंभव प्रयास कर रहे हैं, सरकार और समाज को विकास के कामों में साथ ला रहे हैं। उन्होंने मध्यप्रदेश में शासकीय कार्यों और योजनाओं के क्रियान्वयन में सरकार के साथ जन-भागीदारी का अनूठा उदाहरण देश में प्रस्तुत किया है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह प्रक्रिया भविष्य में समृद्ध प्रशासनिक परम्परा बनेगी। एकात्म मानववाद की अवधारणा से दीक्षित-संस्कारित श्री शिवराज सिंह चौहान अपनी कथनी-करनी को एकात्म कर आज प्रदेशवासियों की आशा और विश्वास के ऐसे सफल प्रतीक है, जो संकल्पसिद्ध और कर्मसिद्ध है। सच्चे अर्थों में प्रदेशवासियों के दिल और इतिहास दोनों में उन्होंने अपना अमिट स्थान बना लिया है।

बेहतर भविष्य के लिए पानी बचाना जरूरी

जल की कमी का संकट न केवल भारत बल्कि दुनिया के लगभग सभी देशों की एक विकट समस्या बन चुका है। ऐसे में लोगों को जल का महत्व बताने और कैसे अलग-अलग तरीकों से इसे संरक्षित किया जा सकता है, इसके लिए विश्व जल दिवस मनाया जाता है। हर साल विश्व जल दिवस के मौके पर कई तरह के कार्यक्रमों का आयोजन होता है। भाषण, कविताओं और कहानियों के माध्यम से लोगों को जल संरक्षण और इसका महत्व समझाने की कोशिश की जाती है। कई तरह की तस्वीरें और पोस्टर शेयर किए जाते हैं, जिनका उद्देश्य लोगों को पानी की जरूरत समझाना होता है।

विश्व जल दिवस का इतिहास

दुनिया को पानी की जरूरत से अवगत कराने के मकसद से संयुक्त राष्ट्र द्वारा विश्व जल दिवस मनाने की शुरुआत की गई थी। साल 1992 में ब्राजील के रियो डि जेनेरियो में आयोजित यूनाइटेड नेशंस कॉन्फ्रेंस ऑन एनवायरमेंट एंड डेवलपमेंट (हृष्श्ष्ठ) में विश्व जल दिवस को मनाने का प्रस्ताव पारित किया गया था। विश्व जल दिवस पर भारत में भी लोग जागरुकता पैदा कर रहे हैं। सोशल मीडिया पर जहां लोग विश्व जल दिवस पर बधाई दे रहें हैं, वहीं लोगों से इसके संरक्षण की अपील भी कर रहे हैं।

2011 की जनगणना रिपोर्ट के अनुसार, ओडिशा में 83.31 फीसदी लोग ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं और इनमें से अधिकांश पीने और घरेलू उपयोग के लिए भूजल पर निर्भर हैं। अगस्त 2019 में कार्यात्मक घरेलू नल कनेक्शन अभियान शुरू होने से पहले ग्रामीण क्षेत्रों में पानी की आपूर्ति बोरवेल और हैंडपंप पर बहुत अधिक निर्भर करती थी। लेकिन सभी घरों को केवल 2024 तक नल कनेक्शन मिलने की उम्मीद है। गर्मियों में जब पानी का स्तर गिरता है, तो पानी खींचने के लिए बहुत अधिक कोशिश करनी

पड़ती है। अगर पंपिंग स्तर हैंडपंप द्वारा पानी उठाने की क्षमता से नीचे चला जाता है, तो कई क्षेत्रों को पानी की कमी वाला घोषित कर दिया जाता है। ग्रामीण महिलाओं पर जल संकट का व्यापक प्रभाव पड़ता है क्योंकि वे अपनी पीने की जरूरतों के लिए लंबा वक्त पानी लाने में बिताती हैं। इन घंटों के दौरान लड़कियां और महिलाएं स्कूल जा सकती हैं या काम कर सकती हैं। सौर ऊर्जा आधारित जलापूर्ति योजनाओं के क्रियान्वयन के कारण स्कूली लड़कियों के अध्ययन के लिए अपने समय का उपयोग करने से व्यवधान की संभावना कम हो रही है। महिलाएं अब अपने बचाए गए समय का उपयोग कृषि और जल आपूर्ति रखरखाव जैसी आजीविका पैदा करने वाली गतिविधियों में लगा रही हैं। ग्रामीण आबादी की मदद के लिए ओडिशा सरकार की ग्रामीण जल आपूर्ति और स्वच्छता (आरडब्ल्यूएसएस) विंग 2013-14 से ओडिशा अक्षय ऊर्जा विकास एजेंसी (ओआरईडीए) के माध्यम से सौर ऊर्जा आधारित जल आपूर्ति योजनाओं को लागू कर रही है। इसका प्रमुख लक्ष्य है बिना बिजली के दूरदराज के क्षेत्रों में रहने वाली महिलाओं की पानी की जरूरतों को पूरा करना। अब तक 11,000 सोलर पंप लगाने में यह पहल सफल रही है। आज आरडब्ल्यूएसएस 3386 सौर ऊर्जा आधारित दोहरी पंप पाइप जलापूर्ति योजनाओं के लिए कार्य आदेशों को अंतिम रूप देने वाला है, जो 2,950 गांवों में 1,14,619 कार्यात्मक घरेलू नल कनेक्शन प्रदान करेगा। बस्तियों के हर घर में ऐसे नल कनेक्शन होंगे और इन सभी योजनाओं को नवीनतम रिमोट मॉनिटरिंग सिस्टम के साथ एकीकृत किया जाएगा। आरडब्ल्यूएसएस संचालन और रखरखाव लागत को अनुकूलित करने के लिए मेगा पीडब्लूएस जल उपचार संयंत्रों की छाया मुक्त भूमि और छतों में 700 से 1000 केडब्ल्यूपी सौर ऊर्जा संयंत्रों से जुड़े ग्रिड की भी योजना बना रहा है। सरकार द्वारा अंगुल और बालासोर जिलों में ऐसी दो परियोजनाओं को पहले ही मंजूरी दी जा चुकी है।

दिग्गज पद्म पुरस्कारों से सम्मानित

राष्ट्रपति राम नाथ कोविंद ने राष्ट्रपति भवन में आयोजित अलंकरण समारोह में कांग्रेस नेता गुलाम नबी आजाद समेत कई हस्तियों को साल 2022 के पद्म पुरस्कारों से सम्मानित किया. पद्म पुरस्कार तीन श्रेणियों में प्रदान किए जाते हैं - पद्म विभूषण, पद्म भूषण और पद्म श्री. दो हस्तियों को पद्म विभूषण, आठ को पद्म भूषण और 54 को पद्म श्री से सम्मानित किया गया.

पूर्व सीडीएस जनरल बिपिन रावत (मरणोपरांत) और गीता प्रेस के दिवंगत अध्यक्ष राधे श्याम को पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया. राधे श्याम खेमका को साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में पद्म विभूषण (मरणोपरांत) से सम्मानित किया गया. राष्ट्रपति कोविंद ने राधे श्याम खेमका के पुत्र कृष्ण कुमार खेमका को उनका पुरस्कार प्रदान किया. राष्ट्रपति ने जनरल बिपिन रावत की बेटी कृतिका और तारिणी को उनका पुरस्कार दिया. वहीं कांग्रेस नेता गुलाम नबी आजाद, पंजाबी लोक गायक गुरमीत बावा (मरणोपरांत), टाटा संस के अध्यक्ष एन चंद्रशेखरन, पूर्व सीएजी राजीव महर्षि, कोविशील्ड के निर्माता सीरम इंस्टीट्यूट आफ इंडिया के साइरस पूनावाला समेत अन्य हस्तियों को पद्म भूषण से सम्मानित किया गया. पैरालंपिक रजत पदक विजेता देवेंद्र झाझरिया को पद्म भूषण जबकि हाकी खिलाड़ी वंदना कटारिया को पद्म श्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया. सच्चिदानंद स्वामी को साहित्य और शिक्षा में उनके काम के लिए पद्म भूषण से सम्मानित किया गया जबकि पैरा-शूटर अवनि लेखारा को पद्म श्री से सम्मानित किया गया. योग के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए स्वामी शिवानंद को पद्म श्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया. वहीं निर्देशक चंद्रप्रकाश द्विवेदी को सिनेमा में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए पद्म श्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया. कला के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए गुरमीत बावा (मरणोपरांत) पद्म भूषण से सम्मानित किया गया. उनकी बेटी ने राष्ट्रपति से यह पुरस्कार प्राप्त किया. गौरतलब है कि ये पुरस्कार विभिन्न विषयों और क्षेत्रों जैसे सामाजिक कार्य, सार्वजनिक मामलों, कला, विज्ञान, इंजीनियरिंग, व्यापार, उद्योग, चिकित्सा, साहित्य, शिक्षा, खेल, सिविल सेवा आदि में दिए जाते हैं. पद्म विभूषण अवार्ड असाधारण और विशिष्ट सेवा के लिए प्रदान किया जाता है. वहीं उच्च कोटि की विशिष्ट सेवा के लिए पद्म भूषण जबकि किसी भी क्षेत्र में विशिष्ट सेवा के लिए पद्म श्री पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं. हर साल गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर इन पुरस्कारों की घोषणा की जाती है.

राष्ट्रपति भवन में आयोजित होने वाले औपचारिक समारोहों में ये पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं. इस साल कुल 128 पद्म पुरस्कार प्रदान किए जा रहे हैं. इस साल दो बार के पुरस्कार दिए जा रहे हैं. यानी कुल चार पद्म विभूषण, 17 पद्म भूषण और 107 पद्म श्री सम्मान दिए जाने वाले हैं. पुरस्कार विजेता हस्तियों में 34 महिलाएं हैं. मरणोपरांत पुरस्कार विजेताओं में 13 हस्तियां शामिल हैं. विदेशियों, एनआरआई, पीआईओ, ओसीआई की श्रेणी में 10 हस्तियां हैं. दूसरा नागरिक अलंकरण समारोह 28 मार्च को आयोजित होने वाला है.

नई लहर का बढ़ा डर

देश में हर वयस्क को लगेगी कोरोना वैक्सीन की बूस्टर डोज

चीन, दक्षिण कोरिया और यूरोप समेत दुनिया भर के कई देशों में कोरोना के केसों में एक बार फिर से तेजी देखने को मिल रही है। ऐसे में भारत सरकार अलर्ट पर है और इससे निपटने की तैयारियां तेज की जा रही हैं। इसी कड़ी में देश के सभी वयस्कों को कोरोना की बूस्टर डोज लगाने का भी प्लान बनाया जा रहा है। रॉयटर्स ने सूत्रों के हवाले से यह जानकारी दी है। हालांकि अब तक इस पर फैसला नहीं हो सका है कि यह बूस्टर डोज पहली दो खुराकों की तरह ही फ्री होगी या फिर इसका चार्ज वसूल किया जाएगा। बता दें कि चीन के कई शहरों में एक बार फिर से केस बढ़ने के चलते लॉकडाउन जैसी स्थिति है।

इसके अलावा दक्षिण कोरिया में नए केसों का आंकड़ा हर दिन 6 लाख तक पहुंच रहा है। फिलहाल देश में 60 साल से अधिक आयु के सभी लोगों, फ्रंटलाइन वर्कर्स को ही बूस्टर डोज दी जा रही है। इसके अलावा 12 साल से अधिक आयु के बच्चों को भी कोरोना वैक्सीन लगाई जाने लगी है। कई राज्यों में स्कूलों को खोला जा रहा है। ऐसे में बच्चों का वैक्सीनेशन भी जरूरी हो चुका था। हालांकि देश में फिलहाल कोरोना के केसों में तेजी से कमी देखने को मिल रही है। सोमवार को बीते एक दिन में कुल 1,549 ही नए केस मिलने का आंकड़ा सामने आया है। इसके अलावा कुल ऐक्टिव केसों की संख्या भी 25 हजार के करीब ही रह गई है।

हालांकि टेंशन इस बात की है कि कानपुर आईआईटी ने अपनी स्टडी में भारत में 22 जून तक चौथी लहर शुरू होने का दावा किया है। अब तक देश में 180 करोड़ से ज्यादा कोरोना टीके लगाए जा चुके हैं। गौरतलब है कि बीचे कुछ महीनों में भारत समेत दुनिया की कई अर्थव्यवस्थाओं ने अच्छी रिकवरी की थी। ऐसे में यदि कोरोना की नई लहर आती है तो फिर हेल्थ के साथ ही मार्केट पर भी इसका असर देखने को मिलेगा और यह घातक स्थिति होगी। हालांकि माना जा रहा है कि अब आने वाली लहर पहले के मुकाबले कमजोर ही होगी। इसकी एक वजह बड़े पैमाने पर लोगों का टीकाकरण होना है।

12 से 14 साल के बच्चों का टीकाकरण

भारत में12 से 14 साल के बच्चों के लिए कोरोना का टीकाकरण शुरू हो गया. केंद्र सरकार ने कहा है कि इस आयु वर्ग के बच्चों को बॉयलोजिकल ई लिमिटेड द्वारा विकसित कॉर्बेवैक्स टीके की दो खुराक दी जाएगी.कॉर्बेवैक्स टीके की दो खुराक के बीच 28 दिनों का अंतराल जरूरी है. यानी दोनों वैक्सीन के बीच 28 दिनों का गैप रहेगा. 12 से 14 साल के बच्चों के टीकाकरण को लेकर केंद्र सरकार ने मंगलवार को गाइडलाइंस जारी की. एक मार्च 2021 को देश में 12-13 साल के 4.7 करोड़ बच्चे थे. बच्चों के टीकाकरण को लेकर केंद्रीय स्वास्थ्य सचिव राजेश भूषण ने मंगलवार को सभी राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के साथ एक वर्चुअल बैठक में कहा कि टीका लेने वाले बच्चों को कोविन ऐप पर रजिस्ट्रेशन कराना होगा और बच्चों को सिर्फ तय की गई वैक्सीन ही दी जाएगी. इसके अलावा 60 साल से अधिक उम्र वाले सभी बुजुर्गों को एहतियाती खुराक दी जा सकती है. एहतियाती खुराक को दूसरे टीके के लगाए जाने की तारीख के 9 महीने (39 सप्ताह) के पूरा होने के बाद बुजुर्गों को दी जानी है बच्चों के लिए टीके का रजिस्ट्रेशन 16 मार्च से शुरू हो गया, और इसे ऑनलाइन और ऑफलाइन माध्यम से किया जा सकता है. रजिस्ट्रेशन कोविन ऐप पर मौजूद परिवार के किसी सदस्य के अकाउंट से या फिर पोर्टल पर एक नए मोबाइल नंबर से नया अकाउंट बनाकर किया जा सकता है. रजिस्ट्रेशन टीका केंद्रों पर भी कराया जा सकता है.

वैक्सीनेशन की तारीख ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों तरह बुक हो सकेगी. शोध- मस्तिष्क सिकुड़न का कारण बन सकता है कोविड इसके साथ राज्यों को यह सुनिश्चित

करने की सलाह दी गई है कि टीकाकरण की तारीख को 12 वर्ष की आयु प्राप्त करने वालों को ही कोविड 19 टीका लगाया जाए. अगर लाभार्थी पंजीकृत है, लेकिन टीकाकरण की तारीख को 12 वर्ष की आयु पूरी नहीं है, तो कोविड 19 वैक्सीन नहीं दी जानी चाहिए. गाइडलाइंस में कहा गया है कि 12 से 14 साल के बच्चों का टीकाकरण उनके लिए तय टीका केंद्रों पर समर्पित टीकाकरण सत्रों में किया जाएगा, ताकि किसी भी अन्य टीके के इस्तेमाल की गुंजाइश न रहे. टीकाकरण दलों को यह सुनिश्चित करने के लिए ट्रेनिंग देने के लिए भी कहा गया है. गौरतलब है 15-18 वर्ष के आयु वर्ग के लोगों को पहले से ही 3 जनवरी, 2022 से कोवैक्सिन का टीका लगाया जा रहा है.

ग्वालियर पुलिस की महिला पुलिस अधिकारी व कर्मचारियों ने संभालीशहर के 15 चौराहों पर यातायात व्यवस्था, लोगों को जागरूकता के दिये संदेश

उत्कृष्ट कार्य को मिला सम्मान

● टीम गूंज न्यूज नेटवर्क

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर पुलिस मुख्यालय के निर्देश परपुलिस महानिरीक्षक ग्वालियर जोन ग्वालियर अनिल शर्मा,भापुसेएवं वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक अमित सांघी के मार्गदर्शन में ग्वालियर पुलिस द्वारा जिले में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये गये। इसी क्रम पुलिस नियंत्रण कक्ष ग्वालियर सभागार में महिला पुलिस अधिकारी एवं महिला विवेचकों के लिये एक दिवसीय सेमीनार का आयोजन किया गया। सेमीनार के प्रारंभ में वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ग्वालियर द्वारा उपस्थित मुख्य अतिथि विशेष सत्र न्यायाधीश (पॉक्सो एक्ट) आरती शर्मा, जेएमएफसी (महिला अपराध) शिवानी शर्मा को पुष्पगुच्छ प्रदान कर अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर उनका स्वागत किया। इस मौके पर अति0 पुलिस अधीक्षक शहर मध्य/यातायात श्री अभिनव चौकसे,भापुसे, नगर पुलिस अधीक्षक, ग्वालियर श्री नागेन्द्र सिंह सिकरवार,उप पुलिस अधीक्षक (महिला अपराध) श्रीमती पुष्पा प्रजापतितथा महिला सेल प्रभारी निरी0 अनीता शर्मा के साथ ग्वालियर

जिले की समस्त महिला पुलिस अधिकारी एवं कर्मचारीगण उपस्थित रही।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर ग्वालियर पुलिस द्वारा आम नागरिकों को यातायात नियमों के प्रति जागरूक करने तथा महिलाओं के आत्मविश्वास और आत्मसम्मान को बढ़ाने के उद्देश्य से ग्वालियर पुलिस की 50 से अधिक महिला पुलिस अधिकारी एवं कर्मचारियों द्वारा शहर के 15 मुख्य चौराहोंक्रमशः राजमाता चौराहा, फूलबाग चौराहा, गोले का मंदिर चौराहा, बारादरी चौराहा, हजीरा चौराहा, के.आर.जी. चौराहा, माधौनगर चौराहा, इंदरगंज चौराहा, पड़ाव चौराहा, हनुमान चौराहा, नाका चन्द्रबदनी चौराहा, पद्मा विद्यालय तिराहा, गोविंदपुरी चौराहा, हुजरात कोतवाली चौराहापर यातायात व्यवस्था संभाली गई। इस दौरान उनके द्वारा वाहन चालकों को यातायात के नियमों के प्रति जागरूक करने के साथ-साथ हेलमेट लगा कर वाहन चलाने, कोविड़ का प्रोटोकॉल पालन करने, सार्वजनिक स्थान पर मास्क पहनने की अपील की गई।आईजी ग्वालियर तथा एसएसपी ग्वालियर द्वारा चौराहों पर पहुंचकर वहां यातायात व्यवस्था संभाल रही महिला पुलिस अधिकारी एवं कर्मचारियों से उनके अनुभवों को जाना और उन्हे पुष्पगुच्छ प्रदान कर प्रोत्साहित किया।

स्वच्छ ग्वालियर का संदेश, स्वच्छता का लिया संकल्प

स्वच्छता महोत्सव में केन्द्रीय मंत्री मंत्री एवं सांसद सहित जनप्रतिनिधियों ने विभिन्न वार्डों में स्वच्छता के कार्य में की भागीदारी

• टीम गूंज न्यूज नेटवर्क

ग्वालियर की क्षमता यहां की विरासत के रूप में दुनियाभर ने देखी है अब हमें इसी ग्वालियर की क्षमता को शहर की सफाई के रूप में दिखाना है आओ हम सभी मिलकर संकल्प लें कि ग्वालियर को इस प्रकार से चमका दें कि यहां की सड़कें और नालियां बिल्कुल साफ व स्वच्छ रहें। इनमें बिल्कुल भी कचरा ना हो हमें देश का नंबर वन स्वच्छ शहर बनना है। उक्त आशय के विचार केंद्रीय मंत्री श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने आज नगर निगम ग्वालियर द्वारा आयोजित स्वच्छता महोत्सव के मुख्य आयोजन महाराज बाड़े पर आम नागरिकों को स्वच्छता की शपथ दिलाते हुए व्यक्त किए। इस अवसर पर प्रभारी मंत्री श्री तुलसीराम सिलावट ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युमन सिंह तोमर सांसद श्री विवेक नारायण शेजवलकर कलेक्टर श्री कौशलेंद्र विक्रम सिंह नगर निगम आयुक्त श्री किशोर कन्याल एवं सभी धर्म गुरुओं सहित बड़ी संख्या में आम जनमानस ने प्रातः 7:00 बजे से ही महाराज बाड़े पर स्वच्छता के संकल्प में सहभागिता की।

नगर निगम ग्वालियर द्वारा शहर में स्वच्छता का माहौल तैयार करने एवं स्वच्छता सर्वेक्षण 2022 के तहत अधिक से अधिक सिटीजन फीडबैक अपलोड कराने के उद्देश्य से महाराज बाड़ा सहित शहर के सभी वार्डों में स्वच्छता महोत्सव का आयोजन किया गया। सभी वार्डों में चर्चित अतिथियों द्वारा रैली निकालकर क्षेत्र के घर-घर में संपर्क किया और उन्हें स्वच्छता मिशन में सहभागिता करने की अपील की।

महाराज बाड़े पर आयोजित स्वच्छता संकल्प कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रुप में उपस्थित केंद्रीय मंत्री श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने नागरिकों को संबोधित करते हुए कहा कि यह ग्वालियर हमारा घर है जिस प्रकार से हम अपने मन और घर को हमेशा स्वस्थ रखते हैं उसी प्रकार से इस ग्वालियर की सड़क के नालिया गलियां सब हमारी हैं इन सभी को भी हमें स्वच्छ रखना चाहिए। इस अवसर पर सांसद श्री विवेक नारायण शेजवलकर ने सभी को संबोधित करते हुए कहा कि स्वच्छता का संस्कार एवं जज्बा हमारे अंदर ही होता है यदि स्वच्छता पूरे देश में लानी है तो हमें सभी को स्वच्छता के संस्कार को अपनाना होगा। उन्होंने कहा कि मानों तो कचरा समस्या है और यदि ठान लो तो यह एक अवसर है। कचरे का रीयूज, रीसायकल एवं रिड्यूस करके हम इसे कई लोगों के लिए रोजगार का अवसर भी बना सकते हैं। हम सभी को अपने शहर ग्वालियर को देश का नंबर वन शहर बनाने के लिए स्वयं आगे आकर स्वच्छता में सहभागिता करनी होगी। स्वच्छता का संकल्प केंद्रीय मंत्री श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया द्वारा उपस्थित सभी नागरिकों को दिलाया गया।

कार्यक्रम के दौरान उपस्थित सभी नागरिकों को सिटीजन फीडबैक का फार्म प्रदान कर उस पर अंकित बारकोड स्कैन कर अधिक से अधिक संख्या में सिटीजन फीडबैक करने का आग्रह किया गया। कार्यक्रम के दौरान स्वच्छता की ब्रांड एंबेसडर सुश्री अंकिता द्वारा स्वच्छता गीत सुनाया गया तथा नन्ही मंत्रिता शर्मा द्वारा आम नागरिकों को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया गया।

स्वच्छता पर शहरवासी दें सुझाव : कन्याल

निगमायुक्त किशोर कन्याल ने शहर में साफ सफाई व्यवस्था का निरीक्षण करते हुए सभी संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि सफाई व्यवस्था में लापरवाही कतई बर्दाश्त नहीं की जाएगी जो भी लापरवाही करेगा उसके विरुद्ध कठोर कार्रवाई की जाएगी। निगमायुक्त श्री कन्याल सिटी सेंटर,न्यू हाई कोर्ट होते हुए नीडम रोड पहुंचे तथा सफाई व्यवस्था का निरीक्षण किया।

निरीक्षण के दौरान बीच सड़क पर कचरे का ढेर पर आवारा पशुओं का जमावड़ा देख नाराजगी व्यक्त करते हुए संबंधित अधिकारियों को तुरंत कचरा साफ करने और जानवरों को नियंत्रित करने के निर्देश दिए। निगमायुक्त श्री किशोर कन्याल ने फूलबाग स्थित निगम प्रशासक कार्यालय जलविहार में चल रही सफाई व्यवस्था देखा और नवसंवत्सर के पहले साफ पानी भरने के लिए पार्क अधीक्षक से कहा। शहर को नियमित स्वच्छ बनाए रखने के लिए शहरवासी अपने सुझाव निगमायुक्त को लैंडलाइन नंबर 0751-2438748 पर दे सकते है। आने वाले सुझावों व शिकायतों पर तत्काल अमल किया जाएगा। अंत में कन्याल ने शहरवासियों से शहर को स्वच्छ बनाने के लिए निगम का सहयोग करने की अपील की है।

मानवसेवा की मिसाल ग्वालियर कलेक्टर कौशलेन्द्र विक्रम सिंह

सुशासन की सार्थकता सिद्ध कर गया बरई का सुशासन शिविर

● टीम गूंज न्यूज नेटवर्क

कलेक्टर अचानक खेतों में पहुंचे

मानव सेवा की सर्वोपरि है इसी उद्देश्य से ग्वालियर कलेक्टर काम कर रहे हैं। कलेक्टर की जनसुनवाई हो या प्रशासन की ओर से आयोजित शिविर कलेक्टर हमेशा ही लोगों की मदद के लिए आगे बढ़कर कार्य कर रहे हैं उनकी यही शैली आज आमजन को प्रभावित कर रही है और सभी कलेक्टर की कार्यप्रणाली की प्रशंसा कर रहे हैं। गौरतलब है कि कलेक्टर कौशलेन्द्र विक्रम सिंह अचानक डबरा तहसील के ग्राम सेंकरा जागीर पहुँचे। इस दौरान उन्होंने पंजीकृत किसानों के खेत पर पहुँचकर फसल का भौतिक सत्यापन किया। सेंकरा जागीर ग्राम में गेहूँ उपार्जन के लिए 178 किसानों ने पंजीयन कराया है। कलेक्टर इस दौरान किसानों से रूबरू होकर उनकी कठिनाईयाँ व समस्यायें भी सुनीं। गेहूँ की फसल का सत्यापन करने पहुँचे कलेक्टर श्री सिंह ने संबंधित अधिकारियों को यह भी निर्देश दिए कि सीएम हैल्पलाइन में दर्ज शिकायतों का निराकरण अभियान बतौर करें।

जन-सुनवाई बनी गरीबों का सहारा

बिट्टो बाई को जब वृद्धावस्था पेंशन का स्वीकृति पत्र मिला तो एक बारगी वह भरोसा नहीं कर पाई कि अब उन्हें सरकार हर माह 600 रूपए पेंशन देगी। सिरोल क्षेत्र की निवासी असहाय एवं वृद्ध महिला श्रीमती बिट्टो बाई कलेक्ट्रेट की जन-सुनवाई में सामाजिक सुरक्षा पेंशन दिलाने की फरियाद लेकर पहुँचीं थी। कलेक्टर श्री कौशलेन्द्र विक्रम सिंह ने जन-सुनवाई में ही नगर निगम के अधिकारियों के माध्यम से पेंशन स्वीकृत कराकर बिट्टो बाई को स्वीकृति पत्र सौंप दिए। पेंशन मंजूर होने पर बिट्टो बाई के चेहरे पर आई खुशी देखते ही बन रही थी। वे कहने लगीं कि मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने जन-सुनवाई शुरू कर हम जैसे जरूरतमंदों पर बड़ा उपकार किया है। बिट्टो बाई मुख्यमंत्री श्री चौहान को दुआएं देती अपने घर लौटीं। मंगलवार को कलेक्ट्रेट में हुई जन-सुनवाई में आधा दर्जन हितग्राहियों को सामाजिक सुरक्षा पेंशन स्वीकत की गई। इनमें लाला का बाजार निवासी श्री महादेव दुबे, कमानीपुल लक्ष्मीगंज निवासी विधवा महिला श्रीमती सीमा धवन, जमाहर निवासी श्री जनवेद बाथम, लश्कर क्षेत्र के निवासी श्री प्यारा सिंह व अशोक कॉलोनी मुरार निवासी श्री फूलचंद शामलि हैं। कलेक्ट्रेट की जन-सुनवाई में मदद की आस में पहुँचे बहुत से जरूरतमंदों के निःशुल्क इलाज का इंतजाम भी कलेक्टर श्री कौशलेन्द्र विक्रम सिंह ने करा दिया।

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के सुशासन के संकल्प को मूर्त रूप देने के लिये जिला प्रशासन द्वारा बरई में लगाया गया यह सुशासन शिविर सही मायने में सुशासन शब्द की सार्थकता सिद्ध कर गया। कलेक्टर कौशलेन्द्र विक्रम सिंह एवं अपर कलेक्टर ने दिन भर शिविर में मौजूद रहकर एक सैकडा से अधिक समस्याओं का मौके पर ही न केवल निराकरण कराया बल्कि लोगों को स्वीकृति पत्र भी सौंपे गए। शिविर स्थल पर अस्थाई लोक सेवा केन्द्र, आरसीएमएस में प्रकरण दर्ज करने की व्यवस्था व निर्माण कार्यों की तकनीकि स्वीकृति से लेकर तमाम ऐसे सरकारी कामकाज मौके पर ही निपटाये गए, जिनका निराकरण दफ्तरों से ही सम्भव है। इसे देखकर ऐसा लगा कि बरई के इस शिविर में सभी महत्वपूर्ण विभागों के दफ्तर सिमट आये हैं।

वहीं दूसरी ओर कलेक्टर सिंह ने जन-सुनवाई में हाथ ठेला मंगवाया और रेनू को सौंपा। साथ ही हाथ ठेले से सब्जी का कारोबार शुरू करने के लिये आर्थिक मदद भी प्रदान की। कलेक्टर ने पिण्टो पार्क क्षेत्र में ऐसे स्थान पर रेनू को सब्जी का ठेला लगाने के लिए जगह दिलाने के निर्देश भी जन-सुनवाई में मौजूद नगर निगम के उपायुक्त अतिबल सिंह यादव को दिए।

ड्रोन इस्तेमाल में मध्यप्रदेश को नम्बर वन राज्य बनायेंगे

● टीम गूंज न्यूज नेटवर्क

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश बनाने के लिये सरकार सभी दिशाओं में काम कर रही है। इस दिशा में प्रदेश में ड्रोन तकनीक को भी प्रमुखता से अपनाया गया है। हम मध्यप्रदेश को ड्रोन तकनीक के इस्तेमाल में नम्बर वन राज्य बनायेंगे। मुख्यमंत्री श्री चौहान गुरूवार को ग्वालियर में प्रदेश के पहले ड्रोन स्कूल के उदघाटन कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने ग्वालियर के माधव प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान संस्थान (एमआईटीएस) में केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह तोमर तथा केन्द्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया के साथ प्रदेश के पहले ड्रोन स्कूल और एमआईटीएस के नवनिर्मित बॉयज हॉस्टल का उदघाटन किया। इस अवसर पर प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री वी. डी. शर्मा, प्रदेश की खेल एवं युवा कल्याण, तकनीकी शिक्षा, कौशल विकास एवं रोजगार मंत्री श्रीमती यशोधरा राजे सिंधिया, जिले के प्रभारी एवं जल संसाधन मंत्री श्री तुलसीराम सिलावट, राजस्व मंत्री श्री गोविंद सिंह राजपूत, लोक स्वास्थ्य व परिवार कल्याण मंत्री डॉ. प्रभुराम चौधरी व राज्य सरकार के अन्य मंत्रिगण, सांसद श्री विवेक नारायण शेजवलकर व भाजपा जिला अध्यक्ष श्री कमल माखीजानी सहित अन्य जनप्रतिनिधिगण मौजूद थे।

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने ड्रोन स्कूल व बॉयज हॉस्टल के उदघाटन और सम्मान समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि खुशी की बात है केन्द्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया की पहल पर प्रदेश में पाँच ड्रोन स्कूल खुलने जा रहे हैं, इनमें से आज पहले स्कूल का शुभारंभ ग्वालियर में हो गया है। प्रदेश सरकार ने नई स्टार्टअप नीति बनाई है। जिसके तहत युवाओं के नवाचारों को धरातल पर लाने में सरकार भरपूर आर्थिक और तकनीकी मदद मुहैया करायेगी। उन्होंने कहा कि इंदौर के विद्यार्थियों ने नए ङ्क नए स्टार्टअप शुरू कर 800 से लेकर एक हजार करोड़ तक की कंपनियाँ विकसित कर ली हैं। सरकार की स्टार्टअप नीति का लाभ उठाकर ग्वालियर के युवा भी नए-नए स्टार्टअप खड़े कर सकते हैं। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने दोहराया कि हमारा संकल्प है कि प्रदेश के युवा नौकरी मांगने वाले नहीं नौकरी देने वाले बनें। केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने कहा कि देश में कृषि के क्षेत्र में ड्रोन तकनीक को विशेष बढ़ावा दिया जा रहा है। निकट भविष्य में इस तकनीक के इस्तेमाल से क्रांतिकारी प्रगति सामने आयेगी। उन्होंने कहा भारत सरकार के कृषि विभाग ने ड्रोन नीति जारी कर दी है, जिसके तहत 12वीं पास बच्चे 4 लाख रूपए तक का अनुदान प्राप्त कर ड्रोन पायलट के रूप में अच्छा रोजगार पा सकते हैं। इसी तरह यदि कृषि स्नातक ड्रोन तकनीक की कोई इकाई स्थापित करना चाहते हैं तो वह पाँच लाख तक का अनुदान पा सकते हैं। इसके अलावा संस्थान भी कृषि की ड्रोन नीति के तहत 100 प्रतिशत तक अनुदान प्राप्त कर सकते हैं। कृषि मंत्री श्री तोमर ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को मकान का मालिकाना हक दिलाने में ड्रोन होने पर साल भर में लगभग ढ़ाई हजार ड्रोन पायलट तैयार होंगे। श्री सिंधिया ने खुशी जाहिर करते हुए कहा कि मध्यप्रदेश वर्तमान में ड्रोन तकनीक के इस्तेमाल में देशभर के अग्रणी राज्यों में से एक है।

सांसद श्री विवेक नारायण शेजवलकर ने भी विचार व्यक्त

प्रदेश के पहले ड्रोन स्कूल का मुख्यमंत्री चौहान ने किया उदघाटन, केन्द्रीय मंत्री तोमर व सिंधिया सहित राज्य सरकार के मंत्रिगणों की मौजूदगी में हुआ उदघाटन

तकनीक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसी तरह टिड्डी दल के आक्रमण को असफल करने में ड्रोन तकनीक क्रांतिकारी साबित हुई है। केन्द्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का सपना है कि भारत किसी भी देश का फोलोअर नहीं लीडर बने। इसी संकल्पना को साकार करने के लिये ड्रोन को गाँव-गाँव व घर-घर में पहुँचाने के प्रयास किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि गत 11 दिसम्बर को प्रदेश में पाँच ड्रोन स्कूल खोलने की घोषणा की गई थी। खुशी की बात है मात्र 90 दिन के भीतर सभी औपचारिकताएं पूरा करने के बाद आज ग्वालियर में पहला ड्रोन स्कूल शुरू हो गया है। श्री सिंधिया ने बताया कि इस ड्रोन स्कूल में हर माह 40 से 50 बच्चों को ड्रोन तकनीक में प्रशिक्षित किया जायेगा। इस प्रकार साल भर में लगभग 500 युवा ड्रोन पायलट तैयार होंगे। ड्रोन पायलट का प्रशिक्षण प्राप्त युवा हर माह औसतन 30 हजार रूपए की आय आसानी से अर्जित कर पायेंगे। उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश के पाँचों ड्रोन स्कूल शुरू किए। उन्होंने कहा कि मेरे लिये आज विशेष खुशी का दिन है कि जिस एमआईटीएस में मैंने अपनी पढ़ाई की उसी में मुझे प्रदेश के पहले ड्रोन स्कूल के उदघाटन कार्यक्रम में शामिल होने का अवसर मिला। आरंभ में एमआईटीएस के निदेशक डॉ. आर के पंडित ने स्वागत उदबोधन दिया। कार्यक्रम में भारतीय प्रशासनिक सेवा के सेवानिवृत्त वरिष्ठ अधिकारी श्री प्रशांत मेहता भी मौजूद थे। कार्यक्रम का संचालन एमआईटीएस के प्राध्यापक डॉ. मनीष दीक्षित ने किया। मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने एमआईटीएस मैदान में रिमोट के जरिए ड्रोन उड़ाकर प्रदेश के पहले ड्रोन स्कूल का शुभारंभ किया। इस अवसर पर केन्द्रीय मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह तोमर व श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया, भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष श्री वी डी शर्मा, प्रदेश सरकार की मंत्री श्रीमती यशोधरा राजे सिंधिया, श्री तुलसीराम सिलावट, श्री गोविंद सिंह राजपूत, डॉ. प्रभुराम चौधरी तथा सांसद श्री विवेक नारायण शेजवलकर सहित राज्य सरकार के अन्य मंत्रिगण मौजूद थे।

God's Fair Creation

Imagine a world without a woman. How dull, drab, obnoxious it will be, things would go amiss, imbalanced like a vehicle running with no wheels.She smiles when in tears,wins when she loses. That is the strength of being a woman for when she was created by God , unparalleled ingredients of quality were mixed to give her a resilience to bear and be everywhere as mother, sister, wife and daughter.Cast a glance at any walk of life and she presents herself on a rock grounding as homemaker, engineer doctor, entrepreneur scientist,sporting legend , artist, philosopher, astronomer writer, in short,a living image of versatility.The International Women's Day is a compliment to every woman , recognised as vital source of regeneration and rejuvenation , for she creates and extends life , sustains it . She is the trailblazer of this living world.Is there anything in this world of humans that can move forward smoothly without a woman's contribution?The society that underrates and ill measures the worth of the lady has now shown compunction to allow her a space she deserves by right.. And the dignity that she is meant for.Duty, responsibility,and grace is her forte. She creates.educates,raises and brings up a family that combines to form the basis of a society.Every day is a woman's day.Shoulder to shoulder with the men ,at her household and in her duty outside her home.she traverses all her trials and comes anew to face and walk a road ridden in ever recurring challenges in life.She is path breaker in that she discovers newer perspectives and leads in her capacity wherever she is placed, phenomenally courageous and confident.Unmarred by scars of hardships, women have patience and perseverance to tackle any difficult turn in life.Yet this symbol of essence of life is denied the status defined to be equal for all.It is sad that thousands of women languish in deprivation, victimized amidst stereotypes, gripped in dreadful practices of severity which punishes her at unexpected moments.But where women aren't respected civilization scales down.The International Women's Day is a reminder to all women to understand her status as the"real architect of life".

Shubhra Ghosh

23 मार्च को देशभर में शहीदी दिवस मनाया जाता है देश के वीर शहीदों को आज के दिन याद किया जाता है। 1931 में भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को फांसी दी गई थी। कोर्ट ने तीनों को फांसी दिए जाने की तारीख 24 मार्च तय की थी, लेकिन ब्रिटिश सरकार को माहौल बिगड़ने का डर था, इसलिए नियमों को दरकिनार कर एक रात पहले ही तीनों क्रांतिकारियों को चुपचाप लाहौर सेंट्रल जेल में फांसी पर चढ़ा दिया गया। इन तीनों पर अंग्रेज अफसर सांडर्स की हत्या का आरोप था।

23 मार्च यानि देश को आजाद कराने का सपना दिखाने वाले तीन वीर सपूतों ने हंसते-हंसते अपने प्राणों की आहुति दे कर आजादी के हवन कुंड को पवित्र करते हुए फांसी के फंदे को चूम लिया था। यह दिन ना केवल भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव तीनों देशभक्त वीर सपूतों को भी भावविभोर होकर श्रद्धांजलि देने के लिए है, बल्कि उनके विचारों को याद करने और समझने के लिए भी है। जिन विचारों के कारण भारत की हर माता भगत सिंह जैसा पुत्र प्राप्त करने की प्रार्थना ईश्वर से करती थी। जिन विचारों का अनुसरण करके हिंदुस्तान की आजादी का सपना पूरा करने के लिए भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव बनकर स्वतंत्रता संग्राम में हजारों देशवासियों ने अंग्रेजों से लड़ने का फैसला लिया। अपने संक्षिप्त जीवन में वैचारिक क्रांति की मशाल जलाकर देशवासियों के हाथ में थमा कर जाने वाले उस क्रांतिकारी को याद करते हुए उसके विचारों को समझने की आवश्यकता है।

बड़े से बड़े साम्राज्य का पतन हो सकता है, आदमी को मारा जा सकता है, लेकिन विचार हमेशा जीवित रहते हैं। हमें आज आवश्यकता है भगत सिंह के विचारों की प्रासंगिकता को समझने की, आज जरूरत इस बात पर मंथन करने की है कि क्या भगत सिंह के विचार उतने ही प्रासंगिक हैं जितने कि उनके समय में थे।

भगत सिंह ने सांप्रदायिक और जातिवाद को बढ़ावा देने वाले लोगों का हमेशा विरोध किया था। वो सत्ता में ऐसा बदलाव चाहते थे जहां आम आदमी की आवाज़ सुनी जा सके। उन्होंने एक लेख ÷मैं नास्तिक क्यों हूँ÷ को लिखकर धर्म और ईश्वर के बारे में अपने विचार प्रकट किए जिसमें लिखा है कि ÷अधिक विश्वास और अधिक अंधविश्वास खतरनाक होता है यह मस्तिष्क को मूर्ख और मनुष्य को प्रतिक्रियावादी बना देता है। जो मनुष्य यथार्थवादी होने का दावा करता है उसे समस्त प्राचीन विश्वासों को चुनौती देनी होगी, यदि वो तर्क का प्रहार न सहन कर सके तो टुकड़े टुकड़े होकर गिर पड़ेंगे। तब उस व्यक्ति का पहला काम होगा तमाम पुराने विश्वासों को धराशायी करके नए दर्शन की स्थापना के लिए जगह साफ करना। इसके बाद सही कार्य शुरू होगा जिसमें पुनः निर्माण के लिए पुराने विश्वासों की कुछ बातों का प्रयोग किया जा सकता है। भगत सिंह चाहते तो माफी मांग कर फांसी की सजा से बच सकते थे, लेकिन मातृभूमि के सच्चे सपूत को झुकना पसंद नहीं था। इसलिए महज 30 वर्ष की उम्र में ही इस वीर सपूत ने हंसते हंसते फांसी के फंदे को चूम लिया था। आज हमारे देश में पूंजीवादी शक्तियों का बोलबाला है। जिसकी वजह से अमीर गरीब के बीच की खाई चौड़ी होती जा रही है। देश का आम नागरिक सरकार की तथाकथित उदारीकरण नीतियों के कारण आजादी के बाद से आज तक भ्रम की स्थिति में है। देश का होनहार युवक बहुराष्ट्रीय कंपनियों का टेक्नो-कुली बनकर रह गया है। इन कंपनियों का भ्रमजाल ऐसा बना हुआ है कि इनकी कंपनी में कार्य करने वाले रोजगारियों का पैसा भी घूम फिर कर इन्हीं की जेबों में वापस आ जाता है। भगत सिंह ने एक लेख ÷लेटर टू यंग पॉलिटिकल वर्कर्स÷ में युवाओं को संबोधित करते हुए आधुनिक वैज्ञानिक समाजवाद की बात कही, जिसका सीधा-सा उद्देश्य साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद से आजादी से था। भगत सिंह आज भी अपने विचारों के माध्यम से जीवित हैं, उनके विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने उस समय थे।

भारतीय शास्त्रों में कहा गया है कि जहां नारी की पूजा होती है वहां देवता वास करते हैं। भारतीय संस्कृति में नारी का स्थान काफी ऊंचा है। वैदिक युग में समाज में नारी की भूमिका बेहद अहम थी। लेकिन कालांतर में पुरुषों की वर्चस्ववादी सोच ने महिलाओं को हाशिए पर लाकर खड़ा कर दिया। महिलाओं को अबला समझा जाने लगा। धीरे-धीरे महिलाएं अपने सम्मान के लिए आगे बढ़ने लगी और हाल के दिनों में भारत समाज के विभिन्न क्षेत्रों में बड़ी उपलब्धि हासिल की। चाहे वो शिक्षा का मामला हो या खेलकूद का, हर क्षेत्र में महिलाएं आगे बढ़ रही हैं। इसके बावजूद बालिकाओं की संख्या कम होने, बाल विवाह, दहेज, महिलाओं के खिलाफ हिंसा, अनेक स्तरों पर शोषण और भेदभाव जैसी बुराइयां मौजूद हैं। इन बुराइयों के खिलाफ एक जंग की जरूरत है।

आठ मार्च को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाने का सबसे बड़ा उद्देश्य महिलाओं और पुरुषों में समानता बनाने के लिए जागरूकता लाना है। वैसे तो महिलाओं के सम्मान के लिए किसी खास दिन की जरूरत नहीं होती लेकिन यह एक ऐसा दिन है जब महिलाएं अपनी आजादी का जश्न खुलकर मनाती हैं। यह दिन महिलाओं के प्रति सम्मान और प्यार प्रकट करने का है और इस दिन का महत्व महिलाओं को आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक स्तर पर पहचान दिलाना और महिलाओं की उपलब्धियों को मनाना है। इस खास मौके पर हम आपको उन महिलाओं के बारे में बताने जा रहे हैं, जिन्होंने अपने दम पर देश ही नहीं दुनियाभर में एक अलग मुकाम हासिल किया है।

महिला दिवस के अवसर पर हम महिला शक्ति की बात करेंगे जिन्होंने हर क्षेत्र में आगे बढ़कर खुद को साबित किया है और देश का मान देश व दुनिया में बढ़ाया है अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर सभी सम्मानीय महिलाओं को हार्दिक बधाई यह दिन महिलाओं के साहस और उनकी कामयाबी को सलाम करने का दिन है। अब समय काफी बदल गया है, पहले पर्दे के पीछे रह कर महिलाएं काम करती थी लेकिन अब महिलाएं हर क्षेत्र में पुरुषों के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रही हैं। कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है जहां महिलाओं ने अपनी पहचान न बनाई हो। राजनीति की बात करें तो देश के कई बड़े पदों पर आज महिलाएं आसीन है और उन्होंने अपनी एक अलग छवि लोगों के दिलों में छोड़ी है। आइए आपको बताते हैं ऐसी ही पॉवरफुल वुमन लीडर्स के बारे में जो कई बड़ी जिम्मेदारियां निभा रही हैं।

इकसवीं शताब्दी में, महिलाओं ने न सिर्फ धन अर्जन करने में अपनी भूमिका दर्ज कराई है बलकि भावी संगठनों का निर्माण करते हुए अभिकर्ताओं का स्वरूप भी परिवर्तित किया है। हाल के वर्षों में, महिलाओं ने जीवन के हर क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति की है।

विगत तीन दशकों में, महिलाओं ने कॉरपोरेट जगत में महत्वपूर्ण सफलता हासिल की है, सामाजिक नैतिकता की बाध्यताओं को पार करते हुए घर तथा कार्यस्थल पर स्वयं को सफल उद्यमी एवं कार्यकारी व्यावसायिकों के रूप में साबित किया है। भारतीय महिला उद्यमी वर्ग ने नए उद्यमों को आरंभ करने एवं उनका सफलतापूर्वक संचालन करने में बेहतर कार्य-निष्पादन के कई उदाहरण प्रस्तुत किए हैं।

आज नारी ने भूमिका के बदलाव को एक चुनौती के रूप में स्वीकार किया है अपनी इच्छा शक्ति के बल पर सफल भी हुई लेकिन आज वो एक अनोखी दुविधा से गुजर रही है। उसे अपने प्रति पुरुष अथवा समाज का ही नहीं बल्कि उसका खुद का भी नजरिया बदलने का

हिला दिवस के अवसर पर हम महिला शक्ति की बात करेंगे जिन्होंने हर क्षेत्र में आगे बढ़कर खुद को साबित किया है और देश का मान देश व दुनिया में बढ़ाया है अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर सभी सम्मानीय महिलाओं को हार्दिक बधाई यह दिन महिलाओं के साहस और उनकी कामयाबी को सलाम करने का दिन है।

भारतीय शास्त्रों में कहा गया है कि जहां नारी की पूजा होती है वहां देवता वास करते हैं। भारतीय संस्कृति में नारी का स्थान काफी ऊंचा है। वैदिक युग में समाज में नारी की भूमिका बेहद अहम थी। लेकिन कालांतर में पुरुषों की वर्चस्ववादी सोच ने महिलाओं को हाशिए पर लाकर खड़ा कर दिया। महिलाओं को अबला

समझा जाने लगा। धीरे-धीरे महिलाएं अपने सम्मान के लिए आगे बढ़ने लगी और हाल के दिनों में भारत समाज के विभिन्न क्षेत्रों में बड़ी उपलब्धि हासिल की।

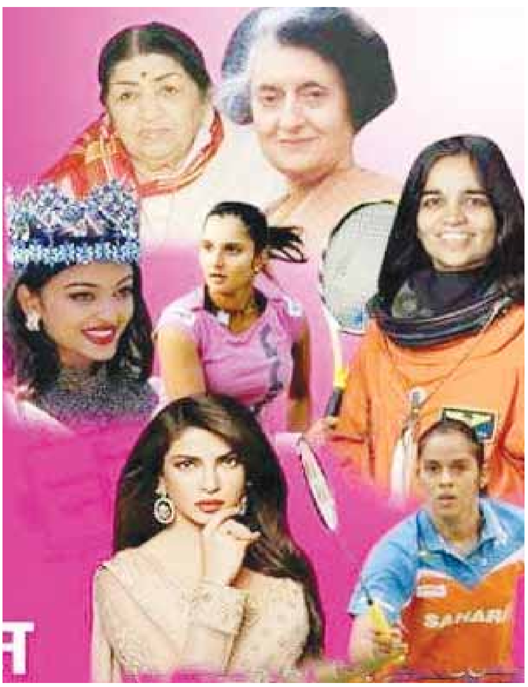

चाहे वो शिक्षा का मामला हो या खेलकूद का, हर क्षेत्र में महिलाएं आगे बढ़ रही हैं। इसके बावजूद बालिकाओं की संख्या कम होने, बाल विवाह, दहेज, महिलाओं के खिलाफ हिंसा, अनेक स्तरों पर शोषण और भेदभाव जैसी बुराइयां मौजूद हैं। इन बुराइयों के खिलाफ एक जंग की जरूरत है। पहले नारी का स्थान घर की चारदीवारी तक सीमित था लेकिन आज वो हर सीमा को चुनौती दे रही है। चाहे राजनीति का क्षेत्र हो चाहे सामाजिक, चाहे हमारी सेनाएँ हों चाहे कारपोरेट जगत, आज की नारी हर क्षेत्र में सफलता पूर्वक दस्तक देते हुए देश की तरक्की में अपना योगदान दे रही है।

इकसवीं शताब्दी में, महिलाओं ने न सिर्फ धन अर्जन करने में अपनी भूमिका दर्ज कराई है बलकि भावी संगठनों का निर्माण करते हुए अभिकर्ताओं का स्वरूप भी परिवर्तित किया है। हाल के वर्षों में, महिलाओं ने जीवन के हर क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति की है।

विगत तीन दशकों में, महिलाओं ने कॉरपोरेट जगत में महत्वपूर्ण सफलता हासिल की है, सामाजिक नैतिकता की बाध्यताओं को पार करते हुए घर तथा कार्यस्थल पर स्वयं को सफल उद्यमी एवं कार्यकारी व्यावसायिकों के रूप में साबित किया है। भारतीय महिला उद्यमी वर्ग ने नए उद्यमों को आरंभ करने एवं उनका सफलतापूर्वक संचालन करने में बेहतर कार्य-निष्पादन के कई उदाहरण प्रस्तुत किए हैं।

नारी आज के बदलते परिवेश में जिस तरह पुरुष वर्ग के साथ कंधे से कंधा मिलाकर प्रगति की ओर अग्रसर हो रही है, वह समाज के लिए एक गर्व और सराहना की बात है. आज राजनीति, टेक्नोलोजी, सुरक्षा समेत हर क्षेत्र में जहां जहां महिलाओं ने हाथ आजमाया उसे कामयाबी ही मिली. अब तो ऐसी कोई जगह नहीं है, जहां आज की नारी अपनी उपस्थिति दर्ज न करा रही हो. और इतना सब होने के बाद भी वह एक गृहलक्ष्मी के रूप में भी अपना स्थान बनाए हुए है. नारी, स्त्री, महिला वनिता, चाहे जिस नाम से पुकारो नारी तो एक ही है। ईश्वर की वो रचना जिसे उसने सृजन की शक्ति दी है, ईश्वर की वो कल्पना जिसमें प्रेम त्याग सहनशीलता सेवा और करुणा जैसे भावों से भरा हृदय है। इंतजार है।

महिला दिवस पर नारी शक्ति सम्मानित

रेडियो जॉकी के लिए बढ़ रहे मौके, बनाएं इसमें करियर

हर छोटे-बड़े शहर में रेडियो चैनल तेजी से अपने पांव पसार रहे हैं। सामुदायिक रेडियो चैनल भी तेजी से अपनी उपस्थिति दर्ज करवा रहे हैं। पहले जहां केवल प्रिंट मीडिया का वर्चस्व था, वहीं अब इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, वेब मीडिया, सोशल मीडिया, यूट्यूब जैसे प्लेटफॉर्म और एफएम

चैनल्स अपनी तरफ खूब आकर्षित कर रहे हैं।विभिन्न शहरों में एफएम चैनल्स खुलने से आरजे के लिए संभावनाएं बढ़ गई हैं... हर छोटे-बड़े शहर में रेडियो चैनल तेजी से अपने पांव पसार रहे हैं। सामुदायिक रेडियो चैनल भी तेजी से अपनी उपस्थिति दर्ज करवा रहे हैं। इसके अलावा, आजकल सोशल मीडिया तो मुख्य मीडिया को भी पीछे छोड़ते हुए अपनी दमदार उपस्थिति को दर्ज करवा रहा है। ऐसे में प्रशिक्षित पत्रकारों की तुलना में आम आदमी भी यहां बढ़-चढ़कर देश दुनिया की खबरें और वीडियो शेयर कर रहा है या खुद तैयार कर सोशल मीडिया पर अपलोड कर रहा है। जाहिर है अब यह क्षेत्र भी व्यावसायिक रूप ले चुका है और यहां भी प्रशिक्षित लोगों की जरूरत बढ़ने लगी है, क्योंकि जब आप अपनी खबर को प्रस्तुत करेंगे तो उसका तौर-तरीका पता होना जरूरी है और स्थानीय या राष्टीय रेडियो चैनल्स पर काम करेंगे तो उसकी भी कार्य प्रणाली का ज्ञान होना जरूरी है।

करियर संभावनाएं

कोर्स के तुरंत बाद किसी बड़े रेडियो स्टेशन, टीवी पर काम की उम्मीद नहीं लगानी चाहिए, बल्कि छोटे रेडियो स्टेशन, टीवी प्रोग्राम्स में खुद को शामिल कराने का प्रयास करना चाहिए, जिससे रेडियो और टीवी से जुड़ी प्रैक्टिकल स्किल सीखने को मिल सके। आपको ऐसे चैनल्स पर अपने रेज्यूमे भेज कर ऑडिशन का समय लेना चाहिए। ऑल इंडिया रेडियो में भी कुछ-कुछ अंतराल पर ऑडिशन होते रहते हैं।

शैक्षिक योग्यता

टीवी न्यूज एंकरिंग या रेडियो जॉकी बनने के लिए 12वीं के बाद जहां सर्टिफिकेट, डिप्लोमा, शॉर्ट टर्म या वीकेंड कोर्स किए जा सकते हैं, वहीं ग्रेजुएशन के बाद पीजी डिप्लोमा कोर्सेज के लिए आवेदन किया जा सकता है। इस क्षेत्र में आने के लिए डिप्लोमा, डिग्री के अलावा एक और योग्यता बेहद जरूरी है और वह है आपकी भाषा। सही उच्चारण, शब्द भंडार और भाषा के व्याकरण पर पूरी पकड़ होनी बहुत जरूरी है। इसके अलावा न्यूज एंकरिंग के लिए आपका व्यक्तित्व आकर्षक होना महत्वपूर्ण शर्त है। साथ में आपकी अभिव्यक्ति भी दमदार होनी चाहिए।

चयन का तरीका

ऑडिशन के वक्त आप को 10-15 मिनट का समय दिया जा सकता है। कहा जा सकता है कि मान लो आज बॉलीवुड के शहंशाह अमिताभ बच्चन का जन्मदिन है। आपको प्रोग्राम को होस्ट करते हुए गाने भी प्ले करने हैं या फिर आपको एक स्क्रिप्ट लिखने का मौका दिया जाए और फिर आपसे कहा जाए कि आप इसे बोलें। याद रहे लिसनर को यह नहीं लगना चाहिए कि आप स्क्रिप्ट पढ़कर ऑडिशन दे रहे हैं, भले ही आपके हाथ में स्क्रिप्ट हो।

स्किल्स-

एक आरजे में बेहतर कम्यूनिकेशन स्किल के साथ ही प्रेजेंटेशन स्किल का होना भी जरूरी है। एक आरजे के रूप में आपकी आवाज प्रभावशाली होना चाहिए आपके उच्चारण सही और आवाज पर नियंत्रण होना जरूरी है। आपका स्टाइल ओरिजिनल होना चाहिए ताकि लोग आपको पसंद कर सके। आपको मिमिक्री के अलावा अपने शहर की खास लैंग्वेज भी आना जरूरी है ताकि आप अपने शो को और भी अधिक मजेदार बना सके। आपको म्यूजिक की अच्छी समझ होना जरूरी है। एक ऋ्ज को अपने शहर की जानकारी के साथ-साथ देश और विदेश में होने वाली गतिविधियों की जानकारी होना जरूरी है।

रेडियो जॉकी का काम-

एक रेडियो जॉकी अपनी आवाज की वजह से पहचाना जाता है, यहां उसे हर रोज शो प्रजेंट करना होता है। लेकिन इसके अलावा भी कई काम होते है जो एक रेडियो जॉकी को करने पड़ते है जैसे पटकथा लेखन, म्यूजिक प्रोग्रामिंग और रेडियो एडवरटाइजिंग बनाने का काम करना होता है। इसके अलावा शहर में आई हुई सेलेब्रिटी का इंटरव्यू लेना, शहर के किसी बड़े अधिकारी से किसी मुद्दे पर बात करना

आदि।

योग्यता-

एक रेडियो जॉकी बनने के लिए ये जरूरी नही है कि आपके पास कोई प्रोफेशनल डिग्री हो। लेकिन फिर भी आप चाहे तो 12वीं पास करने के बाद इसके किसी डिग्री या डिप्लोमा कोर्स में एडमिशन ले सकते है ताकि अपने गुणों को और अच्छे से निखारा जा सके।

संभावनाएं-

रेडियो इंडस्ट्री एक ऐसी फिल्ड है जहां संभावनाओं की कमी नही है, बस आपमें टैलेंट होना जरूरी है। आप कई रेडियो चैनल में जॉब के लिए अप्लाई कर सकते है, आकाशवाणी से लेकर कई प्राइवेट एफएम चैनल है जो आपको जॉब दे सकते है। इसके अलावा इस फिल्ड में एक्सपीरियंस हो जाने के बाद आप वॉइस ओवर कमर्शियल, लाइव शो होस्ट, टेलीविजन शो और फिल्मों में भी ट्राई कर सकते है।

बद्रीनाथधाम में मौजूद है भगवान विष्णु की स्वयंभू मूर्ति, कैसे पड़ा तीर्थस्थल का यह नाम

चार धामों में सर्वश्रेष्ठ बद्रीनाथ धाम

बद्रीनाथ मंदिर उत्तराखंड के चमोली जनपद में अलकनन्दा नदी के तट पर स्थित है। कहा जाता है कि इस मंदिर का निर्माण 7वीं-9वीं सदी में हुआ था। मंदिर के आस-पास बसे नगर को बद्रीनाथ ही कहा जाता है। यहां पर भगवान बद्रीनारायण की प्रतिमा स्थापित है। हिंदू धर्म में चार धामों - बद्रीनाथ, जगन्नाथ, रामेश्वरम और द्वारिका का विशेष महत्व है। इन चारों धामों में बद्रीनाथ धाम को सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। आज के इस लेख में हम आपको बद्रीनाथ धाम के बारे में बताने जा रहे हैं - बद्रीनाथ मंदिर उत्तराखंड के चमोली जनपद में अलकनन्दा नदी के तट पर स्थित है। कहा जाता है कि इस मंदिर का निर्माण 7वीं-9वीं सदी में हुआ था। मंदिर के आस-पास बसे नगर को बद्रीनाथ ही कहा जाता है। यहां पर भगवान बद्रीनारायण की प्रतिमा स्थापित है। बद्रीनारायण, भगवान विष्णु के ही एक रूप हैं। बद्रीनारायण की यह मूर्ति 3.3 फीट लंबी शालिग्राम से निर्मित है। कहा जाता है कि इस प्रतिमा को आदि शंकराचार्य ने 8वीं शताब्दी में समीपस्थ नारद कुण्ड से निकालकर स्थापित किया था। इस मूर्ति को विष्णु भगवान की 8 स्वयंभू प्रतिमाओं में से एक माना जाता है। बद्रीनाथ को अलग-अलग कालों में अलग-अलग नामों से जाना गया है। स्कन्दपुराण में बद्री क्षेत्र को मुक्तिप्रदा कहा गया है। ऐसे में यह स्पष्ट है कि सत युग में यही इस क्षेत्र का नाम था। त्रेता युग में भगवान नारायण के इस क्षेत्र को योग सिद्ध कहा गया। द्वापर युग में भगवान के प्रत्यक्ष दर्शन के कारण इसे मणिभद्र आश्रम या विशाला तीर्थ कहा गया है। वहीं, कलियुग में इसे बद्रिकाश्रम अथवा बद्रीनाथ कहा जाता है।

ऐसे मिला बद्रीनाथ नाम

एक पौराणिक कथा के अनुसार, भगवान विष्णु ने इस स्थान पर कठोर तप किया था। अपने गहन ध्यान के दौरान, वह मौसम की गंभीर स्थितियों से अनजान थे। उन्हें सूरज की चिलचिलाती गर्मी, धूप, बारिश और हिम से बचाने के लिए, उनकी पत्नी देवी लक्ष्मी ने बद्री के पेड़ रूप धारण किया और इस बात से भगवान विष्णु उनकी भक्ति से प्रसन्न हुए और इसलिए उन्होंने इस स्थान का नाम बद्रीनाथ रखा। बद्रीनाथ धाम धर्म के दो पुत्रों, नर और नारायण की कहानी से संबंधित है, जिन्होंने धर्मपत्नी हिमालय के बीच अपने धार्मिक आधार को स्थापित करने और अपने धार्मिक आधार का विस्तार करने की इच्छा की थी। किंवदंतियों के अनुसार, अपने धर्मोपदेश के लिए एक उपयुक्त स्थान खोजने के लिए वे पंच बद्री के चार स्थलों - ध्यान बद्री, योग बद्री, ब्रिधा बद्री और भावेश बद्री की खोज के लिए गए थे। अंत में वे एक जगह पर आए जो अलकनंदा नदी के पीछे दो आकर्षक ठंड और गर्म झरनों के साथ धन्य था। इस जगह को खोजने के लिए वे बेहद खुश थे और इस तरह उन्होंने इस स्थान का नाम बद्री विशाल रखा, यही से बद्रीनाथ अस्तित्व में आया।

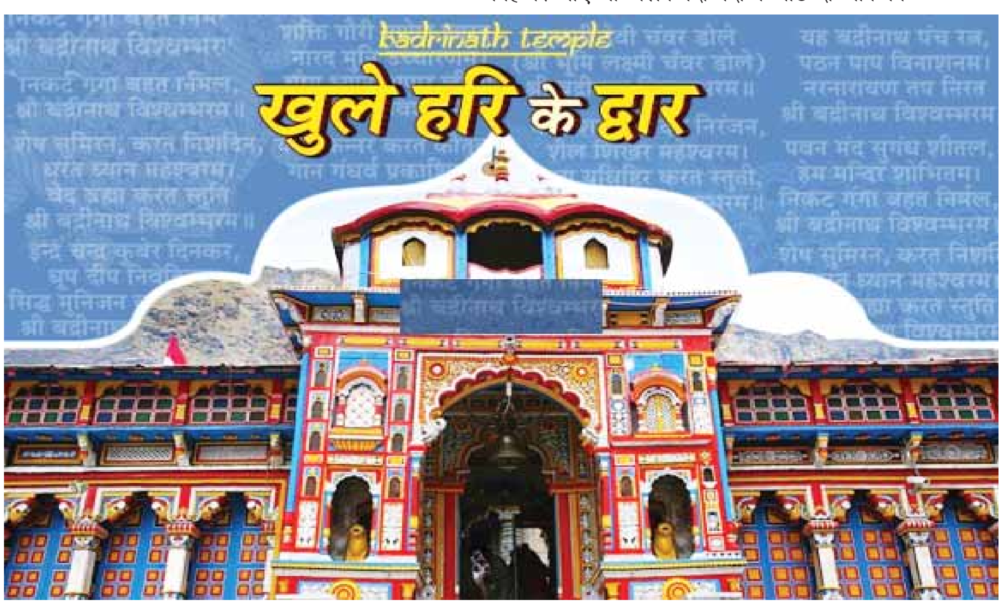

हारे का सहारा खाटू श्याम महाराज

भगवान कृष्ण के अवतार माने जाने वाले खाटू श्याम महाराज की एक विशेष मान्यता है।राजस्थान के सीकर जिले के खाटू ग्राम में स्थित इनका मंदिर सिर्फ भारत देश में ही नहीं बल्कि विदेशो में भी काफी प्रसिद्ध है।इस प्रसिद्ध मंदिर पर श्रद्धालुओं का तांता लगा रहता है।हर साल होली के शुभ अवसर पर खाटू श्याम जी का मेला लगता है।इस मेले में देश-विदेश से कई भक्तजन उनके दर्शन के लिए यहां आते हैं।खाटू श्याम बाबा के मंदिर को लेकर कई महाभारत काल की कई पौराणिक कथाएं प्रचलित हैं।

महाभारत काल में महाराज भीम के पौत्र एवं घटोत्कच के पुत्र बर्बरीक के रूप में खाटू श्याम बाबा ने अवतार लिया. बर्बरीक बचपन से ही अत्यधिक वीर एवं बलशाली योद्धा थे. बर्बरीक के इसी बल कौशल को देखकर अग्नि देव ने उन्हें एक विशिष्ट धनुष दिया एवं भगवान् शिव ने उन्हें वरदान स्वरुप तीन बाण दिए. इस वरदान के कारण बर्बरीक तीन बाण धारी कहे जाने लगे. महाभारत के भयावह युद्ध को देखकर बर्बरीक ने युद्ध का साक्षी बनने की इच्छा प्रकट की. वह अपनी मां से युद्ध में जाने की अनुमति ले तीनों बाण लेकर युद्ध की ओर निकल पड़े.

जब बर्बरीक युद्ध में जा रहे थे तभी भगवान श्री कृष्ण ने उनकी परीक्षा लेने के लिए उनसे कहा कि केवल तीन तीर से कोई कभी युद्ध जीत नहीं सकता. तब बर्बरीक ने तीनों तीरों का महत्व बताते हुए कहा कि उनका पहला तीर निश्चित स्थानों पर निशान बनाएगा एवं दूसरा व तीसरा तीर उन स्थानों को क्रमशः सुरक्षित एवं तबाह कर सकतें हैं. बर्बरीक के बाणों के ये महत्व जानकर श्रीकृष्ण को इस बात का आभास हो गया कि अगर वो कौरवों की तरफ से युद्ध लड़ते हैं तो ऐसे में पांडवों का जीतना मुश्किल हो जाता इसलिए कृष्ण ने ब्राह्मण का रूप धारण कर दान स्वरुप बर्बरीक से उनका सिर मांगा. उनकी इस विचित्र मांग के कारण बर्बरीक को आभास हुआ कि वो कोई आम साधु नही हैं और उन्होंने कृष्ण से उनके असली रूप में आने को कहा, तब श्रीकृष्ण उनके

सामने प्रकट हुए और उन्होंने बर्बरीक को उस युद्ध का सबसे वीर क्षत्रिय व योद्धा बताते हुए उनसे कहा कि युद्ध में सबसे वीर व क्षत्रिय योद्धा को सर्वप्रथम बलि देना अति आवश्यक है. अतः उनके ऐसे वचन सुनकर बर्बरीक ने अपना सिर काटकर श्री कृष्ण को दानस्वरूप दे दिया.बर्बरीक के इस दान को देखकर श्रीकृष्ण प्रसन्न हो गए और उन्होंने बर्बरीक को वरदान दिया कि उन्हें सम्पूर्ण संसार में श्री कृष्ण के नाम श्याम रूप में जाना जाएगा, खाटू श्याम रूप में जाना जाएगा ।

खाटू श्याम मंदिर की स्थापना-

भगवान श्रीकृष्ण ने युद्ध के बाद बर्बरीक के सिर को रूपवती नदी में प्रवाहित कर दिया था।जिसके बाद कलयुग में एक खांटू गाव के राजा के सपने में आकर उनको इस बात की जानकारी दी जिसके बाद फाल्गुन मास में खाटू श्याम मंदिर की स्थापना की गई। शुक्ल मास के 11 वे दिन उस मंदिर में खाटू श्याम बाबा को विराजमान किया गया। इस मंदिर की मान्यता देश-विदेशों तक है , ऐसा माना जाता है कि खाटू श्याम जी के रूप में श्रीकृष्ण भगवान अपने सभी भक्तों की मनोकामनाएं पूर्ण करते हैं।

माता की आराधना का पर्व
चैत्र नवरात्रि

नवरात्र साल में मुख्यतः दो बार आते हैं, आश्विन मास में आने वाले नवरात्रों को शारदीय एवं दुर्गा नवरात्र तथा चैत्र मास में आने वाले नवरात्र वासंतिक, राम एवं गौरी नवरात्र कहलाते हैं। नवरात्र में प्रतिदिन देवी के विभिन्न रूपों का पूजन और उपाय करके माता को प्रसन्न किया जाता है। नवरात्र में पहले दिन से लेकर अंतिम दिन तक मां के किन रूपों की पूजा की जाती है इसके बारे में हम आपको यहां बता रहे हैं

शैलपुत्री

प्रथम नवरात्र में मां दुर्गा की शैलपुत्री के रूप में पूजा की जाती है। पर्वतराज हिमालय की पुत्री शैलपुत्री की पूजा करने से मूलाधार चक्र जागृत हो जाता है और साधकों को सभी प्रकार की सिद्धियां स्वतः ही प्राप्त हो जाती हैं।

ब्रह्मचारिणी

दूसरे नवरात्र में मां के ब्रह्मचारिणी एवं तपश्चारिणी रूप को पूजा जाता है। जो साधक मां के इस रूप की पूजा करते हैं उन्हें तप, त्याग, वैराग्य, संयम और सदाचार की प्राप्ति होती है और जीवन में वे जिस बात का संकल्प कर लेते हैं उसे पूरा करके ही रहते हैं।

चन्द्रघंटा

मां के इस रूप में मस्तक पर घंटे के आकार का आधा चन्द्र बना होने के कारण इनका नाम चन्द्रघंटा पड़ा तथा तीसरे नवरात्र में मां के इसी रूप की पूजा की जाती है तथा मां की कृपा से साधक को संसार के सभी कष्टों से छुटकारा मिल जाता है।

कूष्मांडा

अपने उदर से ब्रह्मंड को उत्पन्न करने वाली मां कूष्मांडा की पूजा चौथे नवरात्र में करने का विधान है। इनकी आराधना करने वाले भक्तों के सभी प्रकार के रोग एवं कष्ट मिट जाते हैं तथा साधक को मां की भक्ति के साथ ही आयु, यश और बल की प्राप्ति भी सहज ही हो जाती है।

स्कंदमाता

पंचम नवरात्र में आदिशक्ति मां दुर्गा की स्कंदमाता के रूप में पूजा होती है। कुमार कार्तिकेय की माता होने के कारण इनका नाम स्कंदमाता पड़ा। इनकी पूजा करने वाले साधक संसार के सभी सुखों को भोगते हुए अंत में मोक्ष पद को प्राप्त होते हैं। उनके जीवन में किसी भी प्रकार की वस्तु का कोई अभाव कभी नहीं रहता।

कात्यायनी

महर्षि कात्यायन की तपस्या से प्रसन्न होकर आदिशक्ति मां दुर्गा ने उनके घर पुत्री के रूप में जन्म लिया और उनका कात्यायनी नाम पड़ा। छठे नवरात्र में मां के इसी रूप की पूजा की जाती है। मां की कृपा से साधक को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष आदि चारों फलों की जहां प्राप्ति होती है वहीं वह आलौकिक तेज से अलंकृत होकर हर प्रकार के भय, शोक एवं संतापों से मुक्त होकर खुशहाल जीवन व्यतीत करता है।

कालरात्रि

सभी राक्षसों के लिए कालरूप बनकर आई मां दुर्गा के इस रूप की पूजा सातवें नवरात्र में की जाती है। मां के स्मरण मात्र से ही सभी प्रकार के भूत, पिशाच एवं भय समाप्त हो जाते हैं।

महागौरी

आदिशक्ति मां दुर्गा के महागौरी रूप की पूजा आठवें नवरात्र में की जाती है। मां ने काली रूप में आने के पश्चात घोर तपस्या की और पुनः गौर वर्ण पाया और महागौरी कहलाई। मां की कृपा से साधक के सभी कष्ट मिट जाते हैं और उसे आर्थिक लाभ भी मिलता है।

सिद्धिदात्री

नौवें नवरात्र में मां के सिद्धिदात्री रूप की पूजा एवं आराधना की जाती है, जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है मां का यह रूप साधक को सभी प्रकार की ऋद्धियां एवं सिद्धियां प्रदान करने वाला है।

नवसंवत्सरः पुण्य दिवस हिंदू नव वर्ष

राष्ट्रीय स्वाभिमान और सांस्कृतिक धरोहर को बचाने वाला पुण्य दिवस हिंदू नव वर्ष चैत्र मास की प्रतिपदा के दिन मनाया जाता है। इस दिन से चैत्र नवरात्रि की शुरूआत होती है। महाराष्ट्र में इस दिन को गुड़ी पड़वा कहा जाता है और दक्षिण भारत में इसे उगादि कहा जाता है। विक्रम संवत को नव संवत्सर भी कहा जाता है। संवत्सर 5 प्रकार का होता है जिसमें सौर, चंद्र, नक्षत्र, सावन और अधिमास आते हैं। हालांकि कई विद्वानों का मत है कि भारत में विक्रमी संवत से भी पहले लगभग 700 ई.पू. हिंदुओं का प्राचीन सप्तर्षि संवत अस्तित्व में आ चुका था। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नव वर्ष प्रारंभ होता है। इसी दिन सूर्योदय के साथ सृष्टि का प्रारंभ परमात्मा ने किया था। अर्थात् इस दिन सृष्टि प्रारंभ हुई थी तब से यह गणना चली आ रही है। ● **गूंज न्यूज नेटवर्क**

चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा वर्ष प्रतिपदा कहलाती है। इस दिन से ही नया वर्ष प्रारंभ होता है। इसी दिन ब्रह्माजी ने सृष्टि का निर्माण किया था। इसमें मुख्यतया ब्रह्माजी और उनकी निर्माण की हुई सृष्टि के मुख्य-मुख्य देवी-देवताओं, यक्ष-राक्षस, गन्धर्वों, ऋषि-मुनियों, मनुष्यों, नदियों, पर्वतों, पशु-पक्षियों और कीटाणुओं का ही नहीं, रोगों और उनके उपचारों तक का पूजन किया जाता है। इस दिन से नया संवत्सर शुरू होता है अतः इस तिथि को नव-संवत्सर भी कहते हैं। संवत्सर अर्थात बारह महीने का कालविशेष। संवत्सर उसे कहते हैं, जिसमें सभी महीने पूर्णतः निवास करते हों। भारतीय संवत्सर वैसे तो पाँच प्रकार के होते हैं। इनमें से मुख्यतः तीन हैं- सावन, चान्द्र तथा सौर ।सावन- यह 360 दिनों का होता है। संवत्सर का मोटा सा हिसाब इसी से लगाया जाता है। इसमें एक माह की अवधि पूरे तीस दिन की होती है। चैत्र ही एक ऐसा माह है जिसमें वृक्ष तथा लताएँ पल्लवित व पुष्पित होती हैं। इसी मास में उन्हें वास्तविक मधुरस पर्याप्त मात्रा में मिलता है। वैशाख मास, जिसे माधव कहा गया है, में मधुरस का परिणाम मात्र मिलता है।

यह नववर्ष किसी जाति, वर्ग, देश, संप्रदाय का नहीं है अपितु यह मानव मात्र का नववर्ष है। यह पर्व विशुद्ध रूप से भौगोलिक पर्व है क्योंकि प्राकृतिक दृष्टि से भी वृक्ष वनस्पति फूल पत्तियों में भी नयापन दिखाई देता है। वृक्षों में नई-नई कोपलें आती हैं। वसंत ऋतु का वर्चस्व चारों ओर दिखाई देता है। मनुष्य के शरीर में नया रक्त बनता है। हर जगह परिवर्तन एवं नयापन दिखाई पडता है। रवि की नई फसल घर में आने से कृषक के साथ संपूर्ण समाज प्रसन्नचित होता है। वैश्य व्यापारी वर्ग का भी इकोनॉमिक दृष्टि से मार्च महीना इण्डिंग (समापन) माना जाता है। इससे यह पता चलता है कि जनवरी साल का पहला महीना नहीं है पहला महीना तो चैत्र है जो लगभग मार्च-अप्रैल में पड़ता है। 1 जनवरी में नया जैसा कुछ नहीं होता किंतु अभी चैत्र माह में देखिए नई ऋतु, नई फसल, नई पवन, नई खुशबू, नई चेतना, नया रक्त, नई उमंग, नया खाता, नया संवत्सर, नया माह, नया दिन हर जगह नवीनता है। यह नवीनता हमें नई उर्जा प्रदान करती है।

नव वर्ष को शास्त्रीय भाषा में नवसंवत्सर (संवत्सरेष्टि) कहते हैं। इस समय सूर्य मेष राशि से गुजरता है इसलिए इसे मेष संक्रांति भी कहते हैं। प्राचीन काल में नव-वर्ष को वर्ष के सबसे बड़े उत्सव के रूप में मनाते थे। यह रीत आजकल भी दिखाई देती है। जैसे महाराष्ट्र में गुडी पाडवा के रूप में मनाया जाता है तथा बंगाल में पइला पहला वैशाख और गुजरात आदि अनेक प्रांतों में इसके विभिन्न रूप हैं।

भारतवर्ष में इस समय देशी-विदेशी मूल के अनेक सम्वतों का प्रचलन है। किन्तु भारत के सांस्कृतिक इतिहास की दृष्टि से सर्वाधिक लोकप्रिय राष्ट्रीय सम्वत यदि कोई है तो वह विक्रम सम्वत ही है। आज से 2072 वर्ष यानी 57 ईसा पूर्व में भारतवर्ष के प्रतापी राजा विक्रमादित्य ने देशवासियों को शकों के अत्याचारी शासन से मुक्त किया था। उसी विजय की स्मृति में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा की तिथि से विक्रम सम्वत का भी आरम्भ हुआ था।

प्राचीनकाल में नया संवत चलाने से पहले विजयी राजा को अपने राज्य में रहने वाले सभी लोगों को ऋण-मुक्त करना आवश्यक होता था। राजा विक्रमादित्य ने भी इसी परम्परा का पालन करते हुए अपने राज्य में रहने वाले सभी नागरिकों का राज्यकोष से कर्ज़ चुकाया और उसके बाद चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से मालवगण के नाम से नया सम्वत चलाया। भारतीय कालगणना के अनुसार वसन्त ऋतु और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा की तिथि अति प्राचीनकाल से सृष्टि प्रक्रिया की भी पुण्य तिथि रही है। वसन्त ऋतु में आने वाले वासन्तिक नवरात्र का प्रारम्भ भी सदा इसी पुण्यतिथि से होता है। विक्रमादित्य ने भारत राष्ट्र की इन तमाम कालगणनापरक सांस्कृतिक परम्पराओं को ध्यान में रखते हुए ही चैत्र शुक्ल प्रतिपदा की तिथि से ही अपने नवसंवत्सर सम्वत को चलाने की परम्परा शुरू की थी और तभी से समूचा भारत राष्ट्र इस पुण्य तिथि का प्रतिवर्ष अभिवन्दन करता है।

दरअसल भारतीय परम्परा में चक्रवर्ती राजा विक्रमादित्य शौर्य, पराक्रम तथा प्रजाहितैषी कार्यों के लिए प्रसिद्ध माने जाते हैं। उन्होंने 95 शक राजाओं को पराजित करके भारत को विदेशी राजाओं की दासता से मुक्त किया था। राजा विक्रमादित्य के पास एक ऐसी शक्तिशाली विशाल सेना थी जिससे विदेशी आक्रमणकारी सदा भयभीत रहते थे। ज्ञान-विज्ञान, साहित्य, कला संस्कृति को विक्रमादित्य ने विशेष प्रोत्साहन दिया था। धन्वन्तरि जैसे महान वैद्य, वराहमिहिर जैसे महान ज्योतिषी और कालिदास जैसे महान साहित्यकार विक्रमादित्य की राज्यसभा के नवरत्नों में शोभा पाते थे।

मेडिकल फील्ड में बनाएं शानदार करियर

एक मेडिकल ट्रांसक्रिप्शनिस्ट शुरुआत में 25-30 हजार रुपये प्रति माह तक कमा लेता है। यदि वह इस कार्य में पारंगत हो जाता है तो वह इस सीमा से काफी आगे भी निकल सकता है। ट्रांसक्रिप्शन के लिए भुगतान दर प्रति लाइन तय होती है। संचार क्रांति के इस युग में टेलीकम्युनिकेशन क्षेत्र का विस्तार बड़ी तेजी से हो रहा है। टेलीकम्युनिकेशन और इंफॉर्मेशन टेक्नालॉजी के क्षेत्र में आई इस क्रांति से देश के भीतर और बाहर दोनों ही जगह रोजगार के कई अवसर पैदा हुए हैं। टेलीकॉम क्रांति ने व्यावसायिक जगत में भारत को एक अहम स्थान दिया है, जिसके परिणामस्वरूप उपलब्ध अवसरों की संख्या में इजाफा हुआ है। ऐसे ही अवसरों में से एक है मेडिकल ट्रांसक्रिप्शन।

एक बिजनेस पत्रिका के मुताबिक मेडिकल ट्रांसक्रिप्शन क्षेत्र में अवसरों की मांग सूचना तकनीक क्षेत्र से भी अधिक है। यह कहा जा सकता है कि इस क्षेत्र में जितना काम उपलब्ध है, कार्य करने वालों की तादाद उससे कम ही है। ऐसे में इस कार्य में संलग्न व्यक्तियों की मांग होनी ही है। तो क्यों न इस क्षेत्र में अपना व्यवसाय प्रारंभ किया जाए?

मेडिकल ट्रांसक्रिप्शन क्या है?

दरअसल अमेरिका में बीमा कंपनियां मरीजों के दिन-प्रतिदिन काम में आने वाली दवाओं में लगने वाले धन का रिअम्बरसमेंट (भुगतान) करती हैं। इसके लिए वे डॉक्टरों से मरीज के बारे में विस्तृत जानकारी मांगती हैं। इस जानकारी में मरीज का बैकग्राउंड, मरीज की बीमारी, मरीज को दी गई दवाओं का विवरण आदि सम्मिलति होता है। कानूनी तथा उपरोक्त कारणों से डॉक्टरों को मरीजों के बारे में यह समस्त जानकारी स्टोर रखनी पड़ती है और बीमा कंपनी को देनी होती है। डॉक्टर यह कार्य इस क्षेत्र में कार्यरत पेशेवरों से करवाते हैं। इसके लिए वे मरीज के बारे में डिक्टेशन रिकॉर्ड कर लेते हैं और इस रिकॉर्ड किए गए डिक्टेशन को पेशेवरों द्वारा सुन कर टैक्स्ट में परिवर्तित कर दिया जाता है। इस प्रकार डॉक्टरों द्वारा कानूनी कारणों से मरीजों का मेडिकल रिकॉर्ड रखा जाना मेडिकल ट्रांसक्रिप्शन कहलाता है।

संपूर्ण कार्य चक्र पर एक नजर

चूंकि अमेरिका और भारत में 12 घंटे का समय अंतराल है, अतः जब वहां पर लोग सो रहे होते हैं तब भारत में लोग काम कर रहे होते हैं। इसी कारण से मेडिकल ट्रांसक्रिप्शन का कार्य दिन में 24 घंटे चलता रहता है। इस प्रक्रिया में डॉक्टर वहीं की एक एजेंसी के टोल फ्री नंबर पर डिक्टेशन देता है। वह एजेंसी उस डिक्टेशन को अपने एफटीपी सर्वर पर डिजिटल फॉर्मेट में अपलोड़ कर देती है। यह समस्त प्रक्रिया अमेरिका में दिन के वक्त होती है। यह एजेंसी रात होने से पहले ही विभिन्न डॉक्टरों की पूरे दिन की डिक्टेशन को निर्दिष्ट एफटीपी सर्वर पर अपलोड कर देती है। जब वहां पर रात हो जाती है तो यहां भारत में सवेरा होता है। सवेरे मेडिकल ट्रांसक्रिप्शनिस्ट उस निर्दिष्ट एफटीपी सर्वर से डिजिटल फॉर्मेट में रखी डिक्टेशन को अपलोड कर लेता है। इस प्रकार वह डिक्टेशन भारत में पहुंच जाती है। भारत में काम करने वाले ट्रांसक्रिप्शनिस्ट दिन भर में उन डिक्टेशनों को टैक्स्ट फॉर्मेट में बदल देते हैं। यहां रात होने से पहले ही इन सभी डिक्टेशनों को टाइप करते हुए रिपोर्ट के रूप में तैयार कर लिया जाता है। तत्पश्चात् इन तैयार की गई रिपोर्टों को वापस एफटीपी सर्वर पर अपलोड कर दिया जाता है। जब अमेरिका में सवेरा होता है तो डॉक्टर उस रिपोर्ट को प्राप्त कर लेते हैं। इस प्रकार वहां पर डॉक्टरों को अगले दिन सवेरे ही चाही गई सभी रिपोर्ट मिल जाती है।

ट्रांसक्रिप्शनिस्ट का कार्य

ट्रांसक्रिप्शनिस्ट को साउंड फाइल को सुनते हुए उसे टाइप करना होता है। इसके लिए उन्हें अतिरिक्त तौर पर हैडफोन/इयरफोन और फुट पैडल की मदद लेनी होती है। हैडफोन के माध्यम से वे डिक्टेशन को सुनते हैं तथा फुट पैडल की मदद से वे इस डिक्टेशन की गति को नियंत्रित करते हैं। सामान्यतः यह टाइपिंग एमएस वर्ड में ही की जाती है। यह टाइपिंग लगभग 90 प्रतिशत तक सटीक होती है। इसके बाद क्वालिटी कंट्रोल के लिए इसे 2 क्वालिटी कंट्रोलरों द्वारा परखा जाता है और सटीकता को 98 से 100 प्रतिशत तक लाया जाता है। प्रथम स्तर पर की जाने वाली जांच किसी ऐसे पेशेवर से करायी जाती है जिसके पास कम से कम 1 साल का अनुभव हो। इसके पश्चात् द्वितीय स्तर पर कराई जाने वाली जांच किसी डॉक्टर या 3 साल का अनुभव रखने वाले पेशेवर से कराई जाती है।

योग्यता

वैसे इस कार्य को करने के लिए कानूनन कोई योग्यता निर्धारित नहीं की गई है, लेकिन फिर भी कोई भी ग्रेजुएट या नॉन ग्रेजुएट जिसकी अंग्रेजी भाषा पर अच्छी पकड़ हो, वह इस कार्य को कर सकता है। चूंकि इस कार्य में मेडिकल शब्दों को सुनते हुए उसे टैक्स्ट में परिवर्तित करना होता है, अतः यह समझा जाता है कि कार्य करने वाले व्यक्ति को पहले से ही मेडिकल शब्दों का ज्ञान है, वैसे यह जरूरी भी नहीं है। आप चाहे किसी भी क्षेत्र के हों, आप भी यह कार्य कर सकते हैं बशर्ते कि आप इसके लिए उचित प्रशिक्षण हासिल करें जिससे आपको मेडिकल शब्दों का ज्ञान हो जाएगा।

आय

एक मेडिकल ट्रांसक्रिप्शनिस्ट शुरुआत में 25-30 हजार रुपये प्रति माह तक कमा लेता है। यदि वह इस कार्य में पारंगत हो जाता है तो वह इस सीमा से काफी आगे भी निकल सकता है। ट्रांसक्रिप्शन के लिए भुगतान दर प्रति लाइन तय होती है। यहां एक लाइन में लगभग 65 केरेक्टर माने जाते हैं।

प्रशिक्षण

मेडिकल ट्रांसक्रिप्शन का कार्य शुरू करने से पहले इसकी ट्रेनिंग भी ली जा सकती है। ट्रेनिंग के दौरान आपको फिजिशियन और अन्य पेशेवरों द्वारा डिक्टेट किए गए भाषण को समझना सिखाया जाता है। यह ट्रेनिंग 6 माह से लेकर 8 माह तक की होती है। इस ट्रेनिंग में अभ्यर्थी को मेडिकल शब्दों के बारे में, अमेरिकन इंग्लिश और ग्रामर के बारे में, प्रूफ रीडिंग, अलग-अलग तरह से बोले गए शब्दों को समझना, अस्पष्ट शब्दों को वक्ता से दोबारा पूछा जाना, संदर्भ ग्रंथों (रेफरेंस मेटेरियल) की मदद लिया जाना और तैयार की गई रिपोर्ट की फॉर्मेटिंग आदि कार्य सिखाए जाते हैं। आज जगह-जगह इस प्रकार की ट्रेनिंग देने वाले इंस्टीट्यूट खुल गए हैं। ऐसे में प्रश्न यह उठता है कि बढ़िया ट्रेनिंग कहां से मिल सकती है। सो इसका जवाब यह है कि ट्रेनिंग सिर्फ उन्हीं संस्थानों से ली जानी चाहिए जो कि स्वयं यह कार्य कर रहे हों अथवा इस व्यवसाय में हों।

स्टाइलिश दिखें आसान आसान ब्यूटी टिप्सों को करें फॉलो

खूबसूरत और स्टाइलिश दिखना हर महिला की चाहत होती है. सुंदर दिखने के लिए महिलाऐं तरह-तरह के ब्यूटी और मेकअप प्रोडक्ट्स का इस्तेमाल करती हैं. मेकअप अगर सही से किया गया हो तो ये आपकी खूबसूरती में चार चाँद लग सकता है। जब भी ब्यूटी और मेकअप की बात होती है तो अक्सर हमारे दिमाग में बॉलीवुड एक्ट्रेसेस का ख्याल लगता है। हम अक्सर सोचते हैं कि आखिर ये एक्ट्रेसेस ऐसा क्या करती हैं कि हर वक्त इतनी फ्रेश और ग्लैमरस नजर आती हैं। वैसे खूबसूरत और स्टाइलिश दिखना इतना मुश्किल भी नहीं है। बस इसके लिए आपको कुछ बातों का ध्यान रखना होगा और आप भी खूबसूरत और स्टाइलिश दिख सकती हैं। आज के इस लेख में हम आपको कुछ ऐसी ब्यूटी टिप्स देने जा रहे हैं जिनकी मदद से आप बॉलीवुड एक्ट्रेसेस जैसी खूबसूरत दिखेंगी।

बोल्ड स्मोकी आई लुक पाने के लिए आप अपनी आँखों की लोअर आईलिड पर ब्लैक आईलाइनर अप्लाई करके स्मज करें। इसके साथ आप अपर आईलिड पर लाइट और शिमरी आईलाइनर लगा सकती हैं। इससे आपको बेहद स्टाइलिश लुक मिलेगा।

हमेशा अपनी स्किन टोन के हिसाब से लिपस्टिक चुनें। अगर कोई लिपस्टिक आप पर फबती है तो उसे हमेशा अपने साथ कैरी करें। अब चाहे तो लाइट पिंक लिप ग्लॉस हो या बोल्ड रेड लिपस्टिक, जो आपके फेस पर सूट करे वही इस्तेमाल करें। अगर आप अपनी पर्सनालिटी को

बोल्ड लुक देना चाहती हैं तो रेड आईलाइनर यूज कर सकती हैं। आजकल रेड आई मेकअप काफी ट्रेंड में हैं और कई सेलेब्स भी इसे बखूबी कैरी कर चुकी हैं। रेड आईलाइनर से आप अपनी आँखों को हाईलाइट कर सकती हैं और यह आपको बेहद ग्लैमरस और बोल्ड देगा। ध्यान रखें कि रेड आई मेकअप के साथ बाकी चेहरे के लिए कूल या न्यूड टोन ही चुनें वरना आपका फेस और ज्यादा रेड लगने लगेगा।

अपनी चीकबोन्स को हाईलाइट करने के लिए आप ब्रॉन्ज़र और हाइलाइटर का इस्तेमाल कर सकती हैं। इसके लिए आप मेकअप ब्रश से हाइलाइटिंग पाउडर लगाने के बाद शाइन और सेटिंग स्प्रे का इस्तेमाल कर सकती हैं। इससे आपके मेकअप को ग्लॉसी फिनिश मिलेगा। मेकअप के साथ-साथ स्किन का ध्यान रखना भी बेहद जरूरी है। मेकअप हटाने के बाद हमेशा स्किन को अच्छी तरह साफ करें। इसके लिए किसी अच्छे क्लीन्ज़र से चेहरा धोएं और फिर टोनर और मॉइस्चराइजर लगाएं। मेकअप करते वक्त हमेशा एक फीचर को हाईलाइट करें। अगर स्मोकी आई मेकअप कर रही हैं तो न्यूड या हल्के रंग की लिपस्टिक का इस्तेमाल करें। फ्रेश और ग्लोइंग स्किन पाने के लिए जितना हो सके खुद को हाइड्रेटेड रखें। इसके लिए खूब पानी पिएँ जिससे अपनी आपकी स्किन और बॉडी हाइड्रेट रहे।

त्वचा में निखार के लिए घर में ऐसे बनाएं नींबू के फेस पैक

नींबू और एलोवेरा फेस पैक बनाने के लिए एक बड़ा चम्मच नींबू का रास, दो बड़े चम्मच एलोवेरा जेल और एक चम्मच पानी को मिलाकर मिक्सी में मिश्रण बना लें। अब इसे एक कटोरी में निकालकर चेहरे पर लगा लें। आज हम आपको नींबू से बनने वाले सात फेस मास्क के बारे में बताने जा रहे हैं। खासियत ये है कि नींबू के फेस मास्क को बनाने के लिए सिर्फ एक और इंग्रीडिऐंट की जरूरत होगी और ये 5 मिनट से भी कम समय में बनकर तैयार हो जाएगा। आइए आपको नींबू से बनने वाले 7 फेस पैक की विधि के साथ इसके बचाव भी बताते हैं...

1.एलोवेरा और नींबू का फेस पैक

नींबू और एलोवेरा फेस पैक बनाने के लिए एक बड़ा चम्मच नींबू का रास, दो बड़े चम्मच एलोवेरा जेल और एक चम्मच पानी को मिलाकर मिक्सी में मिश्रण बना लें। अब इसे एक कटोरी में निकालकर चेहरे पर लगा लें। इसके बाद हल्के-हल्के हाथों से चेहरे की मसाज करें। 15 मिनट के बाद इसे पानी से धो लें। इस तरह से हफ्ते में 2 से 3 बार अपनाने पर आपको अपने चेहरे पर फर्क नजर आने लगेगा। एलोवेरा में मौजूद एलोसीन, एंटीएजिंग और मॉइस्चराइजिंग गुण त्वचा का कई तरह से बचाव करते हैं।

2.केले और नींबू का फेस पैक

एक कटोरी में आधा पका हुआ केला डालें और उसे मैश कर लें। इसके बाद इसमें एक चम्मच नींबू का रस और आधा चम्मच पानी मिलाकर मिश्रण तैयार कर लें। अब इसे अपने चेहरे पर 15 मिनट के लिए लगाकर रखें. सूख जाने पर चेहरे को पानी से धो लें। इस तरह से हफ्ते में दो बार लगाने पर आपकी त्वचा का रंग साफ हो सकेगा। केले में विटामिन सी, ए और ई पाया जाता है, जो चेहरे के पिगमेंट को कम करने में मदद करता है। इसके इस्तेमाल से झुर्रियों को भी दूर किया जा सकता है।

टमाटर और नींबू का फेस पैक

एक कटोरी में आधा टमाटर का रस, एक चम्मच नींबू का रस और आधा चम्मच पानी डालकर मिला लें। अब इस पेस्ट को अपने चेहरे और गर्दन पर लगा लें। 15 मिनट के बाद जब फेस मास्क सूख जाए तो चेहरे को पानी से धो लें। इस तरह से आप हफ्ते में 2 से 3 बार लगा सकते हैं। इसके इस्तेमाल से हाइपरपिगमेंटेशन को दूर किया जा सकता है। ये मिश्रण ऑयली स्किन के लोगों के लिए भी अच्छा माना जाता है।

योग प्राणायाम से त्वचा और बालों की बढ़ती है खूबसूरती

ऐसे जरूरी नहीं की आप जन्मजात खूबसूरत हो, लेकिन हां अगर कोशिश करते हैं तो खूबसूरत हो सकते हैं। अच्छी सेहत और बाहरी सुंदरता दोनों ही एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। अगर आप शारीरिक औन मानसिक रूप से स्वस्थ हैं तो आपकी सुंदरता निखर कर सामने आती हैं। हालांकि, अगर आप अपनी सेहत को लेकर लापरवाही करते हैं तो खूबसूरती बढ़ने की बजाए कम होने लगती है। दरअसल, सेहतमंद शरीर होने पर त्वचा और बाल दोनों ही स्वस्थ रहते हैं, जिससे सुंदरता बरकरार रहती है। एक अच्छे स्वास्थ्य के लिए सिर्फ डाइट का ही अच्छा होना काफी नहीं है बल्कि जीवनशैली भी अच्छी होनी चाहिए। इसके लिए योग को एक बेहतरीन विकल्प माना जाता है।

योग के जानकारों का कहना है कि योगासन को दिनचर्या में शामिल करने पर भावनात्मक, व्यक्तित्व, आत्मविश्वास और व्यवहार में सकारात्मक बदलाव होते हैं। योग खूबसूरती के लिए काफी जरूरी है, ऐसा इसलिए क्योंकि शारीरिक सुंदरता को आनंद का अहसास माना गया है। योग करने से रक्त संचार में बढ़ोतरी होती है और शरीर के विषैले पदार्थ बाहर निकलते हैं, इससे त्वचा और बालों की सुंदरता बढ़ती है जो हमारे सौंदर्य को बढ़ाता है। अगर आप अपने जीवनशैली में योग प्राणायाम को शामिल करते हैं तो आपके बाल और त्वचा को लाभ पहुंच सकता है।

आइए आपको योग प्राणायाम से संबंधित जानकारी देते हैं और बताते हैं कि आप कौन-कौन से योग प्राणायाम अपना सकते हैं...

प्राणायाम क्या है?

योग और प्राणायाम ऐसे शक्तिशाली माध्यम है, जो इंसान के तनाव को दूर कर शरीर को सेहतमंद, बाल और त्वचा को चमकदार बनाते हैं। इसे अपने दिनचार्य में शामिल करने से हर तरह की बीमारियों से बचा जा सकता है। योग से शरीर और मस्तिष्क दोनों स्वस्थ रहते हैं। इससे शरीर में प्राण शक्ति की बढ़ोतरी, मानसिक तनाव से मुक्ति, मांसपेशियों की मजबूती, शारीरिक और मानसिक सुंदरता की बढ़ोतरी होती है। इसके अलावा नाड़ी तंत्र संतुलित और आंतरिक अंगों की मजबूती भी होती है।

त्वचा और बालों के लिए योग प्राणायाम

योग प्राणायाम से त्वचा और बालों को काफी लाभ होता है। दरअसल, योग से रक्त और ऑक्सीजन का संचार होता है, जिससे त्वचा निखरती है और सुंदरता बढ़ती है। बालों में भी यही प्रक्रिया होती है। सिर की खाल और और बालों की कोशिकाओं में ब्लड और ऑक्सीजन का संचार को बढ़ावा मिलता है। जिससे बालों की समस्याएं दूर होती है, बाल लंबे और घने होने लगते हैं। योग प्राणायाम से केवल बाल और त्वचा को ही लाभ नहीं होता है बल्कि शारीरिक बनावट पर भी असर होता है। इसमें लचीलापन, मनोहरता और हावभाव भी शामिल है, जिससे सुंदरता बढ़ती है।

झुर्रियों वाली स्किन को रेटिनॉल की मदद से एक बार फिर से बनाएं जवां-जवां

जब उम्र बढ़ती है तो उसका असर स्किन पर साफतौर पर नजर आता है। उम्र बढ़ने के बाद स्किन का कसाव कम होने लगता है, जिसके कारण स्किन पर फाइन लाइन्स व रिंकल्स आदि नजर आने लगते हैं। हालांकि, महिलाएं जल्द ही इस वजह से परेशान हो जाती हैं और वह तरह-तरह के प्रोडक्ट्स का इस्तेमाल करना शुरू कर देती हैं, ताकि उनकी स्किन लंबे समय तक यंग बनी रहे। अगर आपकी उम्र बढ़ने लगी है तो यकीनन आपको भी यही चिंता होती होगी। लेकिन अब आपको परेशान होने की जरूरत नहीं है। अगर आप अपनी स्किन को यंगर बनाना चाहती हैं तो ऐसे में आप रेटिनॉल युक्त क्रीम को अपने स्किन केयर रूटीन में शामिल कर सकती हैं। तो चलिए आज हम आपको बता रहे हैं कि रेटिनॉल क्या है और आप इसे किस तरह इस्तेमाल कर सकती हैं-

जानिए क्या है रेटिनॉल

रेटिनॉल विटामिन ए का ही एक प्रकार है, जो कई तरह के फूड आइटम्स जैसे शकरकंद और गाजर में पाया जाता है। आजकल ऐसी कई क्रीम्स हैं, जिनमें रेटिनॉल का इस्तेमाल किया जाता है। यह ना केवल फाइन लाइन्स और रिंकल्स की अपीयरेंस को कम करता है, बल्कि मुंहासों व अन्य कई स्किन प्रॉब्लम्स को भी दूर करता है। साथ ही साथ इसे इस्तेमाल करने से आपकी स्किन नेचुरली ग्लोइंग बनाती है। अगर आप इसे नियमित रूप से इस्तेमाल करती हैं तो इससे कोलेजन उत्पादन बेहतर होता है, जिससे स्किन पर सकारात्मक असर देखने को मिलता है।

ऐसे करें इसे इस्तेमाल-यूं तो रेटिनॉल का इस्तेमाल किसी भी समय किया जा सकता है, लेकिन इसे रात के समय सोने से पहले अप्लाई करना अधिक बेहतर माना जाता है। दरअसल, रेटिनॉल युक्त क्रीम स्किन पर अप्लाई करके धूप में बाहर निकलने से आपको स्किन में सेंसेटिविटी हो सकती हैं।

इसे अप्लाई करने से पहले फेस को वॉश करें और करीबन 10-15 मिनट के बाद रेटिनॉल क्रीम को अप्लाई करें। अगर आपको स्किन में रूखापन हो तो आप रेटिनॉल युक्त क्रीम लगाने के करीबन 10-15 मिनट बाद आप मॉइश्चराइजर अप्लाई करें।

इन बातों का रखें ध्यान -अगर आप पहली बार रेटिनॉल का इस्तेमाल कर रही हैं तो कोशिश करें कि आप इसे खुद से ना लगाएं। हमेशा पहले डर्माटालॉजिस्ट से एक बार कंसल्ट करें। वहीं, अगर आपकी स्किन सेंसेटिव है, तो ऐसे में आप बेहद कम मात्रा में लगाएं। इसके अलावा, इससे पैच टेस्ट करें, ताकि आपको यह पता चले कि रेटिनॉल युक्त क्रीम आपकी स्किन पर कैसा रिएक्ट करती है। जब भी आप इसे स्किन पर अप्लाई करें तो कोशिश करें कि आप इसे रात में ही लगाएं। दिन के समय इसे लगाकर बाहर निकलने से आपको सेंसेटिविटी की समस्या हो सकती है।

गर्मियों में पिएं हेल्थी हेल्थी ड्रिंक्स रहें तरोताज़ा

जैसा कि आप जानते हैं कि दुनियाभर में कोरोना वायरस फैल चुका है, ऐसे में इससे बचाव के लिए इम्यूनिटी सिस्टम को स्ट्रांग बनाए रखने की सलाह दी जा रही है। हालांकि सिर्फ कोरोना से ही नहीं अन्य छोटी-बड़ी बीमारियों से बचाव के लिए भी इम्यूनिटी सिस्टम का मजबूत होना जरुरी है। इसे मजबूत बनाए रखने के लिए आप अपनी रोजाना डाइट में कुछ फूड और ड्रिंक्स शामिल कर सकते हैं। आप चाहे तो लहसुन या ब्रॉकली को कच्चा चबकर अपनी इम्यूनिटी बढ़ा सकते हैं। वहीं, अगर आपको इसका सेवन करना पसंद नहीं है तो आप कुछ ड्रिंक्स को अपनी डाइट में शामिल कर सकते हैं, जो स्वादिष्ट होने के साथ ही गर्मी के मौसम में राहत भरे रहेंगे। आज हम आपको कुछ ऐसे ड्रिंक्स के बारे में बताने जा रहे हैं जिनका रोजाना सुबह सेवन करने पर आप बीमारियों से लड़ सकेंगे, आइए जानते हैं...

अदरक और नींबू की चाय

ज्यादातर लोग अपनी सुबह की शुरुआत चाय या कॉफी पीकर करते हैं। अगर आप भी उनमें से ही हैं तो फिर आज से अपनी इस आदत में थोड़ा बदलाव कर लीजिए, साथ ही अपनी सेहत को अच्छा बनाने के लिए एंटी-ऑक्सीडेंट्स और विटामिन से भरपूर अदरक और नींबू की चाय का सेवन शुरु कर दीजिए। ऐसा करने से आप बीमारियों से तो दूर रहेंगे ही इसके

अलावा आपका इम्यूनिटी सिस्टम भी स्ट्रांग होगा. आप चाहे तो इसमें इलाइची पाउडर भी मिला सकते हैं।

आंवले का जूस

स्वास्थ्य के लिए आंवले का सेवन करना बेहद लाभदायक होता है। दो संतरों के बराबर एक आंवले में विटामिन सी मौजूद होता है। ये कई तरह की बीमारियों से लड़ने में बेहद लाभदायक साबित होता है। आंवले के फल या जूस का सेवन करने पर विटामिन सी समेत कैरोटीन, जिंक, फाइबर, आयरन, विटामिन बी कॉम्प्लेक्स, एंटीऑक्सीडेंट्स, कैल्शियम आदि मिलते हैं।

ऐसे बनाएं ताकत से भरपूर शेक

ताकत से भरपूर शेक का सेवन करने से आपका इम्यूनिटी सिस्टम मजबूत होता है, इसे बनाना काफी सरल है। इसके लिए आपको दो संतरे, एक गाजर, 1 चम्मच चिया सीड्स, 200एमएल दही, आधा चम्मच हल्दी, आधा चम्मच घिसा हुआ अदरक, आधा चम्मच इलाइची, आधा चम्मच नारियल का तेल ले लें। इसके बाद इन सभी चीजों को ब्लेंडर या जूसर में डालकर अच्छे से ब्लेंड करें और फिर ग्लास में डालकर इसका सेवन करें। इससे आप खुद में ताजगी महसूस करेंगे और आपका इम्यूनिटी सिस्टम मजबूत होगा।

सर्वाइकल के दर्द से निजात पाने के लिए अपनाएं ये आसान घरेलू उपाय

आजकल डेस्क जॉब के बढ़ते चलन के कारण हमें दिनभर कुर्सी पर बैठ कर काम करना पड़ता है। इसकी वजह से लोगों में गर्दन और पीठ में दर्द की समस्या बढ़ती जा रही है। अक्सर हम गर्दन के दर्द को मामूली समझकर नज़रअंदाज़ कर देते हैं लेकिन यह समय के साथ गंभीर हो सकता है। लंबे समय तक होने वाला गर्दन का दर्द सर्वाइकल पेन भी हो सकता है। बैठने का गलत तरीके या ज़्यादा देर तक झुककर काम करना इस समस्या का मुख्य कारण है। हेल्थ एक्सपर्ट्स के अनुसार, गर्दन के हिस्से वाली रीढ़ की हड्डी के जोड़ों और डिस्क में समस्या होने से सर्वाइकल पैन की समस्या होती है। सर्वाइकल पेन के कारण गर्दन के निचले हिस्से और सिर में दर्द होता है और गर्दन में सूजन भी हो सकती है। सर्वाइकल की समस्या में आपको डॉक्टर की सलाह लेनी चाहिए। इसके अलावा आप कुछ घरेलू उपाय करके भी इस समस्या से निजात पा सकते हैं-

बर्फ की सिंकाई –अगर आप सर्वाइकल पेन से परेशान हैं तो प्रभावित हिस्से की बर्फ से सिंकाई करें। इसके लिए एक तौलिए में कुछ बर्फ के टुकड़े डालकर इससे अपनी गर्दन की सिंकाई करें। ऐसा करने से आपको दर्द और सूजन से जल्द आराम मिलेगा।

तिल का तेल –सर्वाइकल के दर्द में तिल के तेल से

मालिश करने से फायदा होता है। तिल में भरपूर मात्रा में कॉपर, मैग्नीशियम, फॉस्फोरस, विटामिन डी, जिंक जैसे तत्व होते हैं जो सर्वाइकल के दर्द और सूजन से निजात दिला सकते हैं। इसके लिए तिल के तेल को हल्का गुनगुना करके रोजाना इससे अपनी गर्दन की मालिश करें। ऐसा करने से आपको दर्द से जल्द राहत मिलेगी।

हल्दी–सर्वाइकल पेन से छुटकारा पाने के लिए हल्दी बहुत फायदेमंद है। हल्दी में एंटी-इंफ्लामेटरी गुण होते हैं जो सूजन और दर्द से राहत दिलाते हैं। सर्वाइकल के दर्द से परेशान हैं तो एक गिलास दूध में हल्दी डालकर गर्म कर लें। जब दूध ठंडा हो जाए तो इसमें शहद मिलकर पिएँ।

लहसुन–लहसुन भी सर्वाइकल पेन के लिए बहुत फायदेमंद माना जाता है। इसमें कैल्शियम, फॉस्फोरस, आयरन, विटामिन सी आदि तत्व मौजूद होते हैं जो दर्द से आराम दिलाते हैं। इसके लिए रोजाना सुबह 2 कली लहसुन की पानी के साथ लें। इसके अलावा आप सरसों के तेल में 6-7 लहसुन की कली डालकर गर्म कर लें। इसके बाद इसे छान लें। इस तेल से रोजाना मालिश करने से लाभ मिलेगा।

गुनगुने पानी से नहाएं–सर्वाइकल की समस्या में गुनगुने पानी से नहाना चाहिए क्योंकि इससे ब्लड सर्कुलेशन बढ़ता है। इसके अलावा आप दर्द वाले हिस्से पर हॉट वाटर बॉटल से सिंकाई भी कर सकते हैं। ऐसा करने से आपको दर्द से जल्द राहत मिलेगी।

ब्लड शुगर लेवल और मधुमेह को कम करने के उपाए

मधुमेह एक ऐसी बीमारी बन चुकी है जो दिन बा दिन लोगों में फैलती जा रही है यह हिंदुस्तान में ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया में फ़ैल रही है. डॉक्टरों का कहना है कि पिछले दो दशकों में इस बीमारी ने दोगुनी तेज़ी देखि गयी है. विशेषज्ञों का मानना है कि आज की जीवन शैली, खराब भोजन की आदतों और व्यायाम की कमी यह सब कारण है कि आज मधुमेह के मामले ज्यादा सुनाई दे रहें हैं. मधुमेह एक ऐसी बीमारी है जिसे ठीक नहीं किया जा सकता है इसे सिर्फ नियंत्रण या और ख़राब स्थिति में नहीं पूछने देना है. यही नहीं इसकी बुरी बात यह है कि यह छोटे छोटे बच्चों को भी हो रही है. तो आज हम इस विश्व स्वास्थ्य दिवस पर इस आर्टिकल के मधुमेह और ब्लड शुगर लेवल को कैसे नियंत्रण में रखें यह जानने की कोशिश करेंगे. इसमें फाइबर काफी मात्रा में होता है जिससे लंबे समय तक शरीर के ग्लूकोज के स्तर को मेटाबोलाइज करने में भी मदद मिलती है. हर दिन एक कप जौ खाने से ब्लड शुगर लेवल नियंत्रण में रहेगा. टहलें विशेषज्ञों का कहना है कि रोज़ सुबह और शाम 15 मिनट का

टहलना आपके ब्लड शुगर लेवल को नियंत्रण में रखता है. यह मधुमेह के रोगियों के लिए सबसे अच्छा व्यायाम हैं जिससे वे अपना ब्लड सुगर लेवल नियंत्रण में रख सकते हैं. मेथी ब्लड सुगर लेवल को नियंत्रण में रखने के लिए मेथी सबसे अच्छा खाद्य पदार्थ है. इसके लिए एक चम्मच मेथी पाउडर को गर्म दूध में मिलाएं और इसे रोज़ पीएं. इससे आपका ब्लड शुगर लेवल नियंत्रण में रहेगा. फल खाएं ताजे फलों में विटामिन ए और सी होता है जो कि खून और हड्डियों के स्वास्थ्य को स्वस्थ रखता है. इसके अलावा जिंक, पोटैशियम, आयरन का भी अच्छा मेल पाया जाता है. इसमें फाइबर भी होता है जिससे ब्लड शुगर लेवल नियंत्रण में रहता है

5. सब्ज़ियां खाएं पालक, खोभी, करेला, अरबी, लौकी आदि मधुमेह में स्वास्थ्य वर्धक होती हैं. यह कैलोरी में कम और विटामिन सी, बीटा कैरोटीन और मैगनीशियम में ज्यादा होती हैं, जिससे मधुमेह ठीक होता है. खूब पानी पीएं पानी खून में बढ़ी शुगर को इक्ठ्ठा करता है, जिस वजह से आपको 2.5 लीटर पानी रोजाना पीना चाहिए. इससे ना ही आपको हृदय रोग होगा और मधिमें भी नियंत्रण में रहेगा. विटामिन डी शरीर में विटामिन डी की कमी से शरीर में इंसुलिन की मात्रा बढ़ जाती है. इसलिए सही मात्रा में विटामिन डी खाते रहें जिससे ब्लड सुगर लेवल का स्तर कम रहे.

दांतों में हो दर्द तो करें ये घरेलू उपचार

सफेद और सुंदर दांतों से चेहरे की सुंदरता और भी बढ़ जाता है. इसलिए दांतों को स्वस्थ रखना बहुत जरूरी होता है. ज्यादा मीठा खाने की वजह से कई बार दांतों में कीड़ा लग जाता है जिससे सारे दांत खराब हो सकते हैं. इससे दांतों में दर्द रहता है जिससे काफी परेशानी होती है. इसके अलावा ऐसे दांतों की वजह से चेहरे की

मुस्कान भी खराब हो जाती है. दांतों में कीड़ा लगने से बचाने के लिए कुछ घरेलू तरीके भी अपना सकते हैं. दांतों को स्वस्थ रखने के लिए इनकी रोजाना अच्छी तरह सफाई करनी चाहिए. इनमें गंदगी रहने की वजह से कीड़ा लग जाता है जिससे काफी परेशानी होती है. अक्सर ज्यादा मीठा खाने के कारण भी यह समस्या़ हो जाती है. दांतों के कीड़े को नष्ट करने के लिए प्याज के बीजों का इस्तेमाल करना चाहिए. इसके बीजों को चबाने से कीड़े जल्द ही खत्म हो जाते हैं. इसके अलावा प्याज को बारिक काट कर इसे एक कटोरे में डाल लें और इसमें थोड़ा-सा तेल डालकर कम आंच पर गर्म करें. इससे निकलने वाले धुएं को मुंह में लेने से भी कीड़े मर जाते हैं. हींग के प्रयोग से भी दांतों के कीड़े खत्म हो जाते हैं. इसके लिए हींग के पाउडर को पानी में डालकर उबालें और थोड़ा ठंड़ा होने पर इस पानी से कुल्ला करें. रोजाना ऐसा करने से दांत के कीड़े खत्म हो जाते हैं. इसके अलावा दांतों में होने वाली दर्द से भी राहत मिलती है.

धूप में बाहर निकल रहे हैं तो बेल का जूस जरूर पिएं, बड़ा फायदा होगा

गर्मी का मौसम आते ही प्यास ज्यादा लगने लगती है। ऐसे में लोग धूप से आते ही जूस या फिर पानी का पीने लगते हैं। अगर आप भी ऐसा करते हैं तो आपको इस रिपोर्ट को ध्यान से पढ़ना चाहिए। बहुत से लोग तो अपनी डायट में जूस या फिर शरबत को शामिल कर लेते हैं। गर्मी के मौसम में इंसान गर्म हवाओं से मुरझा जाता है तो ऐसे में शरीर में एनर्जी बनाए रखने के लिए आपको जूस या फिर शरबत की जरूरत पड़ती है जो आपकी प्यास के साथ-साथ शरीर को ठंडक भी देता है। लेकिन, धूप से आकर तुरंत ही ठंडा जूस या फिर पानी नहीं पीना चाहिए इससे सर्द-गर्म हो सकता है। इसलिए थोड़ा ठहर कर इसका सेवन करना चाहिए।शरबत या फिर जूस के सेवन से प्रोटीन, बीटा- कैरोटीन, थायमीन और विटामिन-सी की कमी पूरी हो जाती है। ऐसे में बेल के जूस का सेवन तो और भी ज्यादा कारगर होता है। यह शरीर में ब्लड शुगर के स्तर को नियंत्रित रखता है और शरीर में इन्सुलिन बनाने में काफी मददगार भी होता है जिसकी वजह से डायबिटीज रोगियों को काफी राहत मिलती है। हालांकि, शुगर के मरीजों को बेल का शरबत नहीं पीना चाहिए क्योंकि इसे बनाते समय इसमें शक्कर का इस्तेमाल किया जाता है। इसके बावजूद अगर आपको जूस पीने का मन करता है तो आप डॉक्टर से एक बार सलाह जरूर ले लें। अगर आप रोजाना 50 ग्राम बेल का जूस बनाकर उसे गुनगुने पानी के साथ शक्कर मिलाकर पीते हैं तो आपके शरीर का

खून साफ हो जाएगा। साथ ही लिवर और किडनियों को भी काफी राहत मिलेगी क्योंकि उनसे गंदगी साफ करने का बोझ टल जाएगा।इतना ही नहीं बेल दिल की जुड़ी बीमारियों के लिए भी काफी कारगर साबित हुआ है। अगर आपके आस-पास किसी को दिल से जुड़ी बीमारी हो तो उन्हें बेल के शरबत में थोड़ा सा घी मिलाकर रोजाना एक समान मात्रा में दें। इससे दिल के मरीज को काफी राहत मिलेगी।गर्मी के मौसम में बेल का जूस पीने से पेट ठंडा रहता है, साथ ही यह आसानी से डायजेस्ट हो जाता है।

रकुल प्रीत का बोल्ड अवतार

बॉलीवुड की खूबसूरत अदाकारा रकुल प्रीत सिंह इन दिनों बॉयफ्रेंड जैकी भगनानी के साथ मालदीव में वेकेशन एंजॉय कर रही हैं। वह लगातार वेकेशन की तस्वीरें शेयर कर रही हैं। लेकिन अब उन्होंने अपनी एक फोटो पोस्ट कर दी है। जिसने इंटरनेट पर आग लगा दी है। उनकी फोटो को जमकर लाइक और शेयर किया जा रहा है। रकुल ने इंस्टाग्राम अकाउंट पर मालदीव से अपनी एक तस्वीर पोस्ट की है। जिसमें वह पिंक कलर की बिकिनी पहने हुए नजर आ रही हैं। उन्होंने समंदर के पानी में उतरकर अपने परफेक्ट फिगर को फ्लॉन्ट किया है। रकुल ने अपने बालों को बांधा हुआ है। और वह कैमरे के सामने मुस्कुराते हुए दिख रही हैं। फोटो में एक्ट्रेस रकुल के बोल्ड लुक को देखकर फैंस आहें भरने लगे हैं।कमेंट सेक्शन में उनकी जमकर तारीफ हो रही है। कोई उन्हें हॉट कह रहा है। तो कोई सेक्सी. इसके अलावा यूजर्स ने कमेंट सेक्शन में फायर इमोजी शेयर करते हुए रकुल को कॉम्प्लिमेंट दी है। उनकी इस फोटो को दो घंटे में ही 3 लाख से ज्यादा लाइक्स मिल चुके हैं। इससे पहले रकुल ने अपनी एक फोटो पोस्ट की थी। जिसमें उन्होंने ब्लू कलर के स्विमसूट में फैंस को अपना दीवाना बना लिया था। वर्क फ्रंट की बात करें तो इन दिनों रकुल प्रीत सिंह के पास कई फिल्में हैं।

हॉलीवुड में डेब्यू करने जा रही आलिया

बॉलीवुड अभिनेत्री आलिया भट्ट जल्द ही हॉलीवुड में डेब्यू करने जा रही है। आलिया भट्ट की फिल्म गंगूबाई काठियावाड़ी हाल ही में प्रदर्शित हुयी है, जिसमें उनके अभिनय को बेहद पसंद किया गया है। आलिया अब हॉलीवुड सिनेमा में डेब्यू करने जा रही है। आलिया अभिनेत्री गैल गैडोट और जेमी डोर्नन के साथ स्क्रीन स्पेस शेयर करने वाली हैं।नेटफ्लिक्स इंडिया ने सोशल मीडिया के जरिए इस बात की जानकारी दी है। नेटफ्लिक्स इंडिया ने ट्विटर अकाउंट पर आलिया भट्ट की तस्वीर शेयर कर अपने नए प्रोजेक्ट की घोषणा की है। नेटफ्लिक्स इंडिया के ट्वीट के अनुसार आलिया भट्ट गैल गैडोट और जेमी डोर्नन के साथ फिल्म हार्ट टू स्टोन में नजर आने वाली हैं।

बॉलीवुड में में कमबैक करेंगी विपाशा बसु

जानी-मानी अभिनेत्री विपाशा बसु बॉलीवुड में कमबैक करने जा रही है। बिपाशा बसु काफी समय से बॉलीवुड से दूर हैं। विपाशा ने अंतिम बार वर्ष 2015 में प्रदर्शित फिल्म अलोन में काम किया था। वर्ष 2016 में करण सिंह ग्रोवर के साथ शादी के बाद विपाशा ने फिल्मों से दूरी बना ली। विपाशा इस वर्ष बॉलीवुड में कमबैक करने जा रही हैं। बिपाशा बसु ने बताया कि कोरोना महामारी के कारण बहुत सी चीजों को रोक दिया था। विपाशा ने कहा कि वह चाहती थीं कि कोरोना काल में अपने पूरे परिवार के बारे में बहुत सावधान रहें। बिपाशा बसु ने कहा कि कोरोना वायरस ने सभी को घर पर रहने के लिए मजबूर कर दिया था। उस समय सब कुछ इतना अप्रत्याशित था, जो हममें से किसी ने भी कभी अनुभव नहीं किया था। बिपाशा ने कहा कि वह बहुत ज्यादा काम करने के बारे में सोचती नहीं हैं। हालांकि, अब उन्होंने प्रोजेक्ट्स में हिस्सा लेना शुरू कर दिया है।

अंतराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर नगर निगम आयुक्त श्री किशोर कन्याल ने निगम में कार्यरत सभी महिला अधिकारियों एवं कर्मचारियों को महिला दिवस की शुभकामनाएं दी। इसके साथ ही उपायुक्त श्री सुश्री मिनी अग्रवाल को एक दिवस का आयुक्त घोषित किया।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा बाल भवन सभागार में जिला स्तरीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में जिला पंचायत प्रशासकीय समिति की अध्यक्ष श्रीमती मनीषा यादव ने महिलाओं को सम्मानित किया।

कालीदास संस्कृत अकादमी, मप्र संस्कृति परिषद, जीवाजी विश्वविद्यालय, महाकवि भवभूति शोध एवं शिक्षा समिति द्वारा आयोजित भवभूति समारोह के अंतिम दिवस पर नगर निगम ग्वालियर द्वारा देशभर से पधारे 50 से अधिक संस्कृत के विद्वानों का शॉल व श्रीफल ओढ़ाकर समान किया गया।

नारी शक्ति सदैव सम्मानीय हैः ऊर्जामंत्री तोमर

● गूंज न्यूज नेटवर्क

बेटी है तो कल है सामाजिक संस्था द्वारा 11वां नारी शक्ति सम्मान का आयोजन श्याम वाटिका में किया गया। कार्यक्रम में मुख्यातिथि ऊर्जा मंत्री प्रदुम्न सिंह तोमर रहे जबकि अध्यक्षता जिलाध्यक्ष कमल माखीजानी ने की विशिष्ट अतिथि पूर्व विधायक रमेश अग्रवाल,आर पी माहेश्वरी,जेल प्रभारी प्रभात कुमार,अशोक शर्मा,ड़ॉ बुशरा मलिक उपस्थित रही, कार्यक्रम का संचालन ड़ॉ वंदना भूपेन्द्र प्रेमी व आभार आशु बिपिन तोमर ने व्यक्त किया। सर्वप्रथम मा सरस्वती जी का पूजन व दीपप्रज्जलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों में किया। बान्या माहेश्वरी ने श्री गणेश वंदना प्रस्तुत की। कार्यक्रम में गूंज मीडिया ग्रुप की डायरेक्टर कृति सिंह को उनके द्वारा किए जा रहे उल्लेखनीय कार्यों के लिए ऊर्जा मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने सम्मानित किया। ततपश्चात होली महोत्सव पर संस्था अध्यक्षों ने व्रज के गानों पर मोर डांस प्रस्तुत किया व शिख डांस एकेडमी की छत्राओ ने मनमोहक प्रस्तुति दी। अतिथियों में शिक्षा,समाज सेवा, प्रशानिक, स्वास्थ्य, खेल व साहित्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाली महिलाओं को नारी शक्ति सम्मान से सम्मानित किया इस अवसर पर श्री प्रधुम्न सिंह ने

महिला दिवस के अवसर पर गूंज मीडिया ग्रुप की डायरेक्टर कृति सिंह को उनके द्वारा किए जा रहे उल्लेखनीय कार्यों के लिए ऊर्जा मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने सम्मानित किया

कहा कि नारी शक्ति सदैव सम्मानीय है वही कमल माखीजानी व रमेश अग्रवाल ने भी सम्मानित सभी महिलाओं को महिला दिवस व होली की अग्रिम शुभकामनाएं दी।इस अवसर पर 101 महिलाओं को सम्मानित किया गया।

फसाड लाइटिंग से जगमग हुआ ग्वालियर

स्मार्ट सिटी द्वारा कराए जा रहे विकास कार्यों से संवर रहा शहर

● गूंज न्यूज नेटवर्क

ग्वालियर स्मार्ट सिटी द्वारा क्रियान्वित फसाड लाइटिंग परियोजना शहरवासियों व सैलानियों के लिए आकर्षण का केन्द्र बनी है। महाराज बाड़ा, ग्वालियर फोर्ट, एमएलबी कॉलेज सहित शहर के ऐतिहासिक स्थलों को वॉर्म हेरिटेज लाइटिंग से रोशन किया गया है। शहरवासियों को मूलभूत सुविधाएँ मुहैया कराने तथा शहर में लोकप्रिय स्थलों को आकर्षक बनाने की दृष्टि से परियोजनाओं का क्रियान्वयन ग्वालियर स्मार्ट सिटी द्वारा किया जा रहा है। चौपाटी, सेल्फी प्वाइंट, यूजीयम, टाउन हॉल आदि स्थलों को स्थानीय लोगों व सैलानियों द्वारा सराहा जा रहा है। स्मार्ट रोड के प्रथम चरण के निर्माण

स्मार्ट सिटी सीईओ जयति सिंह ने अटल संग्रहालय का दौरा कर चल रहे विकास कार्य का निरीक्षण किया। यह अब अंतिम आकार ले रहा है और जल्द ही सभी के लिए उपलब्ध होगा।

में विकसित किया गया स्टेप सीटिंग व सेल्फ़ी प्वाइंट जो सैलानियों को आकर्षित कर रहा है।

इसी क्रम में शहरवासियों के इस वीकेंड को खास बनाने के लिये बैजाताल पर लगी फसाड लाइटिंग को तिरंगा थीम पर प्रकाशित किया गया। तिरंगा थीम की लाइटिंग से यहां का समां देखते ही बना व लोगों ने नौकायन व भ्रमण करते फोटो लिये। ग्वालियर स्मार्ट सिटी सीईओ जयति सिंह ने जानकारी देते हुए बताया कि फसाड लाइटिंग परियोजना में अत्याधुनिक तकनीक का उपयोग कर ऐतिहासिक स्थलों को प्रकाशित किया गया है। इन सभी लाइटों को एकीकृत करने का कार्य अंतिम चरण में है तथा शीघ्र ही कमांड कंट्रोल सेंटर से इन्हें एक साथ संचालित किया जा सकेगा। गौरतलब है कि महाराज बाड़ा, बैजाताल, ग्वालियर फोर्ट पर फसाड लाइटिंग के फोटो व वीडियो आजकल वायरल हो रहे हैं।

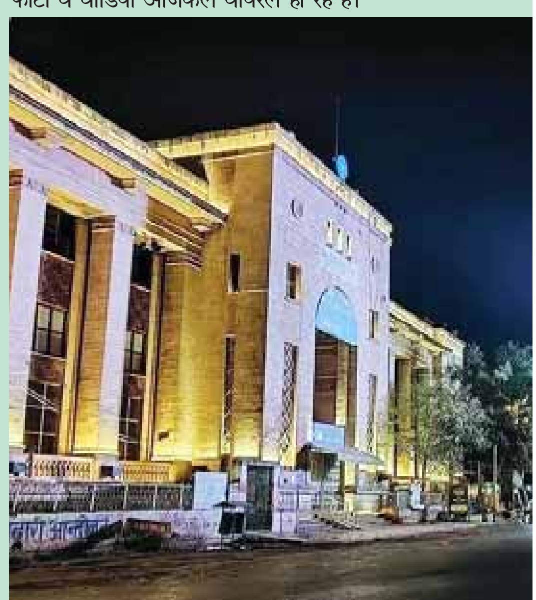

ग्रामीण महिलाओं को जागरूक कर रही पोषण की पोटली

● गूंज न्यूज नेटवर्क

महिलाओं को सशक्त बनाने एवं उनके स्वास्थ्य संबंधी जानकारी देने हेतु गूंज, स्मार्ट एवं यूनिसेफ द्वारा पोषण की

पोटली कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें ग्रामीण महिलाओं को जागरूक किया एवं उन्हें विस्तारपूर्वक समझाया और मार्गदर्शन किया। फैमिली प्लानिंग एसोसिएशन ऑफिस इंडिया एवं लक्ष्यगत हस्तशेप परियोजना ट्रांसपोर्ट नगर ग्वालियर द्वारा सुरक्षित गर्भपात पोषण आहार एवं गर्भवती महिलाओ की जांच की गयी महिलाओं को जागरूक किया एवं महिला बाल विकास द्वारा चलाई जा रहीं कल्याणकारी योजनाओं के बारे में भी जानकारी दी। साथ ही गर्भवती महिलाओं को खास विशेष जानकारी भी पोषण की पोटली कार्यक्रम में दी गई। कार्यक्रम में मुख्य रूप से रूप में गूंज 90.8 एफएम की डायरेक्टर कृति सिंह, मनोज सिंह भदौरिया, फैमिली प्लानिंग एसोसिएशन ग्वालियर से अछेन्द्र सिंह कुशवाह, कॉउंसलर जितेंद्र साक्य, सलमान पठान कल्याणसिंह व अनुज द्वारा सहयोग किया गया गया।

ग्वालियर के पहले कम्युनिटी रेडियो स्टेशन गूंज 90.8 एफ. एम . आपकी अपनी आवाज़ की टीम ने ग्वालियर शहर में गरीब बस्तियों में जाकर जनजागरण अभियान चलाकर महिलाओं को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक किया एवं बच्चों को शिक्षा दिलाने पर जोर दिया व खाद्य सामग्री एवं भोजन के पैकेट भी वितरित किए गए।

ओरल हेल्थ के प्रति खुद को और दूसरों को करें जागरूक: डॉ. सतीश गुप्ता

ग्वालियर के जाने-माने मशहूर डेंटिस्ट डॉक्टर सतीश कुमार गुप्ता से गूंज की विशेष बातचीत

● टीम गूंज न्यूज नेटवर्क

ग्वालियर के जाने-माने मशहूर डेंटिस्ट डॉक्टर सतीश कुमार गुप्ता जिन्होंने अपनी डिग्री बीडीएस गवर्नमेंट डेंटल कॉलेज इंदौर से की है। वह विगत कई वर्षों से ग्वालियर शहर में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। ग्वालियर के पहले कम्युनिटी रेडियो स्टेशन गूंज 90.8 एफ. एम . आपकी अपनी आवाज़ को दिए इंटरव्यूह में डॉ. गुप्ता ने कई विषयों पर हमसे बातचीत की पेश हैं-इंटरव्यू के मुख्य अंश।

सर हमें सबसे पहले अपने बारे में बताइए?

नमस्कार मेरा नाम डॉक्टर सतीश कुमार गुप्ता है। मैंने अपनी डिग्री बीडीएस गवर्नमेंट डेंटल कॉलेज इंदौर से कम्पलीट की और विगत 7 सालों से मैं ग्वालियर में अपनी सेवाएं निरंतर दे रहा हूं।

2 सर हमें बताइए ओरल हेल्थ क्या होती है?

हम ओरल हेल्थ को मान सकते हैं हमारे शरीर के वह अंग जो हमारे चबाने बोलने या मुस्कुराने में योगदान देते हैं इनसे संबंधित स्वास्थ्य को हम ओरल हेल्थ कह सकते हैं इसमें मुख्यतः हमारे लिप्स दांत मसूड़े जीप गाल, तालू, फेरिंग्स आदि से संबंधित स्वास्थ आता है।

3 सर ओरल हेल्थ का क्या इंपोर्टेंस है हमारी लाइफ में यह हमारी अदर बॉडी पार्ट से कैसे इंटरलिंक्ड है

देखा जाए तो ओरल हेल्थ के बारे में ज्यादातर लोग आज भी हमारी सोसाइटी मैं उस तरह से बात नहीं करते जितना हम शरीर के बाकी हिस्सों के बारे में करते हैं जबकि हमें नहीं भूलना चाहिए की मुंह का स्वास्थ्य आपके पूरे शरीर के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है हममें से ज्यादातर लोगों को अपने दांतो का ख्याल उस वक्त आता है जब वह बुरी तरह खराब हो जाते हैं या उन में दर्द शुरू हो जाता है पर अगर हम शुरुआत से ही दांतो की देखरेख प्रॉपर तरीके से करें तो ऐसी परेशानियों से काफी हद तक बचा जा सकता है

4 सर हमारी ओरल हेल्थ खराब होने के क्या-क्या कारण हो सकते हैं?

इसमें बहुत सारे फैक्टर रहते हैं लेकिन अगर हम कुछ फैक्टर्स की बात करें तो इसमें जैसे हम प्रॉपर तरीके से ब्रश नहीं करते हैं यह भी एक रीजन रहता है। कुछ धूम्रपान या तंबाकू से रिलेटेड प्रोडक्ट्स अगर हम यूज करते हैं तो उनसे

डॉक्टर सतीश कुमार गुप्ता

भी ओरल हेल्थ कॉम्प्रोमाइज हो जाती है। शक्कर युक्त पदार्थ का अत्यधिक सेवन करना भी हानिकारक हो सकता है कभी-कभी शरीर के कुछ रोग जैसे डायबिटीज या कुछ अन्य रोग भी ओरल हेल्थ पर प्रभाव डालते हैं। कुछ दवाओं से हमारी लार की मात्रा कम हो जाती है तो कहीं ना कहीं हमारी ओरल हेल्थ हाइजीन भी कंप्रोमाइज हो जाती है अगर महिलाओं की बात करें तो महिलाओं में कभी-कभी हार्मोन बैलेंस की वजह से भी ओरल हेल्थ प्रभावित होती है। ऐसे टाइम पर हमें केयर विशेष तरीके से करनी चाहिए इसके अलावा हमारे पेट से संबंधित रोगों के कारण भी ओरल हेल्थ प्रभावित हो जाते हैं।

5 हम अपनी ओरल हेल्थ को किस तरह से मेंटेन कर सकते हैं?

अगर हम ओरल हेल्थ की बात करें तो सबसे पहले ओरल हेल्थ को इंपॉर्टेंस देनी चाहिए। उनके प्रति हमें जागरूक होना होगा और कुछ चीजों का ध्यान भी रखना चाहिए जैसे दिन में दो बार ब्रश करना है पर कहीं न कहीं थोड़ी सी थोड़ी सी लापरवाही की वजह से इसको अपने डेली रूटीन में शामिल नहीं कर पाते ब्रश करने का 2 से 3 का टाइम प्रोपर होता है। पर हम जो ब्रशिंग टेक्निक यूज कर रहे हैं वह प्रॉपर होनी चाहिए अपने डेंटिस्ट से प्रॉपर टेक्निक सीख सकते हैं ज्यादातर लोगों को बस यह एक गलतफहमी है कि हम जितने ज्यादा ताकत से ब्रश करेंगे उतने अच्छे से क्लीनिंग होगी बस एक गलतफहमी है। ब्रश करने के बाद उंगली से अपने मसूड़ों पर मसाज करनी चाहिए उन्हें मजबूती मिलती है। इसके अलावा यदि कभी दांतो के बीच खाना फसता है तो उसे किसी वस्तु से निकालने की कोशिश करते हैं जो बिल्कुल गलत है। आपके दातों में यदि खाना पड़ता है तो उसके लिए आप डेंटल फ्लॉस का यूज कीजिए और डॉक्टर से परामर्श लीजिए। इसके अलावा खाने या कोई स्नेक खाने के बाद कुल्ला करने की आदत डालें। मोस्टली लोग दांतों की क्लीनिंग पर तो ध्यान देते हैं लेकिन जीभ की क्लीनिंग पर ध्यान नहीं देते इसके बिना हम ओरल हाइजीन को मेंटेन नहीं कर सकते इसके अलावा हम समय-समय पर खुद घर पर भी जांच कर सकते हैं अगर आपके मुंह में कहीं सूजन है या कोई कट लगा हो या फिर कोई घाव है काफी टाइम से भर नहीं रहा है या कोई स्पॉट है तो इमीडीएटली आप डेंटिस्ट से कंसल्ट करें इसके अलावा हर 6 महीने में डेंटल विजिट जरूर करते रहे।

6 सर रेगुलर डेंटल चेकअप क्यों जरूरी है?

प्रीवेंशन इज बेटर देन क्योर तो अगर हम हर 6 महीने मैं डेंटल चेकअप कराते हैं तो कोई भी समस्या अपनी शुरुआती दौर मैं हमें समझ आ सकती है या डेंटिस्ट हमें बता सकते हैं की हमें अपनी ओरल हाइजीन को कैसे मेंटेन करना है इससे हम ओरल हेल्थ से रिलेटेड प्रॉब्लम्स से बच सकते हैं। इसके अलावा हम डेंटिस्ट से मिलकर जान सकते हैं कि हमें रोजमर्रा में कैसे अपनी ओरल हेल्थ का ख्याल रखना चाहिए।

7 सर आप हमारी सोसाइटी को क्या मैसेज देना चाहेंगे?

जैसा कि कहा जाता है पहला सुख निरोगी काया तो हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि हमारे जीवन में स्वास्थ्य से बढ़कर कुछ नहीं होता और यह भी ध्यान रखना चाहिए कि दांतो के और ओरल हेल्थ के बिना हम संपूर्ण स्वास्थ्य का ख्याल नहीं रख सकते तो उसके लिए हमारी छोटी-छोटी चीजों से हमारी ओरल हेल्थ को नुकसान होता है उन्हें ना करके ओरल हेल्थ के प्रति खुद को दूसरों को जागरूक करके हमें ओरल हाइजीन की इंपोर्टेंस को समझना चाहिए।

GOONJ INTERVIEW

तेज तर्रार एएसपी राजेश दण्डोतिया से गूंज की विशेष बातचीत

सोसायटी को सायवर अर्वेनेस की सख्त जरूरत: दण्डोतिया

अति. पुलिस अधीक्षक राजेश दण्डोतिया कर्तव्यनिष्ठ जांबाज ईमानदार पुलिस अधिकारी के रूप में जाने जाते हैं जब से उन्होंने ग्वालियर की कमान संभाली है तब से ग्वालियर में कई ताबड़तोड़ अपराधों की घटनाओं को ट्रेस किया एवं अपराध एवं अपराधियों पर अंकुश लगाने का काम उनके द्वारा किए जा रहा है। वह इससे पहले जहां भी पदस्थ रहे उन्होंने अपराधियों और अपराधों पर पूर्णतः अंकुश लगाने का काम किया है। ग्वालियर पदस्थ होने के बाद वह लगातार क्राइम केसेस को सोल्वड करके अपराध को कम करने का काम कर रहे हैं। अभी

हाल ही में उन्होंने कई बड़े चर्चित हत्याकांडों का खुलासा महज कुछ ही दिन या फिर घंटों में करके आरोपियों को सलाखों के पीछे पहुंचाया है। उनकी यही फास्ट पुलिसिंग की बदौलत वह काफी चर्चित पुलिस अधिकारी के रूप में जाने जाते हैं। उनके हाथ में जो भी केस आता है वह उसे तुरन्त की अपनी सूझबूझ और मुखबिर तंत्र की मदद से सोल्व्ड करते हैं। ग्वालियर के पहले कम्युनिटी रेडियो स्टेशन गूंज 90.8 एफ. एम . आपकी अपनी आवाज़ को दिए इंटरव्यूह में अति. पुलिस अधीक्षक शहर राजेश दण्डोतिया ने कई विषयों पर हमसे बातचीत की पेश हैं इंटरव्यू के मुख्य अंश।

क्राइम हर जगह बढ़ रहे हैं इसकी रोकथाम के लिए पुलिस क्या क्या कदम उठा रही है ?

पहले तो ये साफ करना चाहूंगा कि क्राइम बढ़ नहीं रहे हैं सोशल मीडिया पर चूँकि आप लगातार अवेयर हो रहे हो हर चीज़ आपके वाटसएप आसानी से अवेलबल है लगातार आप अपडेट होते रहते हो इसीलिए आपको लगता है क्राइम बढ़ रहे हैं, अगर आप 10 साल पहले देखें तो लोग पेपर पढ़ा करते थे और कुछ लोग तो पेपर भी नहीं पढ़ने तो वो आपस में बातचीत करके पता लगाया करते थे कहाँ क्राइम हो रहा है। कहाँ कोई घटना हो गई। बेसिकली सोशल मीडिया पर सभी लोगों के इन्वॉल्वमेंट से सारी चीजें अप्डेट हो रही हैं इसीलिए लग रहा है कि क्राइम बढ़ रहा है , सिर्फ़ ड्रग्स की लत के कारण युवाओं में क्राइम ज़रूर बढ़ रहे हैं

महिलाओं की सुरक्षा के लिए ग्वालियर पुलिस क्या क्या स्टेप्स ले रही है?

देखिए लगातार इसमें एफआरबी जो है 100 डायल है कोई भी अगर केस ऐसा आता है तो मिनटों में पहुँचती है, दूसरा महिला सेल पहले से बनी हुई है इसके अलावा एक पट्रोलिंग पर जो गाड़ी निकलती है जो महिलाओं के लिए ही बनी हुई है, पिंक वीइकल भी कॉलेज और स्कूल्स के पास खड़ी रहती हैं महिलाओं और लड़कियों की सुरक्षा के लिए उपलब्ध रहती हैं।

आपका इंट्रेस्ट इस फील्ड में कैसे जागा?

बेसिक्ली मैं पहले क्रिकेटर बनना चाहता था, अभी भी क्रिकेट खेलता हूँ फिर 12वीं करने के बाद पीएटी का इग्ज़ैम दिया फिर उसमें सिलेक्शन नहीं हुआ ,पीएससी दिया तो उसमें हो गया सिलेक्शन डीएसपी बन गया। ये फील्ड इंटेस्टिंग लगी और काफी मेहनत की मैंने इसमें।

सर जो स्टूडेंट्स पुलिस में भर्ती होने के लिए तैयारी कर रहे हैं , आप उन्हें क्या सलाह देना चाहेंगे?

ये बात मैं सभी से कहना चाहूँगा कि कोई भी काम कठिन नहीं है, हर काम संभव है बशर्ते आपका डेडिकेशन कितना है आप कितनी महनत करते हो और आपकी लोयलटी कितनी है अपने उद्देश्य के प्रति इग्जाम के दो महीने पहले पढ़ाई नहीं करनी है जो हम स्कूल में करते हैं आपको लगातार लगन के साथ महनत करनी होगी और आप ज़रूर सफल होंगे।

सर पुलिस की नौकरी बहुत ही व्यस्तता भरी होती है और ऐसे में आप अपनी फैमिली को टाइम कैसे दे पाते हैं ?

जीवन में हम जो भी करेंगे उसकी हमें क़ीमत चुकानी होती है , इस काम में आपको ये रहता है की आप अपने परिवार को समय नहीं दे पा रहे। लेकिन समाज को आप समय दे पा रहे हो जो लोग परेशान हैं जिनको ज़रूरत है आपकी, उनके चेहरे पर आप स्माइल ला रहे हो तो ये भी एक अच्छी फ़ीलिंग है।

सर आप सॉसाययटी को क्या मेसिज देना चाहेंगे?

सोसायटी को अभी सायवर अर्वेनेस की सख्त ज़रूरत है, इसमें एज ग्रुप का कोई फ़ैक्टर नहीं है, कोई भी व्यक्ति साइबर क्राइम का शिकार हो सकता है और ये इन्विज़िबल क्रिमिनल्ज़ हैं और हज़ारों किमीमीटर्स के डिस्टन्स से भी वो आपके साथ क्राइम कर सकते हैं। मेरे विचार से मैं ये कहना चाहूँगा की कोई भी अनजान व्यक्ति से अपनी पर्सनल डिटेल्ज़ शेयर न करे और बोहोत होशियारी से काम ले।

युवा बॉस्केट बॉल के क्षेत्र में बनाए शानदार कैरियरः रूपसिंह परिहार

कामयाबी उन्हीं के कदम चूमती है जो कर्मठ और परिश्रमी होते हैं ऐसे ही परिश्रमी और जुझारू विराट व्यक्तित्व के धनी बॉस्केट बॉल खिलाड़ी के रूप में देश-दुनिया में अपनी पहचान बनाने वाले रूप सिंह परिहार जो वर्तमान बास्केटबॉल कोच (NIS) राम श्री इंडिया इंटरनेशनल स्कूल ग्वालियर में कार्यरत हैं। जिन्होंने अपनी जिंदगी में कई उतार-चढ़ाव देखे और कड़ी मेहनत व सच्ची लगन के साथ उन्होंने सफलता हासिल कर कामयाबी के शिखर को छुआ है। और खेल के क्षेत्र में ग्वालियर का नाम रौशन किया है। आज गूंज पत्रिका अपनी कलम के माध्यम से ग्वालियर के होनहार प्रतिभा को अपनी कलम के माध्यम से सलाम कर रहे हैं। इस बार हम अपने पाठकों को गूंज स्टार के रूप में रूबरू करा रहे हैं बॉस्केट बॉल कोच रूपसिंह परिहार से। गूंज को दिए साक्षात्कार के कुछ अंश इस प्रकार हैं। रूप सिंह परिहार है उनके पिताजी स्वर्गीय देवराज सिंह परिहार हैं। वह उत्तर प्रदेश इटावा जिले के बंसरी गांव के रहने वाले हैं। वर्तमान में आमखो पहाड़िया कंपू लश्कर ग्वालियर में निवास कर रहे हैं। श्री परिहार बास्केटबॉल कोच (NIS) वर्तमान में राम श्री इंडिया इंटरनेशनल स्कूल ग्वालियर में कार्यरत हैं।

● **टीम गूंज न्यूज नेटवर्क**

रूप सिंह परिहार अपने कैरियर में 11 बार मध्य प्रदेश को रिप्रेजेंट कर चुके हैं। 2015 से 2022 तक कई बार मध्य प्रदेश अंडर-16 एवं 19 टीम के मुख्य कोच रहे हैं। उनकी ग्वालियर डीसीसी की टीम ने कई बार स्टेट में विजेता होने का गौरव हासिल किया है। 2019 में उनके स्कूल की टीम सीबीएससी मध्यप्रदेश में प्रथम स्थान हासिल किया एवं इसी वर्ष नेशनल के लिए क्वालीफाई कर तीसरे स्थान पर रही। इसके अलावा बास्केटबॉल ग्राउंड से अब तक 23 बच्चे राष्ट्रीय प्रतियोगिता में भाग ले चुके हैं। और दो बच्चे इंडिया टीम को रिप्रेजेंट कर चुके हैं । जिनमें गोपाल सिंह राठौर 2008 और हर्षवर्धन सिंह तोमर 2015 से वर्तमान में भी भारतीय टीम के सदस्य हैं। श्री परिहार 2004 से बॉस्केटबॉल कोचिंग मध्य प्रदेश बास्केट बॉल से जुड़े रहे हैं। ग्वालियर के पहले कम्युनिटी रेडियो स्टेशन गूंज 90.8 एफ. एम . आपकी अपनी आवाज़ को दिए इंटरव्यूह में श्री परिहार ने कई विषयों पर हमसे बातचीत की।

बॉस्केटबॉल खेलने का इंस्पिरेशन कहां से मिली?

मुझे बास्केटबॉल खेलने की प्रेरणा मेरे पिता से मिली जो कि आर्मी में रहकर स्पोर्ट्स के लिए बहुत कुछ करना चाहते थे। पर इतनी सुविधाएं ना होने के कारण वह कभी नहीं कर पाए तो उन्होंने मुझे बास्केटबॉल खेलने के लिए प्रेरित किया।

बॉस्केट बॉल में इंडियन फ्यूचर आप किस तरीक़े से देखते हैं?

इंडिया में बहुत टैलेंट है। बस हमें उसको तराशने की जरूरत है अभी वर्तमान में इंडियन बास्केटबॉल फेडरेशन एक बास्केटबॉल लीग चालू करने वाला है उससे हमारे बास्केट बॉल बिल्कुल एक नई गति मिलेगी और इंडिया का बास्केटबॉल में फ्यूचर अच्छा है।

किसी को प्रोफेशनल बास्केट बॉल प्लेयर बनना हो तो किस उम्र में खेलना शुरू करना चाहिए?

अगर आप प्रोफेशनल बास्केटबॉल प्लेयर बनना चाहते हैं तो हम बास्केटबॉल बच्चे को 8 साल की उम्र में शुरू करा सकते हैं।

बॉस्केट बॉल कैरियर के तौर पर कितना अच्छा ऑप्शन है इंडिया में?

बास्केटबॉल में बहुत सारी अपॉर्चुनिटी है। इंडिया में कैरियर की बात करें तो हर गवर्नमेंट सेक्टर में बास्केटबॉल की वैकेंसी होती है। आजकल तो कई कंपनियां भी खिलाड़ियों को स्पॉन्सर्ड करने

लगी हैं। अभी वर्तमान में मेरे क्लब के खिलाड़ी हर्षवर्धन सिंह तोमर को एयर इंडिया ने स्पॉन्सर्ड किया है।

6. अपकमिंग प्लेयर्स को आप क्या मैसेज देना चाहेंगे?

आने वाली पीढ़ी से मैं बस यही कहना चाहूंगा कि अगर स्पोर्ट्स में अपना कैरियर बनाना है तो डेटिकेशन, और पेशन होना बहुत जरूरी है। और अपने गुरु पर विश्वास रखें क्योंकि आप जब तक अपने गुरु पर विश्वास नहीं रखेंगे तो ना तो आप अपना 100 फीसदी कोच को दे पाओगे और ना वह आपको इसलिए जब भी किसी भी प्रोफेशन से जुड़े तो विश्वास रखो और एक लक्ष्य निर्धारित करो बिना गोल सेट किए हम जीवन में कुछ नहीं कर सकते।

परिवहन विभाग की ओर से नगरवासियों को

मुकेश जैन आयुक्त

परिवहन विभाग, ग्वालियर, मध्य प्रदेश

अपील

विज़न ज़ीरों के नियमों का पालन करें

यातायात के नियमों का पालन करें

विज़न ज़ीरो के प्रति जागरूकता बढ़ाएं

जिससे सड़क दुर्घटनाओं को रोकने में मदद मिले

अरविंद कुमार सक्सैना

डिप्टी ट्रांसपोर्ट कमिश्नर

परिवहन विभाग, ग्वालियर, मध्य प्रदेश

PARAKH

X-RAY, ULTRASOUND & COLOUR DOPPLER CENTRE

Dr. R.P. Gupta
M.D. (Radiology)
Sonologist,
Radiologist& C.T.
Scan Specialist

Dr. J.S. Sikarwar
Hony. Consultant
M.D, (Radiology)
Professor, G.R. Medical
College, Gwalior

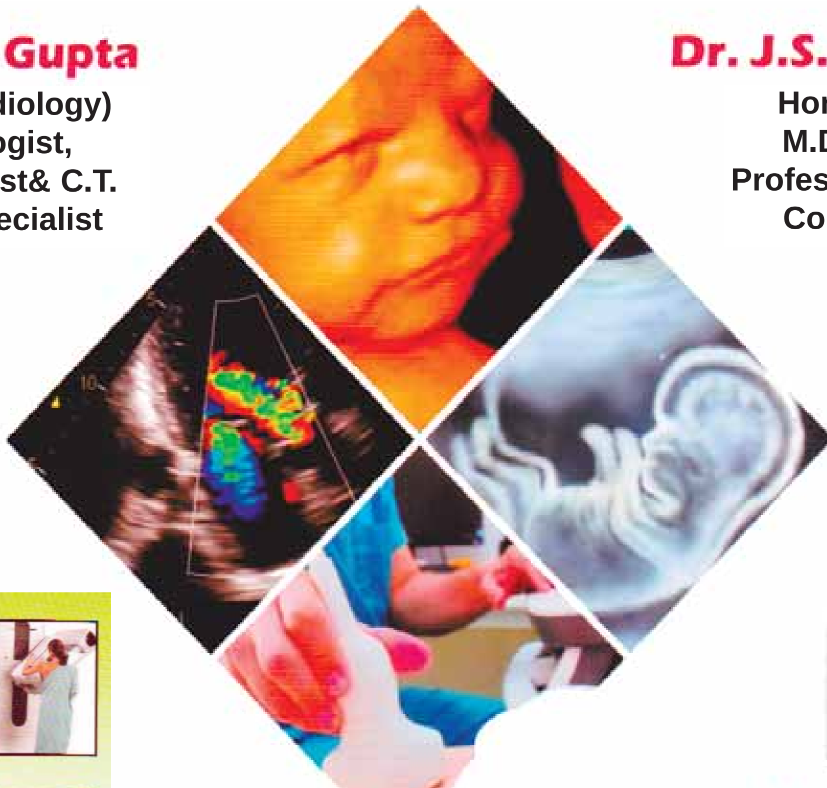

PARAKH X-RAY & ULTRASOUND

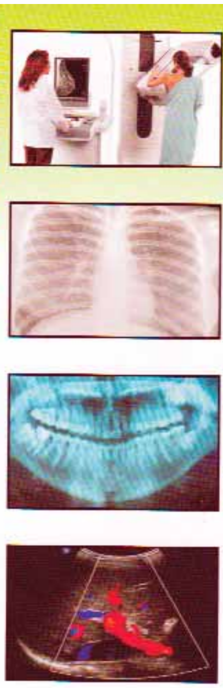

Facilities Available

- Digital X-Ray
- Ultrasonography
- High Resolution Sonography
- Colour Doppler
- USG - 3D / 4D
- Anomaly Scan / Target Scan
- O.P.G.
- ECHO Cardiography
- Mammography

PARAKH
"We Care"

परख

एक्स-रे, अल्ट्रासाउण्ड एवं कलर डॉपलर सेन्टर

पुराना बस स्टेण्ड, कम्पू लश्कर, ग्वालियर– 474009 (म.प्र.) सम्पर्क : (0751) 2628850, 4030299